SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ सैंतालीसवां-अड़तालीसवां अंक (संयुक्तांक)

(जनवरी – जून, 2024)

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110124

GIRISH

PARVEEN MEHTA
Prof. RANGAN BANERJEE

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ सैंतालीसवां-अड़तालीसवां अंक (संयुक्तांक)

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका

(जनवरी – जून, 2024)

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
नई दिल्ली-110124

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

स्वत्वाधिकार
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

प्रकाशन
''लेखापरीक्षा प्रकाश''
(त्रैमासिक हिंदी पत्रिका)

प्रकाशक
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली–110124

एक सौ सैंतालीसवां–अड़तालीसवां अंक
(जनवरी–जून, 2024)

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक
श्री गिरीश चंद्र मुर्मू
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संरक्षक
श्री प्रमोद कुमार
अपर उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक
श्री अशोक सिन्हा
महानिदेशक (राजभाषा)

संपादक
श्री अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

सहायक संपादक
श्री किरन पाल सिंह
हिंदी अधिकारी

रचना चयन समिति
श्री अशोक सिन्हा
महानिदेशक (राजभाषा)
श्री अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
श्री किरन पाल सिंह
हिंदी अधिकारी

मुद्रक : आकांक्षा इम्प्रेशंस
ए–102, वज़ीरपुर इंडस्ट्रियल एरिया,
दिल्ली

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ सैंतालीसवां-अड़तालीसवां अंक (संयुक्तांक)
(जनवरी – जून, 2024)

अनुक्रमणिका

पत्रिका परिवार एवं संपादकीय 5

पाठकों के नाम संदेश 6

आपके पत्र 7

1. चैडविक हाउस: नेविगेटिंग ऑडिट हेरिटेज संग्रहालय, शिमला 11
– किरन पाल सिंह

2. भारत में सौर ऊर्जा की संभावनाएँ, विकास, सरकारी नीतियां तथा चुनौतियाँ *– अशोक सिन्हा* 15

3. सुखी जीवन की कुंजी 22
– प्रशांत प्रखर 15

4. लोकतंत्र: जनता की शक्ति का महत्त्वपूर्ण स्तंभ 27
– महेश म. जयसिंघाणी

5. अंतर्राष्ट्रीय स्थानीय शासन लेखापरीक्षा केंद्र, राजकोट, गुजरात 31
– किरन पाल सिंह

6. सोशल मीडिया पर अनावश्यक टिप्पणियाँ 36
– मुनीष भाटिया

7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में जनजातीय शिक्षा 38
– योगेश कुमार मिश्र

8. विषयः वैश्वीकरण के दौर में राष्ट्रीय भाषाओं की भूमिका 41
– संदीप कुमार पाठक

अस्वीकरण - पत्रिका में व्यक्त विचार एवं भावनाएं लेखक के अपने हैं, अतः कार्यालय एवं संपादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

9. श्री शंकराचार्य महासंस्थानम् दक्षिणाम्नाय श्री शारदापीठम् श्रृंगेरी - एक यात्रा संस्मरण 45
– अनुराधा सूद

10. रिश्तों का रसायन 49
– उदय प्रताप सिंह

11. यूनेस्को मान्यता प्राप्त कोलकाता की दुर्गा पूजा 53
– करुणाकर साहू

12. "हिंदी - विमर्श" 57
– जगदंबा प्रसाद शुक्ल

13. भारतीय रेलः (रेड हिल से वंदे भारत तक का सफर)61
– नीतीश कुमार

14. आकांक्षाओं का बोझ 67
– पीयूष कुमार

15. भगवद् गीता में आत्म प्रबंधन पर एक चर्चा 69
– ऋचा

16. नाउरू की किंवदंतियाँ 73
– बिवाश रंजन मंडल

17. नई शुरुआत 82
– अनुराग प्रभाकर

18. विवशता 84
– अमरेंद्र कुमार चौधरी

19. विद्यार्थी जीवन और मानसिक स्वास्थ्य 87
– पूनम पाहुजा

20. पंचमुखी हनुमान 88
– बनवारी लाल सोनी

21. इंसानियत 90
– मनु अनेजा

22. कोई आवारा न मिला 91
– एम. साल्वे

23. जीवन 92
– विदित अग्रवाल

24. वो पापा कहलाता है 93
– संदीप

25. एक माँ की दुविधा 90
– सुनीता

26. नित्य करो परमेश्वर के दर्शन 96
– आरती शर्मा

27. मणिमहेश यात्रा 97
– दया सागर

28. क्रिकेट के मैदान में 99
– नवीन देया "एकांत"

29. ऐसा ना हो 100
– अभिषेक रंजन चुन्नु

30. प्रेरक प्रसंग 102
– अनुराग प्रभाकर

31. मुख्यालय समाचार 106
– अनुराग प्रभाकर

अशोक सिन्हा
महानिदेशक (राजभाषा)

हिंदी का बढ़ता प्रभाव

सबसे पहले हमारे विभाग मे कार्यरत सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को हॉकी में ओलंपिक पदक जीतने की बधाई। यह हमारे विभाग के लिए हर्ष का विषय है कि विभाग मे कार्यरत श्री राजकुमार पाल जी भारतीय हॉकी दल के उन सदस्यों में से थे जिनका चयन ओलंपिक खेलों हेतु हुआ था, उससे बड़ी प्रसन्नता का विषय यह है भारतीय हॉकी दल ने ओलंपिक खेलों में कांस्य पदक जीत कर देश का नाम पदक तालिका में आगे बढ़ाया है।

पत्रिका के 147वें अंक को आपको सौंपते हुए हमें हर्ष का अनुभव हो रहा है। हमें संतोष भी है कि अपने हर अंक में पत्रिका अपने उद्देश्य को क्रमशः प्राप्त कर रही है। शासकीय कर्मियों के मध्य कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देना इस पत्रिका का प्रमुख उद्देश्य है जिसे राजभाषा अधिनियम 1963 एवं 1976 में स्पष्ट रूप से व्यक्त भी किया गया है। प्रसन्नता का विषय यह भी है शासन में भी स्वेच्छा से राजभाषा के उद्देश्य को बढ़ाने वाले लोकसेवक न सिर्फ आगे आ रहे हैं बल्कि बढ़ चढ़ कर अपने अधीनस्थों व सहकर्मियों को भी राजभाषा मे कार्य करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। राजभाषा के उत्तम भविष्य हेतु यह एक सुखद संकेत है। यह ज्यादा पुरानी बात नहीं है जब (सितंबर-2020) केंद्र सरकार ने जिन तीन अन्य स्थानीय भाषाओं को जम्मू और कश्मीर की आधिकारिक भाषा घोषित किया था, हिन्दी भी उन्हीं मे से एक थी। अँग्रेजी व उर्दू पहले से ही इस राज्य की आधिकारिक भाषाएँ थीं। यह हिन्दी के बढ़ते हुए प्रभाव क्षेत्र को दर्शाता है।

इस बार पाठकों के समक्ष इस पत्रिका को एक नवीन रूप देने का प्रयास किया गया है। इस क्रम में इसे संयुक्तांक (जनवरी-मार्च + अप्रैल-जून) की तरह निकालने का निर्णय किया गया। चूंकि क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए आधिकारिक सूचना का स्रोत मुख्यालय ही रहा है। अतः इस बार "मुख्यालय समाचार" के रूप में एक नए स्तम्भ का प्रारंभ किया गया। पाठकों के लिए दूसरे नए स्तम्भों का भी समावेश किया गया है।

इन स्तम्भों की रचना में मुख्यालय के अन्य अनुभागों ने भी बढ़-चढ़ कर योगदान किया है। मैं उन सभी अनुभागों के अधिकारियों/कर्मचारियों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

हमारी पत्रिका का प्रकाशन भी इसी प्रभाव क्षेत्र को बढ़ावा देने का एक गिलहरी प्रयास है जो आप सभी पाठकों के सामूहिक प्रयत्नों का सुपरिणाम है। इस पत्रिका में जिन रचनाकारों की रचनाओं को स्थान मिला है उन्हें बधाई दी जाती है जिन्होंने अपने व्यस्त समय में से कुछ समय निकाल कर हिन्दी में अपने भावों को अभिव्यक्त किया है। आशा है हमें उनका सहयोग ऐसे ही मिलता रहेगा।

आपका शुभाकांक्षी
अशोक सिन्हा
प्रधान सम्पादक

पाठकों से दो शब्द

अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (राजभाषा)

लक्ष्यों की सहज प्राप्ति

एक बार फिर हम आपकी अभिव्यक्ति को कार्यालय की पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के माध्यम से लेकर उपस्थित हैं। यह हमारे लिए प्रसन्नता एवं आनंद का क्षण होता है जब हम संवाद करते हैं। प्रसन्नता की वजह यह भी है कि पत्रिका परिवार राजभाषा के लक्ष्यों को भी प्राप्त करने में इतनी सहजता का परिचय दे रहा है जितना इस संवाद को स्थापित करने में। पत्रिका के सुखद भविष्य हेतु यह एक सुखद संकेत है। आनंद इस बात का भी है कि ये संकेत हमें भारत के सभी श्रेणियों यथा 'क','ख' एवं 'ग' के राज्यों में स्थित कार्यालयों से समान रूप से प्राप्त हो रहे हैं। इसी तरह हमारी पत्रिका को सभी क्षेत्रों मे स्थित कार्यालयों के लेखकों का प्रतिनिधित्व प्राप्त हुआ है जो एक हर्ष व संतोष का विषय है।

हमारा यही आनंद व संतोष बना रहे एवं इस पत्रिका को आपका आशीर्वाद भी ऐसे ही प्राप्त होता रहे, इसी कामना के साथ

आपका ही
अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

पत्रिका में अपनी रचनाएं प्रकाशित करने हेतु लेखकों के लिए अनुदेश

1. रचना वर्ड सॉफ्ट कॉपी में ही भेजी जाए। यदि भौतिक प्रति भेजी जा रही है तो मंगल फॉन्ट में फॉन्ट साइज़ 12 रखते हुए पृष्ठ के एक ओर टंकित करके निम्न पते पर भेजें।
   संपादक 'लेखापरीक्षा प्रकाश', 10, बहादुरशाह जफ़र मार्ग, नई दिल्ली–110002
2. कृपया लेख के साथ मौलिकता प्रमाणपत्र, कार्यालय व अनुभाग का नाम तथा अपना फोटो भी संलग्न करें।
3. ईमेल से भेजते समय अपना नाम, पदनाम एवं विस्तार / मोबाइल संख्या का भी उल्लेख अवश्य करें।
4. यदि पत्रिका के वर्तमान अंक के लिए पर्याप्त रचनाओं की संख्या प्राप्त हो चुकी हो तो उसी रचना को अगले अंक के लिए आरक्षित कर लिया जाता है। अतः लेखकों से निवेदन है कि अपनी रचना के प्रकाशन के संबंध में अनावश्यक पूछताछ न करें।
5. संभव हो तो संबंधित पत्र व्यवहार भी राजभाषा में करने का प्रयास करें।
6. सॉफ्ट कॉपी में रचना भेजने का पता :– **ईमेलः anuragp.cag@cag.gov.in; Whatsapp : 9402275468**

आशा है आप अपना सहयोग इसी तरह बनाए रखेंगे।

संपादक के नाम पत्र

विषय वस्तु का चयन व प्रस्तुतीकरण प्रशंसनीय

महोदय,

संदर्भित पत्र के साथ त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा-प्रकाश" के 145 वें अंक के ई-संस्करण की प्रति ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। पत्रिका प्रेषण हेतु सादर आभार। सदैव की भाँति इस अंक में भी पत्रिका की साज-सज्जा, विषय-वस्तु का चयन और उसका प्रस्तुतीकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। इस पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं के मध्य छायाचित्र भी अत्यंत सार्थक हैं। इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं, लेकिन कुछ रचनाएं अनायास ही ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती हैं। पत्रिका के 145वें अंक में संकलित डॉ. लाखा राम द्वारा रचित लेख 'विश्व फलक पर परचम लहराती हिंदी'अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अलग स्थान बनाती हिन्दी के बारे में अवगत करवाती है। श्री आकाश त्रिवेदी ने अपनी कविता 'संजीवनी'में बेटी के साथ दुष्कर्म एवं हत्या पर माता-पिता के क्रोध एवं विलाप को सुंदर ढंग से दर्शाया है। श्री विनोद कुमार शर्मा ने अपने लेख शिक्षा को भाषाई बंधन से मुक्त करने की आवश्यकता' में शिक्षा को भाषाई बंधन से मुक्त करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है एवं श्री अनुराग प्रभाकर ने अपने लेख 'चुनावी सफरनामा: 1951-1952 से 2024 तक' में भारत में 1951-1952 से 2024 तक हुए विभिन्न लोकसभा चुनावों का उल्लेख किया है।

पत्रिका के उत्तम संपादन एवं संकलन हेतु संपादक मण्डल के सभी सदस्यों को साधुवाद तथा हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका "लेखापरीक्षा-प्रकाश" के उज्ज्वल भविष्य के लिए 'सुगन्धा'परिवार की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़ 160017

सराहनीय रचनाएँ

महोदय,

उपरोक्त विषय पर आपके पत्र सं.-414/55-रा.भा.अ./2018-1 दिनांक 11.07.2024 के साथ संलग्न 'लेखापरीक्षा

प्रकाश' के 145वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद।

इस ई-पत्रिका की सभी रचनाएं अत्यंत प्रेरणाप्रद, सुपाठ्य, संग्रहणीय, उच्चकोटि के तथा ज्ञानप्रद हैं। ई-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में से डॉ लाखा राम का लेख 'विश्व फलक पर परचम लहराती हिन्दी',सुश्री राजकुमारी शर्मा का लेख 'सकारात्मक सोच का मानव जीवन पर प्रभाव',श्री अनुराग प्रभाकर की रचना 'चुनावी सफरनामा...',श्री रामानंद शर्मा की कविता 'गजल', श्रीमती तृप्ता द्वारा रचित कविता 'साड़ी की महिमा',आदि विशिष्ट रूप से सराहनीय है।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,

निदेशक (प्रशासन)
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
केंद्रीय, कोलकाता
जी आई प्रैस बिल्डिंग,
8, किरण शंकर राय रोड,
कोलकाता-700001

पत्रिका की शोभा बढ़ाने वाली कविताएं

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के 145वें अंक की सॉफ्ट प्रति प्राप्त हुई सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय एवं आकर्षक हैं। संपादक मण्डल द्वारा रचनाओं का चयन एवं सामग्री का समावेश कुशलता से किया गया है। इम्तियाज अहमद जी की "भूस्खलन - एक प्राकृतिक आपदा, संजय कुमार सिंह जी की "चरित्रहीन" रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय है। पत्रिका में शामिल कविताएँ पत्रिका की शोभा बढ़ाते हैं। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए ढेरों शुभकामनाएं। आशा है कि हमारी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' इसी प्रकार प्रगति की ओर अग्रसर रहेगी।

भवदीय,

(भगवान दास)
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
राजभाषा अनुभाग, भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान
जनपथ, जयपुर- 302 005

उत्कृष्ट साज सज्जा

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का 145वां अंक ई-मेल के द्वारा प्राप्त हुआ है। पत्रिका का यह अंक मुद्रण, सम्पादन एवं रचनाओं के चयन की दृष्टि से सराहनीय है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा सुन्दर एवं आकर्षक है। पत्रिका की सभी रचनाएं पठनीय एवं उत्कृष्ट हैं विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएं अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:-

1. **विश्व फ़लक पर परचम लहराती हिंदी**
   डॉ. लाखा राम

2. **शिक्षा को भाषाई बंधन से मुक्त करने की आवश्यकता** *विनोद कुमार शर्मा*

3. **मदर्स डे** *प्रवीण कुमार सहगल*

4. **बिखरे लम्हे** *सुश्री ललिता मैनाली*

आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक की भूमिका निभाएगी। पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है।

भवदीय,

व. लेखा अधिकारी/हिंदी अनुभाग

महालेखाकार (ले.एवं ह.) का कार्यालय, बिहार, पटना

हृदय पर गहरा प्रभाव छोडती रचनाएँ

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय से प्रकाशित होने वाली हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश" का एक सौ पैंतालीसवा अंक ईमेल के माध्यम से प्राप्त हुआ। पत्रिका की रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक हैं। रचनाएं एवं लेख हृदय एवं मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव छोड़ने मे सक्षम हैं। सभी रचनाएं एवं लेख प्रशंसा की पात्र हैं। पर कुछ रचनाएं एवं लेख विशेष रूप से साधुवाद की पात्र है। श्री विनोद कुमार शर्मा द्वारा लिखित "शिक्षा को भाषाई बंधन से मुक्त करने की आवश्यकता", सुश्री स. ग. श्रीमती द्वारा लिखित "शौर्य मूर्ति बंदा बैरागी", सुश्री ज्योति यादव द्वारा रचित "भाई और बहन का रिश्ता", एवं श्री सतनाम सिंह द्वारा रचित "नारी शक्ति" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

श्री अनुराग प्रभाकर द्वारा लिखित "चुनावी सफरनामा 1951-52 से लेकर 2024 तक" से भारतीय गणराज्य के चुनावी तंत्र के बारे मे विशद जानकारी मिली। श्री अनुराग प्रभाकर के एक अन्य लेख "मुख्यालय की "कीर्ति"" द्वारा भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय को भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2022-23 के लिए "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार" दिए जाने की जानकारी मिली।

पत्रिका के उत्कृष्ट संकलन के लिए संपादक मण्डल साधुवाद की पात्र है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हृदय से शुभकामनाएं।

पीयूष कुमार

स. प्र . अ.

निरीक्षण एवं समकक्ष समीक्षा

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय

नई दिल्ली

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेख

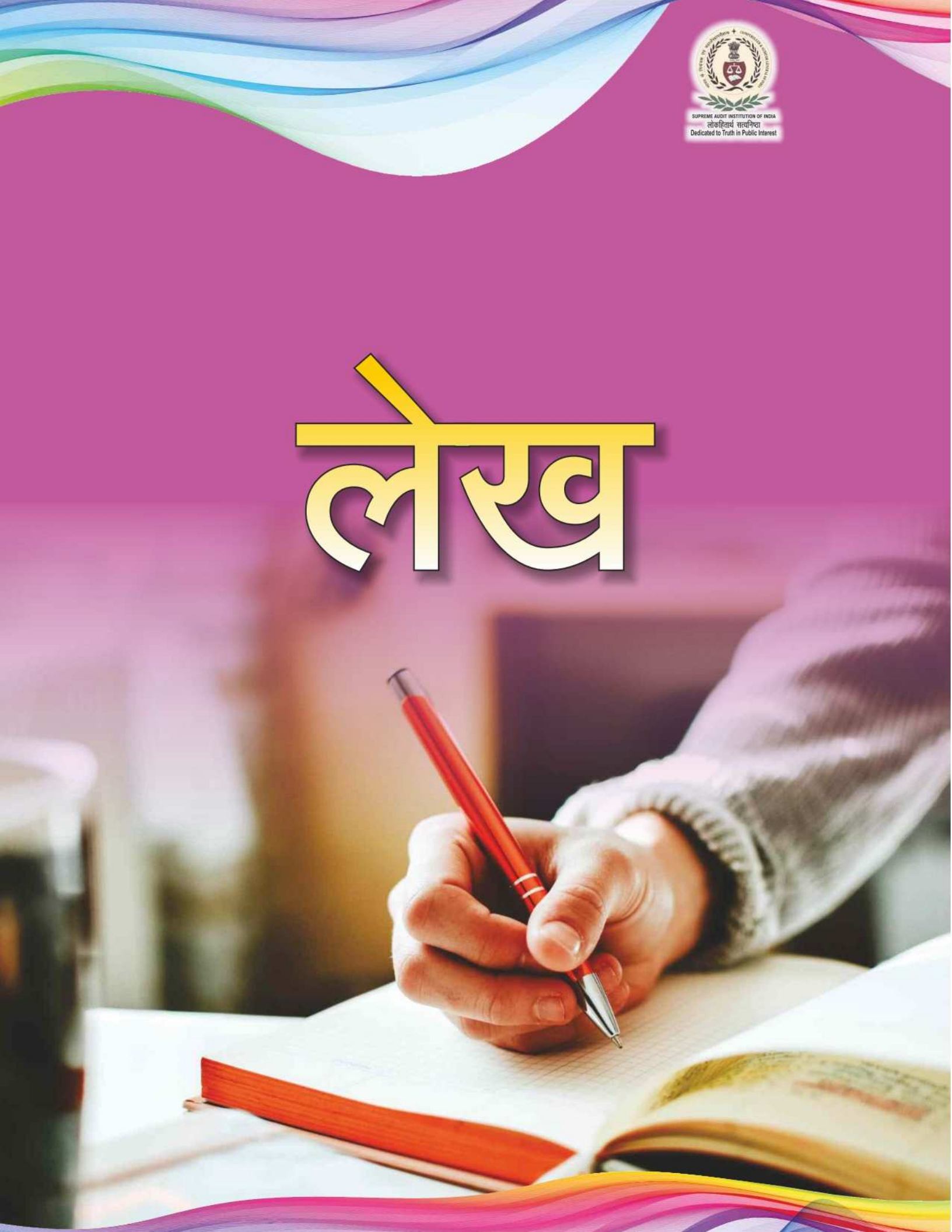

चैडविक हाउस
नेविगेटिंग ऑडिट
हेरिटेज संग्रहालय, शिमला

लेखक
किरन पाल सिंह
हिंदी अधिकारी
भारत के नियंत्रक एवं
महालेखापरीक्षक का कार्यालय,
नई दिल्ली – 110 010.

शिमला वर्तमान में हिमाचल प्रदेश की राजधानी है और यह ब्रिटिश शासन के दौरान पूर्व में ग्रीष्मकालीन राजधानी थी। जितना हम सोच सकते हैं वे सभी प्राकृतिक उपहार आशीर्वाद के रूप में शिमला को मिले हैं। यह स्थान चारों ओर से हरे भरे पहाड़ों और हिमाच्छादित चोटियों से घिरा हुआ है। औपनिवेशिक युग के दौरान की संरचनाओं एवं यहाँ की शांत पहाड़ियों की आभा इसे अन्य पहाड़ियों से बहुत अलग बनाती है।

अभूतपूर्व विस्तार के साथ तेजी से उभरता हुआ शिमला अपनी औपनिवेशिक विरासत एवं भव्य पुरानी इमारतों के लिए जाना जाता है, उनमें से कुछ सुप्रसिद्ध नाम वाइसरीगल लॉज, आकर्षक आयरन लैंप पोस्ट और एंग्लो-सैक्सन हैं। इसमें 24 जून, 2024 को एक नया नाम चैडविक हाउस: नेविगेटिंग ऑडिट हेरिटेज संग्रहालय भी जुड़ गया।

शिमला के समरहिल रिज पर स्थित चैडविक हाउस, एक समृद्ध और व्यापक इतिहास समेटे हुए है। 1880 के दशक में

चैडविक हाउस – पुरातन रूप में

तत्कालीन पंजाब के चीफ इंजीनियर जीएफएल मार्शल ने इसका निर्माण कराया था। 1890 के दशक में विशप मैथ्यू ने उनसे यह इमारत खरीद ली। उसके बाद 1904 में कपूरथला के राजा सरदार चरणजीत सिंह ने मैथ्यू से यह बंगला खरीदा। बीसवीं सदी के प्रारम्भ में शिमला में चैडविक हाउस की बेमिसाल भव्यता आकर्षण का केंद्र थी। इसके लॉन से हिमालय की बर्फीली चोटियों की अनुपम छटा दिखती थी। इसका ऐतिहासिक महत्त्व महात्मा गांधी के 1946 में कैबिनेट मिशन के लिए शिमला की यात्रा के दौरान उनके प्रवास से और भी उजागर होता है। महात्मा गांधी ने 1921 से 1946 तक करीब दर्जन बार शिमला का दौरा किया। वह अक्सर चैडविक हाउस के लॉन में प्रार्थना करते थे। स्वतंत्रता के बाद, 1950 में, भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा सेवा के लिए एक प्रशिक्षण विद्यालय यहाँ प्रारम्भ किया गया । प्रशिक्षण प्रतिष्ठान के स्थानांतरित होने के साथ, उचित देखभाल के अभाव में चैडविक हाउस 2018 तक जीर्ण शीर्ण होते हुए ध्वस्त होने के कगार पर पहुँच गया। उस समय, भारत के सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान ने इसकी विरासत की रक्षा के लिए कदम उठाया। दिसंबर 2020 में तत्कालीन व्यवस्थापक प्रसार भारती जिसे ऑल इंडिया रेडियो के नाम से भी जाना जाता है, के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए जिससे चैडविक हाउस को संग्रहालय के रूप में स्थापित करने की प्रक्रिया शुरू हुई।

भारत के वर्तमान नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री गिरीश चंद्र मुर्मू के कर-कमलों द्वारा 24 जून, 2024 (सोमवार) को

शिमला में चैडविक हाउस स्थित हेरिटेज संग्रहालय, का उद्घाटन किया गया। यह भारत का पहला लेखापरीक्षा संग्रहालय है और इसमें भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक संस्था के 169 साल के इतिहास की झलक देखने को मिलती है। इस अवसर पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के अलावा लेखापरीक्षा सलाहकार बोर्ड के सदस्य एवं राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारीगण मौजूद रहे। चैडविक हाउस में स्थित संग्रहालय को अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ विकसित किया गया है, जो भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक संस्था के विकास क्रम, उपलब्धियों तथा दूरदर्शिता को प्रदर्शित करता है।

उद्घाटन भाषण में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा ज्ञान के भंडार और लेखापरीक्षकों की भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्त्रोत के रूप में संग्रहालय के महत्त्व पर जोर दिया गया। उन्होंने प्रसन्नता जताई कि लोकतंत्र के स्तंभों में से एक ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करके सुशासन में योगदान देने वाली संस्था के विकास क्रम को संग्रहालय में बहुत प्रभावी ढंग से दर्शाया गया है। उन्होंने कहा "चैडविक हाउस ने इतिहास बनते देखा है और अब से इसे सार्वजनिक सेवा के प्रति हमारे अटूट समर्पण का प्रमाण बनना चाहिए"। उद्घाटन के पश्चात भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक ने संग्रहालय का दौरा किया जिसमें भारत में लेखापरीक्षा के इतिहास, महत्त्वपूर्ण लेखापरीक्षा और देश के शासन में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक संस्था के उल्लेखनीय योगदान को दर्शाने वाली विभिन्न प्रदर्शनियों को देखा। इस दौरान संग्रहालय में मौजूद इंटरेक्टिव डिस्प्ले, डायोरमा और मल्टीमीडिया प्रस्तुतियां प्रतिष्ठित हस्तियों

चैडविक हाउस: नेविगेटिंग ऑडिट हेरिटेज संग्रहालय का उद्घाटन – फोटो

चैडविक हाउस: नेविगेटिंग ऑडिट हेरिटेज संग्रहालय – फोटो

और संस्थागत उपलब्धियों का एक विशद चित्रण प्रस्तुत कर रही थीं।

संग्रहालय को दस अलग-अलग दीर्घाओं में निर्मित किया गया है। इनमें से प्रत्येक को भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के इतिहास, भूमिकाओं और महत्त्व के विभिन्न पहलुओं का विस्तृत विवरण प्रदान करने हेतु डिज़ाइन किया गया है। ग्राफिक पैनल, वीडियो, चित्रावली सेट, इंटरेक्टिव डिस्प्ले और कलाकृतियों का उपयोग करते हुए ये दीर्घाएं आगंतुकों को संस्थान और इसके इतिहास की व्यापक समझ प्रदान करती हैं। इनमें ऐतिहासिक दस्तावेज, कलाकृतियां, यादगार वस्तुएं और फोटोग्राफ आदि शामिल हैं, जो सीएजी संस्थान के विकास क्रम को दर्शाते हैं। संग्रहालय में डिजिटल अभिलेखागार, दृश्य-श्रव्य प्रस्तुतियां एवं इंटरैक्टिव कियोस्क सहित अत्याधुनिक इंटरैक्टिव डिस्प्ले हैं जो आगंतुकों में सीखने की ललक वाले अनुभव प्रदान करते हैं। चैडविक हाउस स्थित संग्रहालय को अब आम जनता के लिए खोल दिया गया है जिससे जनता हमारे लोकतन्त्र के प्रहरी के गौरवशाली इतिहास को जान सके।

भारत में सौर ऊर्जा की संभावनाएँ, विकास, सरकारी नीतियां तथा चुनौतियाँ

अशोक सिन्हा
महानिदेशक (राजभाषा)

ऊर्जा के स्रोत हमेशा से मानव सभ्यता के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते आए हैं। परंपरागत ऊर्जा स्रोत जैसे कि कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस के अत्यधिक उपयोग से पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसलिए, आजकल दुनिया भर में नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग बढ़ता जा रहा है। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत वे होते हैं जो प्राकृतिक संसाधनों से उत्पन्न होते हैं और पुनः उत्पन्न किए जा सकते हैं। इन ऊर्जा स्रोतों का उपयोग न केवल पर्यावरण के लिए लाभकारी है बल्कि यह ऊर्जा सुरक्षा को भी सुनिश्चित करता है।

सौर ऊर्जा वह अक्षय ऊर्जा स्रोत है, जो सूर्य की किरणों से उत्पन्न होती है। यह ऊर्जा सबसे व्यापक और सर्वाधिक उपलब्ध नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है। भारत, जिसे प्रचुर धूप प्राप्त होती है, सौर ऊर्जा के विकास के लिए अत्यधिक संभावनाएँ रखता है। जलवायु परिवर्तन और बढ़ते ऊर्जा संकट के संदर्भ में, सौर ऊर्जा का विकास देश के लिए न केवल पर्यावरण संरक्षण के लिए आवश्यक है, बल्कि यह ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। यहां हम भारत में सौर ऊर्जा की संभावनाओं, इसके विकास की दिशा में सरकार द्वारा की गई नीतियों, प्रोत्साहनों और सब्सिडियों पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

भारत में सौर ऊर्जा की संभावनाएँ

भारत में सौर ऊर्जा के विकास की अपार संभावनाएँ हैं। इसके कई कारण हैं, जो सौर ऊर्जा को एक प्रमुख ऊर्जा स्रोत बनने की दिशा में प्रेरित करते हैं।

भूगोल और जलवायु

भारत की भौगोलिक स्थिति इसे सौर ऊर्जा के लिए अत्यंत उपयुक्त बनाती है। भारत के अधिकांश हिस्सों में प्रतिदिन औसतन 4 से 7 किलोवाट-घंटे प्रति वर्ग मीटर सौर ऊर्जा प्राप्त होती है। इसके साथ ही, देश में 300 से अधिक धूप वाले दिन होते हैं, जो सौर ऊर्जा के उत्पादन के लिए आदर्श हैं। विशेषकर राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों में सौर ऊर्जा की प्रचुर संभावनाएँ हैं, जहाँ धूप की तीव्रता और उपलब्धता अत्यधिक है।

बढ़ती ऊर्जा आवश्यकता

भारत की जनसंख्या और औद्योगिकीकरण के साथ-साथ ऊर्जा की मांग भी तेजी से बढ़ रही है। इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए सौर ऊर्जा एक स्थायी समाधान प्रदान कर सकती है। पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों की सीमित उपलब्धता और उनके पर्यावरणीय प्रभावों के कारण, सौर ऊर्जा की आवश्यकता और भी बढ़ गई है।

सौर ऊर्जा तकनीक में प्रगति

सौर ऊर्जा तकनीक में निरंतर प्रगति हो रही है, जिससे सौर ऊर्जा उत्पादन की लागत में कमी आई है और इसकी दक्षता में सुधार हुआ है। सोलर पैनल्स, सोलर सेल्स और भंडारण तकनीकों में हुए विकास ने सौर ऊर्जा को एक व्यवहार्य विकल्प बना दिया है।

भारत में सौर ऊर्जा का विकास

भारत में सौर ऊर्जा के विकास की दिशा में सरकार द्वारा कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। सरकार ने सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर कई योजनाएँ और नीतियाँ लागू की हैं।

राष्ट्रीय सौर मिशन

भारत सरकार ने 2010 में राष्ट्रीय सौर मिशन (Jawaharlal Nehru National Solar Mission, JNNSM) की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य 2022 तक

100 गीगावाट सौर ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य प्राप्त करना था। इस मिशन के तीन प्रमुख चरण थे, जिनमें सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता को क्रमिक रूप से बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

1. **पहला चरण (2010-2013):** इस चरण में छोटे और बड़े सोलर पावर प्लांट्स की स्थापना की गई और सौर ऊर्जा तकनीक के अनुसंधान और विकास पर जोर दिया गया।

2. **दूसरा चरण (2013-2017):** इस चरण में सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए बड़े सौर पार्कों की स्थापना की गई और निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित किया गया।

3. **तीसरा चरण (2017-2022):** इस चरण में सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता को 100 गीगावाट तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया और विभिन्न राज्यों में सौर ऊर्जा परियोजनाओं को तेजी से लागू किया गया।

सौर ऊर्जा पार्क और अल्ट्रा मेगा सोलर पावर परियोजनाएँ

भारत में सौर ऊर्जा के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर निवेश और विकास के लिए सौर ऊर्जा पार्क और अल्ट्रा मेगा सोलर पावर परियोजनाएँ शुरू की गईं। यह परियोजनाएँ मुख्यतः राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, और तमिलनाडु जैसे राज्यों में स्थापित की गई हैं, जहाँ धूप की प्रचुरता है।

रूफटॉप सोलर योजनाएँ

सरकार ने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में रूफटॉप सोलर योजनाओं को भी प्रोत्साहित किया है। इन योजनाओं के तहत घरों, कार्यालयों और उद्योगों की छतों पर सोलर पैनल्स लगाए जाते हैं, जो स्थानीय स्तर पर बिजली उत्पादन करते हैं। यह योजनाएँ ग्रिड से स्वतंत्र बिजली उत्पादन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं और इससे बिजली की बचत के साथ-साथ ऊर्जा की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित होती है।

सौर ऊर्जा के लिए सरकारी नीतियाँ, प्रोत्साहन और सब्सिडियाँ

भारत में सौर ऊर्जा के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार ने कई नीतियाँ और प्रोत्साहन योजनाएँ लागू की हैं। ये नीतियाँ और सब्सिडियाँ सौर ऊर्जा परियोजनाओं की स्थापना और संचालन को आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाती हैं।

सोलर पावर सब्सिडी

भारत सरकार सोलर पावर प्लांट्स की स्थापना के लिए सब्सिडी प्रदान करती है। सोलर पैनल्स और अन्य उपकरणों की खरीद और स्थापना के लिए सब्सिडी दी जाती है, जिससे परियोजनाओं की लागत में कमी आती है। ग्रामीण क्षेत्रों में, सोलर पंप्स और मिनी ग्रिड परियोजनाओं के लिए विशेष सब्सिडी योजनाएँ भी लागू की गई हैं।

कर में छूट और अन्य वित्तीय प्रोत्साहन

सौर ऊर्जा परियोजनाओं के लिए कई प्रकार की कर में छूट और वित्तीय प्रोत्साहन दिए जाते हैं। इसमें आयकर में छूट, आयात शुल्क में छूट, और पूंजीगत सब्सिडी शामिल हैं। इसके अलावा, सोलर ऊर्जा उत्पादन के लिए बैंकों और वित्तीय संस्थानों से सस्ते ऋण भी उपलब्ध कराए जाते हैं।

नवीकरणीय ऊर्जा प्रमाणपत्र (Renewable Energy Certificates, REC)

भारत सरकार ने नवीकरणीय ऊर्जा प्रमाणपत्र योजना की शुरुआत की, जिसके तहत सौर ऊर्जा उत्पादक अपने उत्पादन के अनुसार प्रमाणपत्र प्राप्त कर सकते हैं और इन्हें बिजली वितरण कंपनियों को बेच सकते हैं। यह योजना सौर ऊर्जा उत्पादन को बढ़ावा देने के साथ-साथ नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के उपयोग को भी प्रोत्साहित करती है।

सोलर बिडिंग और टेंडर योजनाएँ

सरकार ने सौर ऊर्जा परियोजनाओं के लिए बिडिंग और टेंडर योजनाएँ शुरू की हैं, जिसके तहत निजी कंपनियाँ सोलर पावर प्लांट्स की स्थापना और संचालन के लिए

बोली लगा सकती हैं। यह योजनाएँ सौर ऊर्जा उत्पादन को प्रतिस्पर्धात्मक बनाने और लागत में कमी लाने में सहायक रही हैं।

सौर ऊर्जा के विकास में चुनौतियाँ

हालांकि भारत में सौर ऊर्जा का विकास तेजी से हो रहा है, लेकिन इस क्षेत्र में कई चुनौतियाँ भी हैं, जिन्हें दूर करना आवश्यक है।

प्रारंभिक लागत

सौर ऊर्जा परियोजनाओं की प्रारंभिक लागत अधिक होती है, जिसमें सोलर पैनल्स, भंडारण सिस्टम, और अन्य उपकरण शामिल होते हैं। हालांकि सरकार सब्सिडी और वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करती है, फिर भी छोटे और मध्यम उद्यमों के लिए यह लागत एक बड़ी बाधा बन सकती है।

भूमि की उपलब्धता

सौर ऊर्जा परियोजनाओं के लिए बड़े भू-भाग की आवश्यकता होती है। भारत में भूमि की उपलब्धता एक गंभीर चुनौती है, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में। भूमि के अधिग्रहण और अन्य संबंधित समस्याओं के कारण सौर ऊर्जा परियोजनाओं का क्रियान्वयन धीमा हो सकता है।

भंडारण की समस्या

सौर ऊर्जा उत्पादन केवल दिन के समय ही संभव है, जब सूर्य की किरणें उपलब्ध होती हैं। इसके अलावा, मौसम की स्थिति, जैसे बादल या बारिश, सौर ऊर्जा उत्पादन को प्रभावित कर सकती है। इस समस्या को हल करने के लिए ऊर्जा भंडारण तकनीकों का विकास आवश्यक है, ताकि ऊर्जा की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित की जा सके।

तकनीकी ज्ञान और विशेषज्ञता की कमी

भारत में सौर ऊर्जा तकनीक के क्षेत्र में प्रशिक्षित और कुशल कर्मियों की कमी भी एक बड़ी समस्या है। सौर ऊर्जा परियोजनाओं के सफल क्रियान्वयन के लिए तकनीकी ज्ञान और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है, जिसे बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों और शिक्षा को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

वितरण और ग्रिड इंटीग्रेशन की समस्याएँ

सौर ऊर्जा का उत्पादन विकेंद्रीकृत होता है और इसे ग्रिड में एकीकृत करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो सकता है। बिजली वितरण कंपनियों और ग्रिड ऑपरेटरों के लिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि सौर ऊर्जा का सही और कुशल वितरण हो सके।

सौर ऊर्जा के विकास की दिशा में भविष्य की योजनाएँ और संभावनाएँ

भारत में सौर ऊर्जा के विकास की दिशा में आगे बढ़ने के लिए कई संभावनाएँ और योजनाएँ मौजूद हैं।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग

भारत ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सौर ऊर्जा के विकास के लिए कई समझौतों और साझेदारियों पर हस्ताक्षर किए हैं। इनमें अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन का गठन शामिल है, जिसका उद्देश्य सौर ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाना और सौर ऊर्जा के विकास के लिए आवश्यक संसाधनों का आदान-प्रदान करना है।

सोलर-विंड हाइब्रिड सिस्टम

सौर ऊर्जा के साथ-साथ पवन ऊर्जा का उपयोग करके हाइब्रिड सिस्टम्स का विकास किया जा रहा है। यह सिस्टम्स सौर और पवन ऊर्जा के संयोजन से बिजली उत्पादन को और अधिक स्थिर और विश्वसनीय बना सकते हैं।

स्मार्ट ग्रिड्स का विकास

स्मार्ट ग्रिड्स का विकास सौर ऊर्जा के कुशल वितरण और उपयोग को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। स्मार्ट ग्रिड्स के माध्यम से सौर ऊर्जा उत्पादन और उपभोग का प्रबंधन अधिक प्रभावी ढंग से

किया जा सकता है।

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में विस्तार

भारत में सौर ऊर्जा का विकास केवल बड़े सौर पार्कों तक ही सीमित नहीं है। सरकार शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सोलर पावर की पहुँच को बढ़ाने के लिए योजनाएँ बना रही है, जिससे ऊर्जा की कमी वाले क्षेत्रों में भी सौर ऊर्जा का उपयोग संभव हो सके।

निष्कर्ष

सौर ऊर्जा भारत के ऊर्जा क्षेत्र के लिए एक क्रांतिकारी बदलाव का प्रतीक है। देश के भौगोलिक और जलवायवीय परिस्थितियाँ इसे सौर ऊर्जा के लिए अत्यधिक उपयुक्त बनाती हैं। सरकार द्वारा की गई नीतियाँ, प्रोत्साहन और सब्सिडियाँ सौर ऊर्जा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। हालाँकि, इस क्षेत्र में कई चुनौतियाँ भी हैं, जिन्हें दूर करने के लिए समग्र नीति, तकनीकी विकास, और वित्तीय समर्थन की आवश्यकता है।

भविष्य में, सौर ऊर्जा भारत के ऊर्जा परिदृश्य को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यह न केवल देश की ऊर्जा सुरक्षा को सुनिश्चित करेगा, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण होगा। सौर ऊर्जा के विकास से भारत एक स्वच्छ, हरित, और सतत ऊर्जा प्रणाली की दिशा में अग्रसर हो सकता है, जो न केवल राष्ट्रीय बल्कि वैश्विक स्तर पर भी एक सकारात्मक बदलाव का संकेत होगा।

सुखी जीवन की कुंजी

प्रशांत प्रखर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी,
निदेशक सचिवालय,
पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर

ईश्वर ने इंसान को बड़ी फुर्सत में तराशकर बनाया है। कुछ गुण तो ऐसे दिए हैं जो अन्य किसी भी जीव को अप्राप्य है। इंसान के हृदय में भावना है, दिमाग में सृजन की क्षमता है। ऐसे कई गुण हैं जो इसे 'खास' बनाने के लिए पर्याप्त हैं। ये गुण मनुष्य के मन- मस्तिष्क से संबंध रखते हैं। इन्हीं गुणों के बल पर धरती से आकाश तक ईश्वर के माया के साम्राज्य में मनुष्य अपनी विजय पताका फहराए जा रहा है। छोटी-से-छोटी भौतिक सुविधा या बड़े से बड़ा गूढ़ रहस्य क्यों न हो, दुर्लभता की सीमा पर लगभग कुछ भी रह नहीं गया है।

प्रत्येक मनुष्य अपने आप में अनोखा है। सभी के पास मस्तिष्क है। हाँ ये अलग बात है कि किसी का मस्तिष्क आंशिक रूप से सक्रिय होता है तो किसी का थोड़ा अधिक। शतप्रतिशत मानसिक सक्रियता विज्ञान के अनुसार संभव नहीं है। मानसिक सक्रियता अच्छी बात है परंतु इसे सही दिशा की आवश्यकता है। सक्रियता के साथ इसकी देखभाल भी आवश्यक है। इसके लिए शरीर स्वस्थ रखना जितना जरुरी है अन्य चीजों के अलावा दिनचर्या का सही होना भी उतना ही आवश्यक है । कहते भी हैं 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ आत्मा का वास होता है'। रोजमर्रा की भागदौड़ वाली जिन्दगी में हम अपने स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रख पाते। खेतिहर मजदूर, कार्यालयकर्मी, व्यापारी वर्ग से लेकर बड़े-बड़े राजनयिक, न्यायाधीश भी भागदौड़ वाली इस बेचैन सी जिंदगी को जिए जा रहे हैं। ऐसा व्यस्त जीवन जीने पर दिमाग भी थक जाता है और चुपके से तनाव हमारे मन के साथ जीवन में शामिल हो जाता है और शरीर में ढेर सारी बीमारियों को जन्म देने का कारक बन जाता है। बड़े बुजुर्ग हमेशा से कहते आए हैं कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ आत्मा का वास होता है हमारे ऋषि मुनियों ने भी 'शरीरमाद्यम खलु धर्मसाधनम' की अवधारणा को अपनाया है। प्रश्न ये है कि आज के समय में जब शुद्ध भोजन सभी के लिए उपलब्ध नहीं

है तो फिर कैसे कोई शरीर स्वस्थ रखे। दोषी हम भी हैं, एक तो सस्ते अनाज की चाहत के कारण कृत्रिम खाद, कीटाणुनाशी, संकर नस्लों के अधिक उपयोग एवं तदनुसार हमारे खान पान की आदतों में बहुत बदलाव आया है ऊपर से पश्चिम के अन्धानुकरण के फलस्वरूप हम फ़ास्ट फूड, जंक फूड, डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों की ओर आकर्षित होकर अपना स्वास्थ्य गँवा रहे हैं। भौतिक सुख सुविधाओं के अधिकतम उपयोग ने भी हमारे शरीर पर बुरा प्रभाव डाला है। अन्य भौतिक साधनों के साथ मोबाइल फ़ोन ने हमारे जीवन को बहुत प्रभावित किया है। थोड़ी देर भी खाली बैठना हो तो हमारे हाथ में मोबाइल स्वयमेव आ जाता है और हम उसके विभिन्न एप्लीकेशन या रील्स में अपने आप को डुबा देते हैं। यदि ऐसा करने की बजाए हम अपने आप को मन की गहराइयों में डुबा पाएं तो क्या ही बेहतर हो। जब खाली बैठकर बोर होने का समय आए तो आँखे बंद कर ऐसी कोशिश कर सकते हैं कि मन को विचार शून्य बना दिया जाए अर्थात कुछ भी न सोचें। यदि ऐसा संभव न हो तो आँखें बंद करने पर जो अन्धकार नजर आता है उसमे प्रकाश बिंदु या तारों जैसी प्रकाश बिन्दुओं की खोज करें और ये अनुभव करें कि हमारे मस्तिष्क को असीम शांति, राहत और प्रसन्नता मिल रही है। ऐसा करने से क्या सकारात्मक फायदा होगा ये दीर्घकाल में आपको पता चल जाएगा। मोबाइल फ़ोन का उपयोग भी बुद्धिमतापूर्वक इस प्रकार करना है कि हम उसका सदुपयोग करें न कि उसी के गुलाम बन जाएँ। मेरा यह कहना नहीं है कि इन चीजों का उपयोग न किया जाए। अवश्य करना चाहिए क्योंकि इन चीजों के प्रादुर्भाव में कहीं न कहीं विज्ञान का योगदान है और विज्ञान का कार्य ही है मानव जीवन को सुगम बनाना लेकिन 'अति सर्वत्र वर्जयेत' इस पंक्ति को भी याद रखना आवश्यक है। हम सभी भौतिक सुख सुविधाओं का उपयोग करें, सीमित मात्रा में फ़ास्ट फूड आदि का भी उपयोग करें क्योंकि जीवन में हर एक चीज का आनंद लेना चाहिए। हाँ इन चीजों के साथ शारीरिक श्रम, व्यायाम, योग, ध्यान आदि का भी समावेश दैनिक रूप से करना अति आवश्यक है। खास कर इस दौर में जब इंसान को किसी दूसरे इंसान तो छोडिए खुद के लिए भी समय नहीं है।

तो हमें करना क्या है? क्या तपस्वी की तरह जीवन जीना है या फिर भजन कीर्तन को ही जीवन का लक्ष्य बना लेना है? नहीं, ऐसा नहीं करना है, यदि ऐसा होता तो हमारे दर्शन शास्त्रों में गृहस्थ आश्रम को सर्वश्रेष्ठ नहीं कहा गया होता। हमें एक सामान्य जीवन जीना है, एक ऐसा जीवन जिसमें हमारी सोच सात्विक हो। हम किसी को पीड़ा देने के बारे में न सोचें। अपने मन मस्तिष्क एवं शरीर को यथासंभव स्वस्थ रखने की कोशिश करें। शरीर स्वस्थ रखने के लिए हमें ऐसी आदतें या ऐसी चीजों का सेवन न्यूनतम करना होगा जिनके बारे में हमें ज्ञात है कि अमुक चीजें हानिकारक हैं फिर भी हम उन्हें छोड़ नहीं पाते। इसी प्रकार आत्मा की शुद्धता और सात्विक बल बढ़ाने के लिए भी बुरी आदतों एवं दूषित मनोविचार का यथासंभव परित्याग करना आवश्यक है। हाँ यह सत्य है कि ईर्ष्या, द्वेष, मत्सर आदि दुर्गुण मनुष्य के हृदय से जल्दी नहीं जाते, तो हम ऐसा तो अवश्य कर सकते हैं कि इन भावनाओं की धारा को इस प्रकार बहने दिया जाए कि इससे हमारी प्रगति की फसल सींची जा सके। अपनी इच्छाशक्ति से इन दुर्गुणों को हम सद्गुणों में बदल सकते हैं, उदाहरण के लिए जैसे पेंसिल से खींची गई बड़ी रेखा को छोटी करने के लिए उसे मिटाने की बजाए उससे भी बड़ी रेखा खींच दी जाए।

यदि हम अपना जीवन शांति और आनंद से व्यतीत करना चाहते हैं तो यम, नियम, दंड, आसन, प्राणायाम को यथासंभव जीवन में उतारना भी उतना ही आवश्यक है जितना जीने के लिए श्वासोच्छादन। सरल शब्दों में समझिये तो हमें अपने जीवन में संयम, सच्चरित्रता और सदाचार को अपनाना है। भोजन में मसालों की मात्रा कम हो। सूर्योदय से

पूर्व शय्या का त्याग कर दिया जाए और तभी कम से कम पांच मिनट प्राणायाम या ध्यान कर लिया जाए। प्राणायाम में अनुलोम विलोम, भ्रामरी आसन आदि की आवश्यकता आज के दौर में अधिक है। इन चीजों से आत्मिक शांति भी मिलेगी और अच्छी नींद भी हम पा सकेंगे। इसके लिए इन चीजों के साथ साथ और बातों को भी अपनाना आवश्यक है। बुरी वृत्तियों का त्याग कर ईश्वर का स्मरण निरंतर करते रहना, यदि ईश्वर में भरोसा न हो तब भी हृदय से सेवाभाव का लोप न होने देना ऐसी आदतें हैं जो हमारा लोक परलोक तो सुधारती ही है हमें आध्यात्मिक बल भी प्रदान करती हैं इसके लिए हम किसी लाचार, मजबूर की हल्की फुल्की मदद भी कर सकते हैं। मदद कई तरीके से की जा सकती है कभी तन, कभी मन तो कभी धन से मदद की जा सकती है। किसी के होठों पर आई मुस्कुराहट का कारण यदि आप हैं तो ये भी कम बड़ी सहायता नहीं है। दुनिया में जितने भी हास्य कलाकार है वे भी कहीं न कहीं मानव जाति की सेवा कर रहे हैं। तनावग्रस्त लोगों के लिए तो हास्य किसी संजीवनी से कम नहीं। सिर्फ हंसने हंसाने से हम खुद से कई रोगों को दूर रख सकते हैं।

मन को एकाग्र और हृदय को शांत रखना भी इस दौर में हमारे लिए चुनौती है। इसके लिए छोटे छोटे उपाय किये जा सकते हैं। यदि संभव हो तो 'कर से कर्म करहिं विधि नाना, मन राखहिं जहाँ कृपा निधाना' इस उक्ति को जीवन में फलित कर सकते हैं और यदि ऐसा भी न हो पाए तो जब खाली बैठें हों तो ईश्वर का मन ही मन स्मरण करना न भूलें, यदि साकार ईश्वर में भरोसा न हो तो किसी विषय पर सकारात्मक चिंतन या एकाग्रचित होकर निराकार ब्रह्म का ध्यान करते रहने से दिमाग यहाँ वहां भटकेगा नहीं और मस्तिष्क को पोषण की खुराक मिलेगी। इन सब के साथ जीवन का आनंद भी लेना है। हमें क्षण-क्षण प्रतिपल जीवन जीने की जिजीविषा को भी कभी विस्मृत नहीं होने देना है। प्रत्येक क्षण को भरपूर जिएँ, प्रसन्नता का मनोभाव हृदय से जाने न पाए, इसके लिए करना यह है कि हमें न तो अतीत कि यादों में डूबना उतरना है न सदा भविष्य की योजनाएं बनाते रहना है। ऐसा करने से हम अपना पूरा ध्यान वर्तमान का आनंद लेने में लगा पाएँगे। यदि कभी ऐसे मौके आते हैं जब हमें मनचाहा फल नहीं मिलता तो धैर्य रखना चाहिए क्योंकि हमारे लिए क्या अच्छा है ये ईश्वर को पता है, हो सकता है कि जो लक्ष्य हमने खुद के लिए रखा था वो हमारे लिए न हो, उस लक्ष्य प्राप्ति से भी आवश्यक कुछ ऐसा हो जो ईश्वर ने हमें प्रदान कर रखा हो। यह बात भी स्मरणीय है कि 'होइहें वही जो राम रचि राखा' यानी संसार में कुछ भी होता है तो ईश्वर या प्रकृति की इच्छा के अनुसार ही होता है। इसका ये अर्थ नहीं है कि लक्ष्य प्राप्ति के लिए हम प्रयास ही न करें, उसमें कोई कसर नहीं छोडनी बस परिणाम से निराशा न हो, इसके लिए यह पंक्ति याद रखना है। ऐसा करने से हमारी दृष्टि से आशा की किरणें कभी ओझल नहीं हो पाएँगीं। जीवन जीने के लिए आशा, धैर्य, सदाचार और सत्यनिष्ठा जैसे सद्गुणों को अपने जीवन में शामिल करने की सदा कोशिश करनी चाहिए, दुःख और गम में भी सोचना यह है कि ये कठिन दौर भी आज नहीं तो कल निकल जाएगा। ऐसे समय में अच्छे समय का इन्तजार पूरी आशा से करनी चाहिए। समय एक सा नहीं रहता, ऐसा कोई नहीं है जिसने कभी बुरे दौर का सामना न किया हो। तपने के बाद ही सोना कुंदन बनता है।

वर्तमान को ऐसे जीना चाहिए मानो इस पल, इस क्षण या इस दिन का भरपूर लुत्फ़ उठाना है और इसके बाद यह मौका दोबारा मिले या न मिले। लुत्फ़ उठाना मतलब सिर्फ मनोरंजन ही नहीं बल्कि उसके साथ परिवार या समाज में सभी के साथ अच्छा व्यवहार करके समय बिताना भी

महत्त्वपूर्ण है। अपमान, क्रोध आदि की भावनाओं से थोड़ी सी दूरी बनाकर मन प्रसन्न रखने वाली बातों पर ध्यान केन्द्रित करने से हम नकारात्मकता से दूर होंगे और तभी एक सुखमय जीवन जीने की नींव पड़ सकेगी। जीवन को भरपूर जीना चाहिए क्योंकि हमें मनुष्य का जीवन मिला है। जो लोग ठहाके मारकर हँसते हैं वो बीमार भी कम पड़ते हैं। इसके साथ ही जो लोग हँसते मुस्कुराते बिल्कुल नहीं हैं वे खुद के साथ साथ सान्निध्य में आने वाले लोगों पर भी नकारात्मक असर डालते हैं। जहाँ तक बन पड़े ऐसे लोगों के सामने कम से कम पड़ा जाए इसी में भलाई है और अगर सामना हो ही जाए या ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो कि अक्सर उनके पास जाना पड़े तो वहां भी अपने हंसने मुस्कुराने की आदत को बरक़रार रखना चाहिए बल्कि और ज्यादा खुलकर, यदि संभव हो तो हंसने हंसाने की और अधिक कोशिश करनी चाहिए।

कार्यालय में काम करने वाले सभी व्यक्तियों के लिए तो इन बातों को ध्यान में रखना और भी जरूरी है और तय समय से अधिक काम करने वाले लोगों के लिए तो मानसिक शांति परम आवश्यक है। ऐसे लोग बी.पी., शुगर, अनिद्रा आदि से जल्दी प्रभावित होते हैं। उनके लिए खान-पान पर भी ध्यान देना आवश्यक हो जाता है। रोज थोड़ी सी कसरत, योग, ध्यान और सात्विक भोजन को यदि वे अपनी जीवन शैली में अपना लें तो बीमारियाँ स्वतः कम होंगी। जिन लोगों को कार्यालय के कार्य से अधिक भागदौड़ करनी पड़ती है या अक्सर रात में अच्छी नींद नहीं ले पाते उनके स्वास्थ्य पर अधिक जोखिम रहता है। उन्हें तो और अधिक सतर्क रहते हुए इस लेख में लिखी गई बातों पर ध्यान देकर आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहिए। मानसिक शांति भी आवश्यक है। इसके लिए हल्के फुल्के योग, कसरत आदि के साथ रुचिकर संगीत सुनना चाहिए, संगीत में हास्य हो तो सोने पे सुहागा, इसके साथ हास्य वाले साधनों पर पूरा ध्यान देना चाहिए। आजकल यू ट्यूब आदि पर भी कभी कभी समय बिताने में हर्ज नहीं बस इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर समय थोडा कम बिताना है ताकि ये हमारे स्वास्थ्य पर कम असर डालें। इतनी बातों में हम उतनी बातों को अवश्य अपनाएं जितना आसानी से थोड़ी सी कोशिश करके अपना सकते हैं, परिणाम स्वमेव दिखने लगेगा। जब तक अपरिहार्य न हो तब तक कार्यालय के तनाव को घर नहीं ले जाना चाहिए। यदि घर में कार्यालय का कार्य करना ही पड़े तो शांत मन से निष्पादित करना चाहिए क्योंकि जब काम करना ही है तो दिमाग को परेशान करने, झुंझलाने से कोई फ़ायदा नहीं है, उससे अच्छा है कि मन को मनाकर खुश रखते हुए आराम से बैठकर काम कर लिया जाए, आप भी खुश और बॉस भी। हाँ एक बात ध्यान देनी है कि झल्लाहट या खिन्नता मन में नहीं आने देनी चाहिए ताकि परिवार के सदस्य आपके तनाव में शामिल न हों और आप भी शांतचित्त होकर कार्य निष्पादित कर लें। यदि संभव हो तो हम अपने आप को इस प्रकार ढाल लें कि हमारी मनोवृति इस प्रकार की क्रोध बढाने वाली परिस्थितियों में भी शांत चित्त रह पाए तो यकीन करें कि जीवन जीने की कला के आप सम्राट हो सकते हैं।

अक्सर होता यह है कि हम किसी कार्य के कारण या नफा नुकसान, घर के खर्च आदि किसी प्रकार की सोच में इस कदर डूबे रहते हैं कि मन मस्तिष्क को आराम मिलता ही नहीं जिसके कारण हम अपना सुख, नींद- चैन सब खो बैठते हैं। हमें स्मरण रखना होगा कि ज्यादा सोचने से समस्या बढती है घटती नहीं। दिमाग की क्षमता वैसे तो काफी अधिक होती है पर एक ही बात को सोचते रहने से हम उसे भी अच्छी तरह से कार्य नहीं करने देते। लगातार काम करने से तो निर्जीव वस्तुएं भी थक जाती है फिर हमारा मस्तिष्क तो ईश्वर की सबसे अधिक जटिल और अनुपम रचना है। अतः

इसका ख्याल हमें अच्छी तरह रखना होगा। मस्तिष्क के अधिकतम उपयोग के लिए तो कई मनोवैज्ञानिक उपाय हैं उनके बारे में तो काफी विस्तार से चर्चा करनी होगी किन्तु यदि इस लेख में लिखी हुई बातों पर आपने गौर किया और अमल में लाए तो आपका दिमाग और शरीर तनाव रहित और स्वस्थ रहेगा इसमें संशय नहीं।

जीवन में निरंतर आगे बढ़ते रहने के लिए कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। जिन बातो/आदतों के बारे में हम जानते हैं कि उन्हें अपनाकर हमारा विकास हो सकता है उन्हें अपनाना वांछित विकल्प है और जो दुर्गुण त्याज्य हैं उनका यथासंभव शनैः शनैः त्याग करते चलें।

अमरकोश में एक प्रसिद्ध श्लोक है जो कि महाभारत से संकलित है –

'षड् दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता,
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता'।

अर्थात ऐश्वर्य या उन्नति चाहने वाले पुरुषों को नींद, तन्द्रा (उंघना), डर, क्रोध, आलस्य तथा दीर्घसूत्रता (जल्दी हो जाने वाले कामों में अधिक समय लगाने की आदत)- इन छः दुर्गुणों को त्याग देना चाहिए।

गौर से सोचा जाए तो हमारे प्राचीन ग्रंथों में अन्य बातो के साथ जीवन जीने की कला भी समाहित है। बस उनमे से कुछ चीजों को अपनाना है।

इसके लिए ग्रंथों में डूबने की आवश्यकता नहीं है, प्रथमतः यदि आपने इस लेख को पढ़ा है तो इसमें लिखी बातें आत्मसात कर लीजिए तत्पश्चात उस पर अमल कीजिए, आप देखिएगा कि आप तनाव जैसी मनोदशा के भंवर से निकलकर किस प्रकार प्रसन्नता के मनोभाव वाली नैया पर

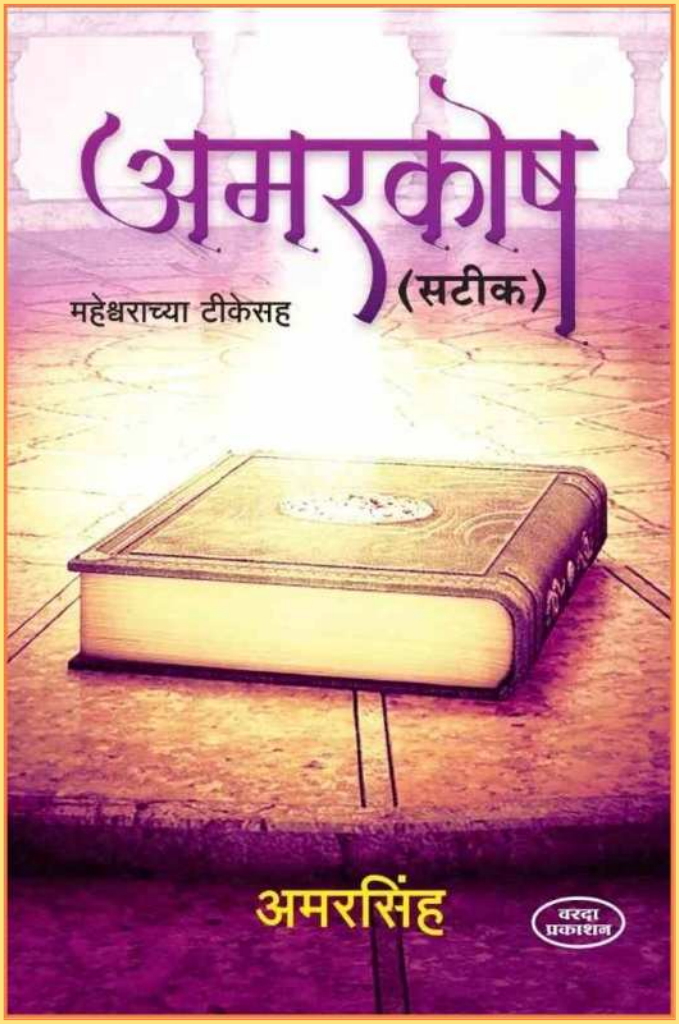

आरूढ़ होंगे। आपका जीवन सुगम होगा और आपके जीवन में कई प्रकार की सकारात्मकता के साथ साथ सुख और ख़ुशी शामिल हो जाएगी। लेख में लिखी अधिकतर बातें सिर्फ वैचारिक नहीं हैं अपितु मैंने व्यक्तिगत जीवन से ग्रहण की है इसलिए ग्राह्य हैं और मेरी कामना है कि इन बातों को जीवन में उतारकर जिस प्रकार मैंने अपना जीवन सुगम बनाया है उसी प्रकार हर व्यक्ति का जीवन सुगम, खुशहाल और सुखमय बीते।

लोकतंत्र

जनता की शक्ति का महत्त्वपूर्ण स्तंभ

श्री महेश म. जयसिंघाणी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

लोकतंत्र, जिसे हम डेमोक्रेसी भी कहते हैं, भारत में बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह नागरिकों को सशक्त बनाता है, अधिकारों का पालन कराता है, और समावेशी विकास को प्रोत्साहित करता है। लोकतंत्र एक ऐसा राजनीतिक तंत्र है जिसमें शासकों की शक्ति जनता के हाथ में होती है। यह एक प्रकार की शासन प्रणाली है जिसमें लोगों की भागीदारी, स्वतंत्रता, और मताधिकार केंद्र में होते हैं।

लोकतंत्र का इतिहास

लोकतंत्र का इतिहास बहुत ही प्राचीन है और यह मानव सभ्यता के विकास में महत्त्वपूर्ण का निभाता है। लोकतंत्र का अर्थ होता है "लोगों का शासन" या "लोगों की सत्ता"। यह एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था है जिसमें शक्ति और प्राधिकृति जनता के हाथ में होती है।

लोकतंत्र की उत्पत्ति विभिन्न समयों और स्थानों पर हुई, लेकिन इसकी शुरुआत ग्रीस में हुई थी। ग्रीस में एथेंस नामक शहर में 5वीं सदी ईसा पूर्व में सोलोन, क्लिस्थेनीज, और पेरिक्लीज जैसे महान विचारकों ने लोकतंत्र की नींव रखी। इस समय एथेंस में नागरिकों की सहभागिता और निर्णयन ने लोकतंत्र की शुरुआत की। इसके बाद, लोकतंत्र की प्रक्रिया ब्रिटेन, फ्रांस, अमेरिका, और अन्य यूरोपीय देशों में भी विकसित हुई। भारत में भी लोकतंत्र की चर्चा वेद, उपनिषदों, और पुराणों में पाई जाती है। विशेष रूप से, आधुनिक भारत के स्वतंत्रता संग्राम में लोकतंत्र का बहुत महत्त्व था। 1947 में

भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, भारतीय संविधान में लोकतंत्र के सिद्धांतों को शामिल किया गया और भारत एक स्वर्णिम गणराज्य के रूप में स्थापित हुआ। लोकतंत्र ने भारत में नागरिकों को स्वतंत्रता, सहभागिता, और समानता का अधिकार प्रदान किया है। यह देश को अपनी सोच, मतभेद, और समृद्धि में विकसित करने का अवसर प्रदान करता है। लोकतंत्र ने भारत को एक बड़े और विविध समुदाय की सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर में सामंजस्यता और विविधता की मूलभूत सिद्धांतों का पालन करने का मार्ग प्रदान किया है।

लोकतंत्र का महत्त्व भारत में अत्यधिक है क्योंकि यह नागरिकों के अधिकारों का संरक्षण करता, और समावेशी विकास को बढ़ावा देता है। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद से, भारत ने लोकतंत्र को अपने राजनीतिक ढांचे के रूप में अपनाया है, जिसने राष्ट्र की मार्गदर्शिका को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

प्रतिनिधित्व और प्रतिभागिता: लोकतंत्र सुनिश्चित करता है कि हर नागरिक की आवाज सुनी जाये और उनको उनके प्रतिनिधियों को चुनने का अधिकार हो। भारत में नियमित अंतरालों पर चुनाव होते हैं ताकि स्थानीय पंचायतों से लेकर राष्ट्रीय संसद तक नेता चुने जा सकें। यह लोगों को उनके निर्णयों पर प्रभाव डालने की शक्ति प्रदान करता है जो उनके जीवन को प्रभावित करते हैं। यहां कुछ मुख्य कारण हैं जिनके माध्यम से भारत में लोकतंत्र के महत्व को प्रकट किया जा सकता है:

लोकतंत्र के आदर्श

1. **जवाबदेही और पारदर्शिता:** लोकतंत्र द्वारा सरकार और उसके प्रतिनिधियों से जवाबदेही की मांग की जाती है। नियमित चुनाव निर्वाचित अधिकारियों के बीच जिम्मेदारी की भावना पैदा करते हैं ताकि वे अपने मतदाताओं के साथ किए गए वादों को पूरा करें। साथ

ही, पारदर्शिता शासन में भ्रष्टाचार और शक्ति का दुरुपयोग रोकने में मदद करती है।

2. **सामाजिक समावेशीकरण:** लोकतंत्र सभी नागरिकों को समान मतदान अधिकार प्रदान करके सामाजिक समावेशीकरण को बढ़ावा देता है, चाहे वे जाति, धर्म, लिंग, या आर्थिक स्थिति के हों। यह निर्णय-निर्माण प्रक्रियाओं में विविध आवाजों को समर्थन देने के लिए मंच प्रदान करता है।

3. **विवादों का शांतिपूर्ण समाधानः** संवाद, समझौते, और शांतिपूर्ण प्रक्रियाओं के माध्यम से लोकतंत्र विवादों और विभिन्नताओं को समाधान करने में सशक्त होता है। यह विविध देशो में, लोकतंत्र पर चर्चा और वाद-विवाद के लिए मंच प्रदान करता है, जिससे नागरिक सार्वजनिक रूप से अपनी चिंताओं का समाधान कर सकते हैं।

4. **आर्थिक विकास और उन्नतिः** लोकतंत्र एक स्थिर राजनीतिक परिवेश प्रदान करता है जो आर्थिक विकास और उन्नति के लिए सामर्थ्यपूर्ण होता है। यह निवेश, नवाचार, और उद्यमिता को प्रोत्साहित करता है, जिससे नौकरियों की स्थापना होती है और जीवन मानकों में सुधार होता है।

5. **अल्पसंख्यकों की सुरक्षाः** भारत एक बहु-धर्मिक और बहु-जातिवादी राष्ट्र है। लोकतंत्र अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित करता है और किसी एक समूह की प्रधानता को रोकने और धार्मिक और सांस्कृतिक सद्भाव को प्रोत्साहित करता है।

6. **कानून का शासनः** लोकतंत्र कानून के शासन को मजबूती देता है, यह सुनिश्चित करता है कि कानून नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करने और व्यवस्था को बनाए रखने के लिए पारित किए जाते हैं। यह कभी भी केवल कुछ लोगों के हाथ में शक्ति का संघटन नहीं होने देता और निगरानी और संतुलन की प्रक्रिया स्थापित करता है।

7. **अंतरराष्ट्रीय मान्यताः** भारत में लोकतंत्र के प्रति की गई प्रतिबद्धता उसकी अंतर्राष्ट्रीय छवि को मजबूती देती है और उसे अन्य लोकतंत्रिक राष्ट्रों के साथ द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देती है। यह भारत को जिम्मेदार वैश्विक खिलाड़ी के रूप में मजबूती प्रदान करती है।

8. **सामाजिक प्रगति और मानव विकासः** लोकतंत्र सामाजिक मुद्दों की पड़ताल करने और शिक्षा, स्वास्थ्य,

स्वच्छता, और गरीबी उन्मूलन को प्रोत्साहित करने वाली नीतियों की रूपांतरण के लिए मंच प्रदान करता है। यह राष्ट्र के कुल कल्याण और विकास में योगदान करता है।

भारत में लोकतंत्र का संरक्षण कैसे करें:-

लोकतंत्र को बनाए रखने के लिए हमें समर्पित और जागरूक रहने की आवश्यकता होती है। यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण कदम दिए गए हैं जो हमें भारत में लोकतंत्र के संरक्षण के दिशा-निर्देश प्रदान करते हैं:

जागरूकता और शिक्षा: लोकतंत्र के संरक्षण में पहला और महत्त्वपूर्ण कदम है जागरुकता और शिक्षा। लोगों को लोकतंत्र के महत्त्व के बारे में जागरूक करना और उन्हें उनके अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में शिक्षित करना आवश्यक है।

सशक्त और स्वतंत्र मीडिया: मीडिया की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। लोकतंत्र के संरक्षण में मीडिया को स्वतंत्रता के साथ काम करने की आवश्यकता है और उससे सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता, और जनमत के प्रति सजग रहने की अपेक्षा की जाती है।

जानकारी का प्रसार: लोगों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में जानकारी प्राप्त करने का अधिकार होना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से लोगों को उनके अधिकारों की जानकारी देना महत्त्वपूर्ण है।

भ्रष्टाचार का विरोध: भ्रष्टाचार का विरोध करना और सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी की महत्ता को समझना और अपनाना आवश्यक है।

उपसंहार: इस प्रकार उपरोक्त संदर्भों एवं आयामों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि लोकतंत्र एक महत्त्वपूर्ण और सामाजिक तंत्र है जो समाज में सामाजिक न्याय, स्वतंत्रता, और विकास की स्थापना कर एक समावेशी समाज की रचना करता है।

नोट: उपरोक्त रचना में रचनाकार के विचार व्यक्तिगत हैं इस कार्यालय का उक्त से कोई संबंध नहीं हैं।

अंतर्राष्ट्रीय स्थानीय शासन लेखापरीक्षा केंद्र, राजकोट, गुजरात

लेखक
किरन पाल सिंह
हिंदी अधिकारी
भारत के नियंत्रक एवं
महालेखापरीक्षक का कार्यालय,
नई दिल्ली – 110 010.

अंतर्राष्ट्रीय स्थानीय शासन लेखापरीक्षा केंद्र, सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्था की एक अग्रणी पहल का आधिकारिक तौर पर 18 जुलाई 2024 को राजकोट, गुजरात में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री गिरीश चन्द्र मुर्मू द्वारा उद्घाटन किया गया। उद्घाटन स्थानीय सरकार के लेखापरीक्षकों की लेखापरीक्षा क्षमता और आत्मनिर्भरता को बढ़ाने, बेहतर वित्तीय प्रदर्शन मूल्यांकन, सेवा निष्पादन एवं आंकड़ों के प्रस्तुतिकरण को बढ़ावा देने में एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर है।

अंतर्राष्ट्रीय स्थानीय शासन लेखापरीक्षा केंद्र, राजकोट का उद्घाटन – फोटो

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया – फोटो

अपनी समृद्ध विरासत एवं त्वरित विकास के लिए जाना जाने वाला शहर राजकोट, अंतर्राष्ट्रीय स्थानीय शासन लेखापरीक्षा केंद्र के लिए एक आदर्श स्थान है। यह शहर, जहाँ महात्मा गांधी ने अपने प्रारम्भिक वर्ष बिताए, मार्च 2021 तक भारत का छठा सबसे स्वच्छ एवं दुनिया का सातवाँ सबसे तेज़ी से विकसित होने वाला शहर है। अंतर्राष्ट्रीय स्थानीय शासन लेखापरीक्षा केंद्र की कल्पना भारत और पूरे विश्व में स्थानीय सरकारों से जुड़े नीति निर्माताओं, प्रशासकों और लेखापरीक्षकों को एकजुट करने वाले एक सहयोगी मंच के रूप में की गई है। केंद्र का उद्देश्य स्थानीय सरकारों के निर्वाचित प्रतिनिधियों और कार्यकारी अधिकारियों के साथ-साथ सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्था एवं अधीनस्थ लेखापरीक्षा संस्थानों के स्थानीय शासन के लेखापरीक्षकों की क्षमता का निर्माण करना है।

अंतर्राष्ट्रीय स्थानीय शासन लेखापरीक्षा केंद्र का प्राथमिक उद्देश्य स्थानीय सरकार के लेखापरीक्षा के लिए उच्च मानकों का विकास करना, आंकड़ा संग्रह और रिपोर्टिंग को मजबूत करना तथा व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं नेतृत्व विकास पहलों के माध्यम से लेखापरीक्षकों, कार्यकारी अधिकारियों और निर्वाचित प्रतिनिधियों को सशक्त बनाना है। अंतर्राष्ट्रीय स्थानीय शासन लेखापरीक्षा केंद्र की स्थापना

जमीनी स्तर पर जुड़ाव और नागरिक स्वामित्व एवं जवाबदेही को बढ़ावा देकर सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में स्थानीय सरकारों के महत्त्व को रेखांकित करती है।

उद्घाटन कार्यक्रम की शुरुआत श्री गिरीश चन्द्र मुर्मू, भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के आगमन से हुआ। भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक ने रिबन काटने व दीप प्रज्वलित करने के पश्चात पट्टिका का अनावरण किया तथा अंतर्राष्ट्रीय स्थानीय शासन लेखापरीक्षा केंद्र की प्रशिक्षण सुविधाओं का जायजा लेने के पश्चात आगंतुक पुस्तिका में प्रविष्टि की। तत्पश्चात, समारोह संचालक द्वारा स्वागत भाषण दिया गया और मंच पर गणमान्य व्यक्तियों का परिचय कराया गया। भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक ने उपस्थित सभा को संबोधित किया जिसमें उन्होंने इस अवसर की पृष्ठभूमि एवं उद्देश्य पर बल दिया जिसका विवरण इस प्रकार है।

1. अंतर्राष्ट्रीय स्थानीय शासन लेखापरीक्षा केंद्र जवाबदेही तथा शासन को सुदृढ़ करने हेतु स्थानीय सरकारों में नीति निर्माताओं, प्रशासकों और लेखापरीक्षकों के बीच सहयोग को बढ़ावा देगा। इसका उद्देश्य स्थानीय सरकारी लेखापरीक्षकों को तकनीकी मार्गदर्शन एवं सहायता प्रदान करके वित्तीय प्रदर्शन मूल्यांकन तथा सेवा वितरण में सुधार करना है।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा पट्टिका का अनावरण - फोटो

2. अंतर्राष्ट्रीय स्थानीय शासन लेखापरीक्षा केंद्र स्थायी विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने, सामुदायिक जुड़ाव को बढ़ावा देने, जलवायु परिवर्तन तथा समुद्री अर्थव्यवस्था जैसी वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने में स्थानीय सरकारों की सहायता करेगा क्योंकि ये जमीनी स्तर पर प्रभावी नीति कार्यान्वयन तथा आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

3. अंतर्राष्ट्रीय स्थानीय शासन लेखापरीक्षा केंद्र का उद्देश्य सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करके स्थानीय प्रशासन को मजबूत करना तथा कार्यशालाओं एवं सहकर्मी आदान-प्रदान के माध्यम से सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों के बीच सहयोग को सुदृढ़ करना है जिससे स्थानीय शासन स्तर पर पारदर्शिता, जवाबदेही तथा प्रभावी लेखापरीक्षा मानकों को बढ़ावा मिले।

इस कार्यक्रम में "अंतर्राष्ट्रीय स्थानीय शासन लेखापरीक्षा केंद्र - भविष्य की ओर एक दृष्टि" शीर्षक पर एक प्रस्तुति दी गई, जिसमें भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के स्थानीय सरकार लेखापरीक्षा स्कन्ध द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्थानीय शासन लेखापरीक्षा केंद्र की एक विस्तृत रूपरेखा का विहंगावलोकन हुआ।

तत्पश्चात, चयनित पंचायती राज संस्थानों और शहरी स्थानीय निकायों द्वारा एक प्रस्तुति दी गई, जिसमें स्थानीय शासन में उनकी असाधारण उपलब्धियों को दर्शाया गया। उत्तर प्रदेश की प्रतिनिधि सुश्री प्रियंका तिवारी, सरपंच, ग्राम पंचायत: राजपुर, जिला - हाथरस, पंजाब के प्रतिनिधि श्री पंतदीप सिंह, सरपंच, ग्राम पंचायत: चीना, जिला - गुरदासपुर, गुजरात के प्रतिनिधि श्री राजपूत सांकेत, सरपंच, ग्राम पंचायत: भीमसर, जिला - कच्छ तथा महाराष्ट्र के प्रतिनिधि श्री सुधीर ए. गोटमरे, सरपंच, ग्राम पंचायत: खुरसापुर, जिला - नागपुर द्वारा अपने-अपने ग्राम पंचायतों

की उपलब्धियों पर प्रस्तुति दी गई जबकि श्री डी.पी. देसाई, नगर आयुक्त, नगर निगम, राजकोट, गुजरात तथा सुश्री हेमलता पटेल उपायुक्त (वित्त), नगर निगम, सागर, मध्य प्रदेश ने अपने नगरपालिका में किए गए असाधारण कार्यों पर प्रस्तुति दी।

अंत में **"स्थानीय सरकारों के 30 वर्ष: उपलब्धियां एवं आगे की रणनीति"** पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की अध्यक्षता में एक पैनल चर्चा हुई। इस चर्चा में पंचायती राज मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव श्री विवेक भारद्वाज, श्री एस.एम. विजयानंद तथा श्री आर.एल. बिश्नोई, लेखापरीक्षा सलाहकार बोर्ड के सदस्य जैसे विशिष्ट पैनलिस्ट शामिल थे। चर्चा का संचालन श्री सुबीर मलिक, उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (स्थानीय सरकार लेखापरीक्षा) द्वारा किया गया। सत्र का समापन प्रश्नोत्तर खंड और अपर-उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (स्थानीय सरकार लेखापरीक्षा) सुश्री यशोधरा राय चौधरी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय स्थानीय शासन लेखापरीक्षा केंद्र, राजकोट, गुजरात के उद्घाटन पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक एवं अन्य विशिष्ट अधिकारीगण – फोटो

सोशल मीडिया पर अनावश्यक टिप्पणियाँ

मुनीष भाटिया
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
प्रत्यक्ष कर अनुभाग
कार्यालय प्रधान निदेशक,
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चंडीगढ़

वर्तमान समय के प्रतिस्पर्धात्मक और अनिश्चितता से भरा होने के कारण समाज में एक ऐसा माहौल बन रहा है जो लोगों के लिए तनावपूर्ण और अस्थिरता की स्थिति महसूस करवा रहा है एवं उन्हें अवसाद और असंतोष की ओर खींच रहा है। इस माहौल में, लोग अपनी सामाजिक स्थिति, वित्तीय स्थिति, करियर और अन्य क्षेत्रों में अन्य लोगों द्वारा की गई प्रतिक्रियाओं के माध्यम से स्वयं का मूल्यांकन करते हैं।

यह अवसाद का ही परिणाम है कि आजकल किसी की भी सोशल मीडिया पोस्ट पर अहंकारी टिप्पणी के माध्यम से नफरत के भाव देखने को मिल रहे हैं। बेशक लोकतंत्र में सबको अपनी बात कहने का हक होता है किन्तु राजनीति और धर्म के चक्रव्यूह में फंसकर किसी की भी पोस्ट पर अहंकारी और भद्दे कमेंट ये सोचने को मजबूर करते हैं कि हम किस तरह के सभ्य समाज का हिस्सा खुद को समझते हैं। सोशल मीडिया की पोस्ट पर कमेंट करने की आदत के फलस्वरूप नफरत और असहमति के भाव को बढ़ावा मिल रहा है, और यह एक चिंताजनक विकृति है जो समाज को नुकसान पहुंचा रही है। लोग अक्सर अनदेखा करते हैं कि उनके व्यवहार का दूसरों के मन पर क्या प्रभाव हो सकता है। अपनी अहंकारी टिप्पणियों को सार्वजनिक रूप से साझा करने के बारे में आज हम तनिक भी विचार नहीं करते। नफरत से भरे कमेंट्स से न केवल उनकी खुद की छवि पर असर पड़ता है, बल्कि समाज में भी नकारात्मकता को बढ़ावा मिलता है।

सोशल मीडिया पर सभ्य और समझदार रहना महत्त्वपूर्ण है और यह मंच निश्चित ही हमें विभिन्न विचारों और धाराओं के साथ समझौते करने, सहमति में जीवन बिताने का अवसर प्रदान करता है। लेकिन यदि हम अपनी नफरत से भरी टिप्पणियों को साझा करते हैं, तो इससे न केवल हमारे खुद के विचारों को नकारात्मक रूप से प्रदर्शित किया जाता है, बल्कि यह अन्य लोगों को भी प्रभावित कर सकता है और सामाजिक सहयोग और समर्थन को कम कर सकता है।

एक सभ्य समाज में, हमें सोशल मीडिया मंच पर साहसिक, सहज और समझदार रूप से व्यवहार करने की जरूरत है। हमें अपने विचारों को सार्वजनिक रूप से साझा करते समय और दूसरों के विचारों का सम्मान करते समय सावधानी बरतनी चाहिए। इसके अलावा, हमें सामाजिक मीडिया पर प्रेरणा और संवाद को प्रोत्साहित करने का प्रयास करना चाहिए, जो समाज के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। अहंकार से भरे कमेंट्स करने से पहले, हमें सोचना चाहिए कि हमारे शब्द किस प्रकार का प्रभाव डाल सकते हैं और क्या हम अपने सम्बंधित विषयों पर सजगता और समझ के साथ चर्चा कर रहे हैं। हमें सोशल मीडिया पर सही और मूल्यवान विचारों का समर्थन करना चाहिए, जो समाज में समृद्धि और सहयोग को बढ़ावा देते हैं। इसके अलावा, हमें अच्छे उदाहरण स्थापित करने के लिए सक्षम होना चाहिए, ताकि अन्य लोग हमारा अनुकरण कर सकें और समाज को प्रेरित कर सकें।

अहंकार, चाहे वह राजनीति के क्षेत्र में हो या सामाजिक परिवेश में, व्यक्ति और समाज के लिए हानिकारक हो सकता है। यह एक अहम संघर्ष प्रतिरोध है, जो समाज में विभाजन, असहमति, और विश्वासघात उत्पन्न कर सकता है। व्यक्तिगत या सामाजिक स्तर पर, अहंकार अन्य लोगों के साथ सहयोग और संबंधों को प्रभावित कर सकता है। अतः मीडिया पोस्ट पर बेवजह टिप्पणी से उपजे विवाद का समाधान करने के लिए, लोगों को अपने अहंकार को जानने, समझने, और नियंत्रित करने की आवश्यकता होती है।

अहंकार, अकड़पन, और अति आत्मविश्वास जैसे गुणों का होना वास्तव में लोगों के जीवन को खोखला बना सकता है। अहंकार और अकड़पन से भरा हुआ व्यक्ति अक्सर अन्य लोगों को नुकसान पहुंचाने की प्रवृत्ति बना लेता है, जो समाज में सामंजस्य और खुशहाली को प्रभावित कर सकता है। लेकिन, यह भी सत्य है कि कई बार लोग बेवजह टिप्पणी करने में चूर रहते हैं। इसलिए, यह महत्त्वपूर्ण है कि हम समाज में सच्चाई को पहचानें और सच्चाई के पक्ष में खड़े हों। अहंकारी वचनों से परहेज करना हमेशा महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि ऐसे वचन अक्सर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं और सम्बन्धों को बिगाड़ सकते हैं। हमारा स्वभाव हमारी छवि को प्रभावित करता है और इसका महत्त्व है जब हम अपने आसपास के लोगों के साथ संवाद करते हैं। एक प्रभावशाली, सकारात्मक स्वभाव लोगों को हमारे प्रति आकर्षित कर सकता है और हमारी विजय की दिशा में मदद कर सकता है। जब हम दूसरों के सामने सकारात्मक, समझदार और सहानुभूति पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित होते हैं, तो हम उनके साथ संबंध और समझ बढ़ा सकते हैं। यह हमें उनके साथ सहयोग, सार्थकता और समर्थन की संभावना प्रदान कर सकता है।

लेकिन यह भी महत्त्वपूर्ण है कि हम अपने स्वभाव को और उन गुणों को विकसित करें जो हमें अधिक सफल बनाने में मदद कर सकते हैं। यदि हम अपने स्वभाव को सकारात्मक और रचनात्मक रूप में बदलने के लिए प्रयासरत रहें, तो हम अपने आसपास के लोगों के साथ संबंध और समझ में सुधार कर सकते हैं। आचार और व्यवहार जब अहंकार से मुक्त होते हैं, तब वे वास्तव में हमारी सज्जनता और समाज में अपनत्व की भावना को प्रकट करते हैं। यदि हम दयालु, सहानुभूतिपूर्ण, और सहयोगी व्यक्तित्व के साथ अपने आसपास के लोगों के साथ व्यवहार करते हैं, तो हम उनके मन में स्थायित्व और आत्मविश्वास को बढ़ावा देते हैं। अहंकार मुक्त आचार और व्यवहार वास्तव में हमारे संचार का माध्यम बनते हैं, जो हमें समाज में प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त करने में मदद करते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में जनजातीय शिक्षा

योगेश कुमार मिश्र
हिन्दी अधिकारी
प्रधान महालेखाकार का
कार्यालय आसाम, गुवाहाटी

शिक्षा मनुष्य की बुनियादी आवश्यकताओं में से एक है, एक सफल राष्ट्र की आधारशिला उसके सभ्य, सुशिक्षित, सुसंस्कृत नागरिक ही हो सकते हैं। ऐसे में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का आधार ऐसा होना चाहिए जिस से शिक्षा की पहुँच उन आम जनों तक हो जहाँ शिक्षा का प्रकाश अभी तक नहीं फैला है। जनजातीय शिक्षा में आज देश बहुत पीछे है, निर्धनता और अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता का न होना जनजातीय शिक्षा की मूल समस्या है। जिस प्रकार से देह के किसी भी विशेष अंग का अगर विकास न हो तो व्यक्ति दिव्यांग की श्रेणी में आ जाता है उसी तरह से समाज का कोई हिस्सा अगर पीछे या हाशिये पर रह जाता है तब सम्पूर्ण समाज को विकास की ग्रेडिंग पर अच्छे अंक तो नहीं ही दिए जा सकते।

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020), जिसे 29 जुलाई 2020 को भारत के केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा शुरू किया गया था, भारत की नई शिक्षा प्रणाली के दृष्टिकोण को रेखांकित करती है। नई नीति पिछली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का स्थान लेती है। यह नीति ग्रामीण और शहरी दोनों में प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण तक के लिए एक व्यापक रूपरेखा है। इस नीति का लक्ष्य 2030 तक भारत की शिक्षा प्रणाली को बदलना है। नीति जारी होने के तुरंत बाद, सरकार ने स्पष्ट किया कि किसी को भी किसी विशेष भाषा का अध्ययन करने के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा और शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी से किसी क्षेत्रीय भाषा में स्थानांतरित नहीं किया जाएगा। एनईपी में भाषा नीति प्रकृति में एक व्यापक दिशानिर्देश और सलाह है, और कार्यान्वयन पर निर्णय लेना राज्यों, संस्थानों और स्कूलों पर निर्भर है। भारत में शिक्षा एक समवर्ती सूची का विषय है।

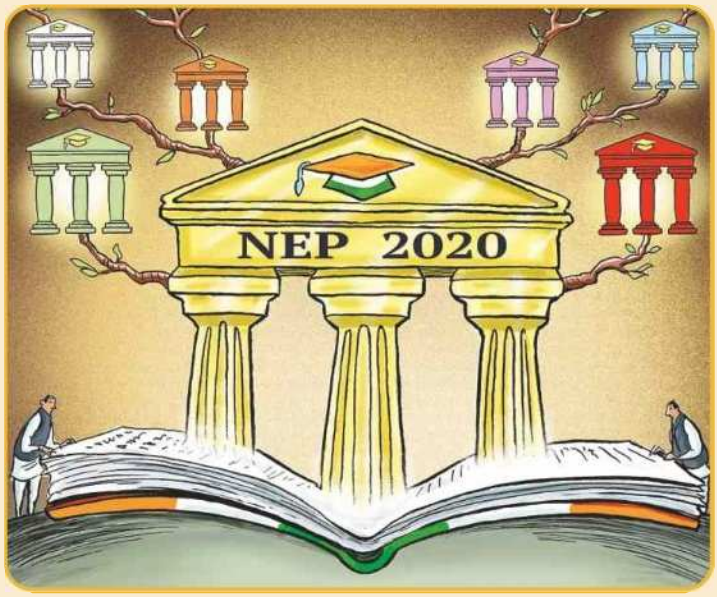

1 अगस्त 2022 को, प्रेस सूचना ब्यूरो ने सूचित किया कि "शिक्षा के लिए एकीकृत जिला सूचना प्रणाली प्लस" (UDISE+) 2020-21 के अनुसार, ग्रेड (1-5) में शिक्षण और सीखने में 28 से अधिक भाषाओं का उपयोग किया जाना है। भाषाएँ असमिया, बंगाली, गुजराती, हिंदी, कन्नड़,

कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, अंग्रेजी, बोडो, खासी, गारो, मिज़ो, फ्रेंच, हमार, कार्बी, संथाली, भोडी और पुर्गी हैं। नई शिक्षा नीति सामान्य फार्मूले (5+3+3+4) पर आधारित है। यह छात्र पर आधारित है और अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने के लिए सरकारी नौकरियों पर निर्भर नहीं है। आठवीं कक्षा के बाद छात्र का बड़ा बदलाव एक विदेशी भाषा सीखना और अलग स्ट्रीम चुनना है।

पहुंच, समानता, गुणवत्ता, सामर्थ्य और जवाबदेही के पांच मार्गदर्शक स्तंभों पर एनईपी 2020 आधारित है। यह हमारे युवाओं को वर्तमान और भविष्य की विविध राष्ट्रीय और वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करेगा। शिक्षा जनजातीय विकास की कुंजी है। आदिवासी बच्चों में इसका स्तर बहुत कम होता है। यद्यपि भारत में जनजातियों का विकास हो रहा है, परन्तु जिस गति से विकास हो रहा है यह विकास अपेक्षाकृत धीमा रहा है। आदिवासी बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं को मुख्य रूप से आवासीय विद्यालयों के माध्यम से संबोधित किया जाता है जिन्हें आश्रम विद्यालय कहा जाता है। देश भर में 892 केंद्र-स्वीकृत आश्रम विद्यालय फैले हुए हैं। ये आदिवासी क्षेत्रों में बच्चों को उनकी माध्यमिक शिक्षा पूरी होने तक भोजन और आवास की सुविधाएं प्रदान करते हैं।

एनईपी 2020 का लक्ष्य शिक्षा तक पहुंच सहित स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा के सभी स्तरों पर समावेशी और समान गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करना है। चूंकि शिक्षा एक समवर्ती विषय है, इसलिए राज्य/केंद्र शासित प्रदेश सरकारें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके अलावा, इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी बच्चा जन्म या पृष्ठभूमि की परिस्थितियों के कारण सीखने और उत्कृष्टता हासिल करने का कोई अवसर न खोए। इसमें सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों (एसईडीजी) पर विशेष जोर देने का प्रस्ताव है। एनईपी 2020 इस बात की पुष्टि करता है कि स्कूल और उच्च शिक्षा दोनों में पहुंच, भागीदारी और सीखने के परिणामों में सामाजिक श्रेणी के अंतर को पाटना सभी शिक्षा क्षेत्र के विकास कार्यक्रमों के प्रमुख लक्ष्यों में से एक बना रहेगा।

स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग (DOSEL), शिक्षा मंत्रालय 2018-19 से प्रभावी, समग्र शिक्षा योजना लागू कर रहा है। स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर लिंग और सामाजिक श्रेणी के अंतर को पाटना योजना के प्रमुख उद्देश्यों में से एक है। यह योजना बालिकाओं और एससी, एसटी, अल्पसंख्यक समुदायों और ट्रांसजेंडर से संबंधित बच्चों तक पहुंचती है। यह योजना नामांकन, प्रतिधारण और लिंग समानता के विभिन्न संकेतकों के साथ-साथ एससी, एसटी और अल्पसंख्यक समुदायों की एकाग्रता पर प्रतिकूल प्रदर्शन के आधार पर पहचाने गए विशेष फोकस जिलों (एसएफडी) पर भी ध्यान केंद्रित करती है। समग्र शिक्षा के प्रमुख हस्तक्षेपों में आरटीई अधिकार शामिल हैं जिसके तहत सरकारी स्कूलों में आठवीं कक्षा तक की सभी लड़कियों और एससी/एसटी/बीपीएल परिवारों के बच्चों के लिए दो सेट वर्दी प्रदान की जाती है और सभी बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तकों का भी प्रावधान किया गया है। समग्र शिक्षा के तहत कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों (केजीबीवी) का प्रावधान है। केजीबीवी में एससी, एसटी, ओबीसी, अल्पसंख्यक और गरीबी रेखा से नीचे (बीपीएल) जैसे वंचित समूहों की लड़कियों के लिए कक्षा छः से बारह तक के आवासीय विद्यालय हैं।

समग्र शिक्षा के तहत नेताजी सुभाष चंद्र बोस (एनएससीबी) आवासीय विद्यालय और छात्रावास कम आबादी वाले, या कठिन भौगोलिक इलाके और सीमावर्ती क्षेत्रों वाले पहाड़ी और घने जंगलों वाले इलाकों में बच्चों तक पहुंचने में

सहायता करते हैं जहां एक नया प्राथमिक या उच्च प्राथमिक विद्यालय और माध्यमिक खोला जाता है। शैक्षिक रूप से पिछड़े ब्लॉक (ईबीबी), वामपंथी उग्रवाद, विशेष फोकस जिले (एसएफडी) और 115 आकांक्षी जिलों को प्राथमिकता दी जाती है।

सभी केन्द्रीय विद्यालयों में सभी नए प्रवेशों में अनुसूचित जाति के लिए 15% सीटें और अनुसूचित जनजाति के लिए 7.5% सीटें आरक्षित हैं। जो एससी/एसटी छात्र आरटीई कोटा के तहत प्रवेश लेते हैं, उन्हें शुल्क के भुगतान से छूट दी जाती है और उन्हें मुफ्त किताबें, गणवेश, लेखन सामग्री और परिवहन भी प्रदान किया जाता है। साथ ही, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के बच्चों के पक्ष में जवाहर नवोदय विद्यालय में सीटों के आरक्षण का प्रावधान है।

केंद्रीय क्षेत्र की योजना 'राष्ट्रीय साधन-सह-योग्यता छात्रवृत्ति योजना' का उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के मेधावी छात्रों को आठवीं कक्षा में पढ़ाई छोड़ने से रोकने और उन्हें माध्यमिक स्तर पर अध्ययन जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करना है। केंद्रीय क्षेत्र की योजना 'राष्ट्रीय साधन-सह-योग्यता छात्रवृत्ति योजना' का उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के मेधावी छात्रों को आठवीं कक्षा में पढ़ाई छोड़ने से रोकने और उन्हें माध्यमिक स्तर पर अध्ययन जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करना है।

उच्च शिक्षा विभाग उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए तीन योजनाएं लागू कर रहा है; कॉलेज और विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए छात्रवृत्ति की केंद्रीय क्षेत्र योजना (सीएसएसएस), जम्मू-कश्मीर के लिए विशेष छात्रवृत्ति योजना (जम्मू- कश्मीर के लिए एसएसएस); और केंद्रीय क्षेत्र ब्याज सब्सिडी योजना (सीएसआईएस)। इसके अलावा, यूजीसी गुजरात के आदिवासियों सहित देश भर के आदिवासियों के लाभ के लिए पीजी छात्रवृत्ति, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए पीजी छात्रवृत्ति और एसटी उम्मीदवारों के लिए पोस्ट- डॉक्टरल फैलोशिप भी प्रदान करता है।

एनईपी 2020 में कहा गया है कि जबकि आदिवासी समुदायों के बच्चों के उत्थान के लिए कई कार्यक्रम संबंधी हस्तक्षेप वर्तमान में मौजूद हैं, यह सुनिश्चित करने के लिए विशेष तंत्र बनाए जाने की आवश्यकता है कि आदिवासी समुदायों के बच्चों को इन हस्तक्षेपों का लाभ मिले। इसके अलावा, रक्षा मंत्रालय के तत्वावधान में, राज्य सरकारें आदिवासी बहुल क्षेत्रों सहित अपने माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में एनसीसी विंग खोलने को प्रोत्साहित कर सकती हैं।

निष्कर्ष: शिक्षा का प्रचार और प्रसार व्यापक रूप से हो इसके लिए नियत और नीति दोनों की आवश्यकता है। सरकार से ले कर स्वयंसेवक संस्था और समाजसेवियों का यह दायित्व है कि वे समाज के हाशिये पर रह रहे लोगों की शिक्षा तथा जनजागरूकता पर ध्यान दें। किसी भी राष्ट्र के भविष्य और धरोहर के रूप में उनकी आने वाली पीढ़ी को ही सर्वोच्च स्थान दिया जाता है। इस प्रसंग में शिक्षाविदों और दार्शनिकों का एक ही मत है कि समाज शिक्षित हो और यही सशक्त होने का बहुत महत्त्वपूर्ण साधन है इसी कारण से हमें इसकी ओर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. शिक्षा और आदिवासी समाज, लेखिका -वंदना ठाकुर
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रस्तावना
3. आदिवासी शिक्षा - लेखक विनय कुमार शर्मा
4. दैनिक जागरण : शिक्षा अंक

विषयः वैश्वीकरण के दौर में राष्ट्रीय भाषाओं की भूमिका

संदीप कुमार पाठक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर 273 012

मनुष्य जिस भाषा में सबसे पहले बोलना सीखता है अपने विचारों को व्यक्त करना सीखता है वह उसकी मातृभाषा होती है यानी वह भाषा जो वह अपनी मां की गोद में सीखता है। वह भाषा जो मां अपने शिशु को वात्सल्य के दौरान अपनी भावनाओं के द्वारा व्यक्त करती है। मातृभाषा वह भाषा है जिस भाषा में शिशु को उसकी दादी लोरी गाकर सुनाती हैं।

मातृभाषा वह भाषा है, जो मनुष्य के बाल्यावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक उसके मित्र समूहों के द्वारा उसके द्वारा बोली जाती है जो उसके जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। भारतीय संविधान में केवल 22 भाषाओं का ही जिक्र है और केवल 6 भाषाओं को ही शासकीय भाषा का दर्जा प्राप्त है। जिसमें तमिल, संस्कृत, कन्नड, तेलुगु, मलयालम और ओडिया शामिल है। हमारे देश भारत की विविधता के कारण ही किसी भी भाषा को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त नहीं हो सका है। उसके बावजूद हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि क्षेत्रीय भाषाओं को निम्न दर्जा प्राप्त है। क्षेत्रीय भाषाओं को भी हिंदी के बराबर ही दर्जा प्राप्त है।

भारत न केवल भौगोलिक और सांस्कृतिक रूप से विविधता पूर्ण है और विविधताओं को अपने अंदर समेटे हुए है बल्कि भाषाई आधार पर भी काफी समृद्ध है। अगर बात कीजिए तो वर्ष 1961 में जनगणना के अनुसार भारत में लगभग सोलह सौ से अधिक भाषाएं हैं। इसी कारण से एक कहावत बहुत प्रचलित है "कोस कोस पर बदले पानी चार कोस पर बानी"।

भारत ऐसी समृद्धि वाला देश है जहां हर 4 कोस पर भाषा बदल जाती है लेकिन उस भाषा का सार नहीं बदलता, भाषा को बोलने वाले का भाव नहीं बदलता है। भाव वही रहता है जो उसकी भारतीयता है। वैश्वीकरण के इस युग में कभी-कभी ऐसा लगता है कि मनुष्य का पहनावा, खानपान, सोचने-समझने की प्रवृत्ति, साहित्य और सिनेमा के प्रति लगाव, भाषाई आधार पर बदलता है। इस समस्या से क्षेत्रीय भाषाओं के साथ-साथ हिंदी भाषा भी जूझ रही है।

सिनेमा, साहित्य, पहनावे-ओढ़ावे और खानपान के माध्यम

से पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण आज के आधुनिक युग में किया जा रहा है। जिसके कारण क्षेत्रीय और भारतीय भाषाओं का नाश हो रहा है। वैश्वीकरण के युग में अंग्रेजी अथवा अन्य अंतर्राष्ट्रीय भाषाएं विश्व पटल पर अपनी छाप छोड़ने से पीछे नहीं है जो क्षेत्रीय भाषाओं के ह्रास का एक और कारण है।

वैश्वीकरण के आधुनिक युग में मातृभाषा के लिए या कहें कि भारत की राष्ट्रीय भाषाओं के लिए चुनौतियां खड़ी हो गयी है। इसमें यह कहना गलत नहीं होगा कि मशीन की भाषा या कहें उद्योग की भाषा जिसमें रोजगार पाना आसान है को अत्यधिक स्तर पर प्रोत्साहित किया जा रहा है।

आज के प्रौद्योगिकी युग में जहां ऑनलाइन माध्यम में अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं का बोलबाला है। शोध के कार्यों में, अनुसंधान के कार्यों में, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के कार्यों में, अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं को तवज्जो दी जाती है, जो मशीन और तकनीक के लिए उपयुक्त है।

नौकरी की भाषा भी मातृभाषा से हटकर अंग्रेजी हो चुकी है जिसे अंग्रेजी का ज्ञान है वह अपनी नौकरी पक्की कर सकता है। आज के आधुनिक युग में रोजगार पाने की होड़ में लोग अंग्रेजी को अधिक महत्त्व देते हैं। इस कारण वे अपनी मातृभाषा को विकसित करने में आगे बढ़ाने में पीछे रह जाते हैं। वर्तमान समय में मातृभाषा को कौशल की भाषा बनाना, नौकरी की भाषा बना पाना संभव नहीं दिखता इसी कारण से लोग अंग्रेजी की ओर आकर्षित होते हैं।

वैश्वीकरण के युग में भौतिकवाद, व्यक्तिवाद, सामाजिक मूल्यों में बदलाव और पारंपरिक बसावट में कमी के साथ-साथ पूंजीवादी परंपरा का विकास हुआ है और रोजगार की होड में मातृभाषाओं का पतन हुआ है।

अगर बात करें मौलिक चिंतन और रचनात्मक लेखन की तो अधिकांश मौलिक चिंतन और रचनात्मक लेखन मातृभाषा में ही संभव है। व्यक्ति अपनी मातृभाषा में आधुनिकता के साथ-साथ कल्पनाओं की विचारशील प्रगति को आगे बढ़ा सकता है। विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य और सिनेमा को आगे बढ़ाने में भी मातृभाषा का ही योगदान है। व्यक्ति अपनी मातृभाषा में कल्पना से परे जा सकता है और उन कल्पनाओं को भाषा के माध्यम चरितार्थ कर सकता है। इसी कारण से मातृभाषा को लोक भाषा भी कहा जाता है। क्योंकि मातृभाषा ही है जिसके माध्यम से आप जन-जन से जुड़ सकते हैं और अपने विचारों को जन- जन तक पहुंचा सकते हैं। यही कारण है कि मातृभाषा को लोक भाषा कहा जाता है।

मातृभाषा वह विकल्प है जिसका कोई विकल्प नहीं है। मातृभाषा में संवाद स्थापित करना अत्यधिक आसान है और उसके साथ-साथ संप्रेषण भी प्रभावपूर्ण होता है जिसे हम बचपन से सीखते हैं।

नेल्सन मंडेला कहते हैं कि "यदि आप किसी से ऐसी भाषा में बात करें, जो वह समझ सकता है तो वह उसके मस्तिष्क में जाती है। लेकिन यदि आप उसकी अपनी भाषा में बात करते हैं, तो वह सीधे उसके हृदय को छूती है।"

यही कारण है कि आजकल मातृभाषा यानी स्थानीय भाषा में पढ़ाई लिखाई पर ध्यान दिया जा रहा है। बच्चे जिस भाषा में बचपन को जीते हैं, जिस भाषा में अपने परिवार में विचारों का आदान प्रदान करते हैं, उसी भाषा में पढ़ाई को अधिक रूप से सीख सकते हैं और अपनी मातृभाषा में ही आगे बढ़ सकते हैं। बच्चे अपनी मातृभाषा में पढ़ाई-लिखाई को सोच, समझकर बहुत ही आसानी से सीखने का प्रयास करते हैं। जबकि अपनी मातृभाषा के विपरीत अन्य भाषाओं में सीखना बच्चों के लिए अत्यधिक मुश्किल हो जाता है।

भाषा एक बांध के समान है जिसमें भावना, जानकारी और

ज्ञान को मस्तिष्क के माध्यम से दूसरे मस्तिष्क में पहुंचाने का कार्य किया जाता है यानी आदान-प्रदान का माध्यम भाषा है। जिस प्रकार बांध दो रास्तों को जोड़ने का कार्य करती है ठीक उसी प्रकार भाषा भी दो जन-मानस को मिलाने का कार्य करती है। उनकी भावनाओं को जनसंपर्क की भावना बनाने का कार्य करती है। यदि बांध मजबूत ना हो तो वह टूट जाता है ठीक उसी प्रकार यदि भाषा का प्रवाह मजबूत ना हो तो वह भी टूट जाता है और विच्छेद का कारण बनता है। इसी कारण से भाषाओं की मजबूती राष्ट्र की मजबूती और राष्ट्रीय एकता को दिखाती है। व्यक्ति केवल अपनी भाषा यानी मातृभाषा में ही विचारों के आदान-प्रदान को सही तरीके से धारा प्रवाह व्यक्त कर पाता है।

भारत जैसे विशालकाय उपभोक्तावादी देश में मातृभाषा को संसाधन के रूप में देखा जा रहा है। जहां इंटरनेट की आधुनिक दुनिया से लेकर साहित्य मनोरंजन और अन्य क्षेत्रों की दुनिया तक मातृभाषा यानी लोक भाषा में विभिन्न प्रकार के आधुनिक कार्यक्रमों को तैयार किया जा सकता है। कुछ नया कहने लिखने और देखने की प्रवृत्ति भाषा के माध्यम से ही जन-जन तक पहुंचाई जा सकती है और प्रभावशाली रूप से उपयोग में लाई जा सकती है।

क्षेत्रीय भाषाओं के विकास में रोजगार के अवसर भी बढ़ सकते हैं और मातृभाषाओं का उत्थान भी संभव है। आज के आधुनिक युग में हिंदी सिनेमा के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं के सिनेमा का भी बहुत दबदबा है। अनेकों समाचार चैनल, क्षेत्रीय भाषाओं में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हैं। सम्प्रेषण की भाषा भी क्षेत्रीय भाषा में अत्यधिक रूप से विकसित हो रही है। साथ ही साथ, जुड़ाव और लगाव का भाव भी मातृभाषा में ही महसूस किया जा सकता है यही कारण है कि आज के आधुनिक युग में मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं में रोजगार की अपार संभावनाएं विद्यमान है।

आज के आधुनिक युग में मातृभाषा को प्रासंगिक बनाए रखने के लिए उसमें शोध कार्य को बढ़ावा देना होगा। वैश्वीकरण के युग में मातृभाषा के विकास हेतु अवसर की अपार संभावनाएं मौजूद हैं। जैसे विज्ञान, कला, शोध, पत्रकारिता, शिक्षा और मनोरंजन के क्षेत्र में अपार संभावनाएं देखी जा सकती हैं। जिसके माध्यम से मातृभाषा को वैश्वीकरण के युग में विकसित किया जा सकता है।

ध्यान देने की बात तो यह है कि वैश्वीकरण के युग में अंतर्राष्ट्रीय भाषाएं, मातृभाषा एवं क्षेत्रीय भाषाओं को निगल ना जाएँ। हमें हर एक स्तर पर मातृभाषा को विलुप्त होने से बचाने के लिए कदम उठाने चाहिए। अगर एक भी भाषा विलुप्त होगी तो उससे जुड़े हुए अनेकों बहुमूल्य धरोहरों का विलुप्त होना भी अनिवार्य है। मानव सभ्यता में विभिन्न प्रकार की विविधताएँ दुनिया भर में देखी जा सकती हैं। ठीक इसी प्रकार से मातृभाषाओं में भी

बहुविध रूप सांस्कृतिक विविधताएँ देखी जा सकती हैं। इन सांस्कृतिक विविधताओं को गायब होने से बचाने के लिए हमें मातृभाषाओं को बचाना होगा।

महात्मा गांधी कहते हैं कि "राष्ट्र के जो बालक अपनी मातृभाषा में नहीं बल्कि किसी अन्य भाषा में शिक्षा पाते हैं, वे आत्महत्या करते हैं। इससे उनका जन्मसिद्ध अधिकार छिन जाता है।"

तकनीकी शिक्षा को मातृभाषा में प्रदान करने की व्यवस्था करनी चाहिए और शिक्षा को समावेशी बनाने का प्रयास करना चाहिए। जिससे मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करके उदाहरण साबित किया जा सके जैसे जापान फ्रांस और जर्मनी जैसे विकसित राज्यों ने उदाहरण साबित कर रखा है।

संसार में लगभग 3000 से अधिक भाषाएं मौजूद हैं जिनमें से कुछ भाषाएं तेजी से लुप्त होती दिख रही हैं। क्योंकि उनका प्रयोग जनजातियों द्वारा किया जा रहा है। वे जनजातियां लुप्त हो रही है इसी कारण से वे भाषाएं भी विलुप्त होती नजर आ रही हैं। भाषा, वैचारिक आदान-प्रदान का माध्यम होने के साथ-साथ संस्कृति के आदान-प्रदान का माध्यम भी होती हैं। किसी भी समाज की पहचान उस समाज की भाषा से होती है।

महात्मा गांधी ने आजादी से पहले ही स्वदेशी का नारा देते हुए भाँप लिया था कि अंग्रेजी, हिंदुस्तानियों को सम्मोहित कर लेगी और भारतीय लोगों को उनकी पहचान से अलग कर देगी। अंग्रेजी के भूत का खतरा केवल हिंदी के लिए ही नही अपितु भारतीय भाषाओं पर भी लटक रहा है। जहां सभी अपनी पहचान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करना चाहते है बेशक उन्हें, उसके लिए अपनी पहचान ही क्यों न गंवानी पड़े। यहाँ बात भारतीय भाषाओं के पहचान को कायम रखने की है।

ठीक यही बात देश की अर्थव्यवस्था में भी दिखाई देती है जहां स्थानीय अवसरों और विशेषताओं की अनदेखी कर भूमंडलीकरण की ओर देश को ले जाया जा रहा है। यहाँ भारतीय भाषाओं और देश की अर्थव्यवस्था दोनों के बीच एक समन्वय स्थापित कर हमें आत्मनिर्भर बनने की राह तैयार करनी होगी।

दुनिया आज इतनी बदल गयी है मानो भारत जैसे देश जिनमें इतनी विविधताएँ है आज कई स्तरों पर बदलाव आ गया है। *भूमंडलीकरण के कारण लोगों के सांस्कृतिक, भाषाई और देशज सोच में बदलाव आए हैं। लोग देशी नहीं विदेशी कहलवाने में अधिक गर्व महसूस करते हैं।* भारतीय समाज में इस बदलाव का असर कहीं अधिक देखा जा सकता है। जिससे लोगों में मूल्यों से अधिक सुख-सुविधाओं के प्रति कहीं ज्यादा मोह है। सांस्कृतिक और भाषाई चेतना धीरे-धीरे बदलती या गायब दिखाई पड़ती है। ऐसे में उसे लेकर संकट महसूस होना सामान्य है।

गांधी कहते हैं- आप और हम चाहते हैं कि करोड़ों भारतीय आपस में अंतर्प्रान्तीय संपर्क कायम करें। स्पष्ट है कि अंग्रेजी के द्वारा दस पीढ़ियाँ गुजर जाने के बाद भी हम संपर्क स्थापित न कर सकेंगे।"

भारत को अपने आर्थिक संकटों में 1991 में बाहरी दुनिया से हाथ मिलाने पर मजबूर होना पड़ा था। आज भारत 'आत्म-निर्भर' बनने को तैयार अपनी सरजमीं को ताक रहा है। जब सारा संसार कोरोना से जूझ रहा था वहीं दूसरी ओर हमारे प्रधानमंत्री ने आत्मनिर्भर भारत का सकल्प सभी देशवासियों को कराया और दुनिया को याद दिलाया कि भारत चाहे तो क्षेत्रीय स्तरों पर होने वाले विनिर्माण और भाषायी बहुलता के ज्ञान का आदान-प्रदान कर अपनी जरूरतों को पूरा कर सकता है।

श्री शंकराचार्य महासंस्थानम् दक्षिणाम्नाय श्री शारदापीठम् श्रृंगेरी

एक यात्रा संस्मरण

अनुराधा सूद
व०ले०प०अ० (हिंदी कक्ष)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला

'सनातन' का अर्थ है - शाश्वत अथवा 'सदा बना रहने वाला', अर्थात् जिसका न आदि है न अन्त। सनातन हिंदू धर्म के प्रचार-प्रसार तथा भारतीय वैदिक संस्कृति के विकास एवं संरक्षण में जगद्गुरू आदि शंकराचार्य का विशेष योगदान है। उनके उपदेश आत्मा और परमात्मा की एकरूपता पर आधारित हैं जिसके अनुसार परमात्मा एक ही समय में सगुण और निर्गुण दोनों ही स्वरूपों में रह सकता है। सनातन हिंदू धर्म में जीवन को चार भागों (आश्रम) में बाँटा गया है- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास। शास्त्रों में संन्यास को जीवन की सर्वोच्च अवस्था कहा गया है। इसका उद्देश्य सांसारिक बन्धनों से मुक्त होकर निष्काम भाव से प्रभु का निरन्तर स्मरण करते रह कर मोक्ष की प्राप्ति से है। संन्यास का व्रत धारण करने वाला व्यक्ति संन्यासी कहलाता है। संन्यासी इस संसार में ब्रह्मचिन्तन में लीन रहते हुए भौतिक आवश्यकताओं के प्रति उदासीन रहते हैं तथा अपना अध्यात्मिक विकास कर मोक्ष को प्राप्त करते है। महान दार्शनिक और धर्म-प्रवर्तक आदि शंकराचार्य ने सनातन हिंदू धर्म की व्यवस्था के लिए आठवीं शताब्दी में भारत के चारों कोनों में चार मठों की स्थापना की।

मठ का अर्थ ऐसे संस्थान से है जहां मठ के धर्म-गुरु अपने शिष्यों को आध्यात्मिक शिक्षा का ज्ञान तथा सामाजिक सेवा से सम्बन्धित कार्य करने का उपदेश देते हैं। हमारी भारतीय परंपरा में

गुरु को बहुत ऊंचा स्थान दिया गया है। ऐसा माना जाता है कि गुरु की कृपा के बिना कोई भी जीवन के उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर सकता। आदि शंकराचार्य जी ने इन मठों की स्थापना के साथ-साथ उनके मठाधीशों की भी नियुक्ति की। चार धार्मिक मठों में भारत की दक्षिण दिशा में कर्नाटक राज्य के श्रृंगेरी नगर में श्रृंगेरी शारदापीठ, पूर्व दिशा में ओडिशा राज्य के पुरी नगर में गोवर्द्धन पीठ, पश्चिम दिशा में गुजरात के द्वारिका में शारदा मठ तथा उत्तर दिशा के उत्तराखंड राज्य के बद्रीधाम में ज्योतिर्मठ भारत की एकात्मकता को दिग्दर्शित करता है। इन मठों के अंतर्गत दीक्षा लेने वाले संन्यासियों के नाम के बाद सम्बन्धित मठ-सम्प्रदाय के नाम विशेषण को लगाया जाता है जिससे उन्हें उस संप्रदाय का संन्यासी माना जाता है जैसेकि श्रृंगेरी शारदापीठ में दीक्षा लेने वाले संन्यासियों के नाम के बाद सरस्वती, तीर्थ, अरण्य, भारती सम्प्रदाय नाम विशेषण लगाया जाता है।

आदि शंकराचार्य द्वारा मठों के सबसे योग्य शिष्य को मठाधीश बनाने की परंपरा आज भी प्रचलित है जिसे 'शंकराचार्य' के नाम से जाना जाता है। ये सभी सनातन धर्म के प्रचार प्रसार के लिए पूरी देवभूमि भारत का भ्रमण कर जनजागरण की अलख जगाते हैं। इस मठ का महाकाव्य अहं ब्रह्मास्मि है तथा मठ के अंतर्गत यजुर्वेद को रखा गया है। श्रृंगेरी मठ के प्रथम मठाधीश आचार्य सुरेश्वर जी थे तथा वर्तमान में स्वामी भारती कृष्णतीर्थ जी इस मठ के 36वें पीठाधीश्वर शंकराचार्य है।

फरवरी मास के अंतिम दिनों में मेरा परिवार-सहित कर्नाटक राज्य के दक्षिण कन्नड़ जिले के सुल्लिया तहसील में एक मित्र परिवार के घर एक विवाह-समारोह में जाना हुआ। अपनी कर्नाटक यात्रा के दौरान हमने कुछ धार्मिक स्थलों का भ्रमण किया, जिन में से श्रृंगेरी शारदापीठ के बारे में मैं बताना चाहूंगी।

श्रृंगेरी भारत के कर्नाटक राज्य के चिकमंगलूर जिले में स्थित है। यह नगर प्राचीन ऋषि-मुनियों के काल से बसा हुआ है। कहा जाता है कि इस नगर का नाम यहाँ से 12 किमी दूर स्थित श्रृंगगिरी पर्वत के नाम से पड़ा, यह स्थान ऋषि श्रृंगी का जन्मस्थल भी माना जाता है। श्रृंगेरी की एक छोटी पहाड़ी पर ऋषि श्रृंगी के पिता ऋषि विभाण्डक का आश्रम भी बताया जाता है। यह स्थान प्राकृतिक वैभव और सुंदरता से भरपूर है।

तुंग नदी के किनारे बसा हुआ श्रृंगेरी शारदा पीठ परिसर काफी विशाल है और इसमें कई मंदिर है। यहाँ पहुंचकर हमने एक काफी ऊंचे द्वार से जिसे गोपुर भी कहा जाता है, के द्वारा पीठ के भीतर प्रवेश किया।

एक किंवदंति के अनुसार, श्री आदि शंकर एक तपती दोपहर को जब तुंगा नदी के तट पर टहल रहे थे, तो उन्होंने एक बहुत ही असामान्य दृश्य देखा। उन्होंने देखा कि प्रसव पीड़ा से पीड़ित एक मेंढकी दोपहर की चिलचिलाती धूप में कराह रही थी तब एक नाग ने उस पर चिलचिलाती गर्मी से कुछ छाया देने के लिए उसे अपने फन से ढक दिया। इस घटना ने आचार्य को विस्मित कर दिया। उन्होंने विचार किया कि यह स्थान अवश्य ही पवित्र है जहां अपनी मूल प्रवृत्ति से परे हटकर जन्मजात शत्रु के बीच प्यार और एक दूसरे की रक्षा करने की भावना है। उन्होंने अपने 32 वर्ष के कुल जीवन के 12 वर्ष इस स्थान पर बिताए और फैसला किया कि यही स्थान विद्यार्जन जैसे पवित्र कार्य का कार्यस्थल होना चाहिए। इस प्रकार आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार पीठों में से प्रथम पीठ, श्रृंगेरी शारदा पीठम की स्थापना यहाँ पर हुई।

श्री शारदम्बा श्रृंगेरी की प्रमुख पीठासीन देवी हैं। कहा जाता है कि जब आदिशंकर कश्मीर में कुछ समय व्यतीत कर वापिस आये थे, तब वे शारदम्बा देवी को वहां से श्रृंगेरी

नगर में लाये थे जबकि इसका मूल शारदा पीठ अब पाकिस्तान अधिकृत क्षेत्र में है।

श्री शारदम्बा मंदिर ग्रेनाइट पत्थरों से बना है जोकि विद्या और बुद्धि की देवी मां सरस्वती जी को समर्पित है। मंदिर का द्वार स्वर्ण मंडित है जिन पर देवी की आकृतियां खुदी हुई हैं तथा महामंडपम के विशाल पत्थर के खंभों पर द्वारपालकों, देवी दुर्गा तथा देवताओं आदि की नक्काशी हुई है। माना जाता है कि देवी शारदम्बा मां सरस्वती जी का अवतार है, जो उपया भारती के रूप में पृथ्वी पर आई थीं। आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित शारदम्बा देवी की मूल प्रतिमा चन्दन काष्ठ की बनी थी। किन्तु एक अग्निकांड में यह मंदिर भस्म हो गया था। इसके बाद श्री भारती कृष्ण तीर्थ और श्री विद्यारण्य द्वारा श्रृंगेरी मंदिर का जीर्णोद्धार और विस्तार किया गया। 14वीं शताब्दी में, विजयनगर साम्राज्य द्वारा इसे शाही संरक्षण दिया गया तथा द्रविड़ पद्धति में निर्मित वर्तमान मंदिर में शारदम्बा देवी की स्वर्ण प्रतिमा स्थापित की गयी थी, जिसमें देवी हाथ में एक माला लिए एक चक्र पर आसीन हैं। बहुत से माता-पिता यहाँ अपनी संतान की विद्या का आरम्भ माँ शारदम्बा के आशीर्वाद से करते हैं। इस मंदिर में किया जाने वाला अक्षराभ्यास का अनुष्ठान बहुत पवित्र माना जाता है। मंदिर के विशाल कक्ष तथा परिसर में आपको बहुत सारे 2 से 5 वर्ष तक की आयु के बच्चे माता-पिता के साथ स्लेट-पट्टी और चॉक के साथ देखने को मिलेगें, इन्हें चावल की एक थाली दी जाती है, जिस पर वे देवी सरस्वती और गुरु से प्रार्थना करते हैं कि वे इन बच्चों को अच्छा ज्ञान और शिक्षा प्रदान करें।

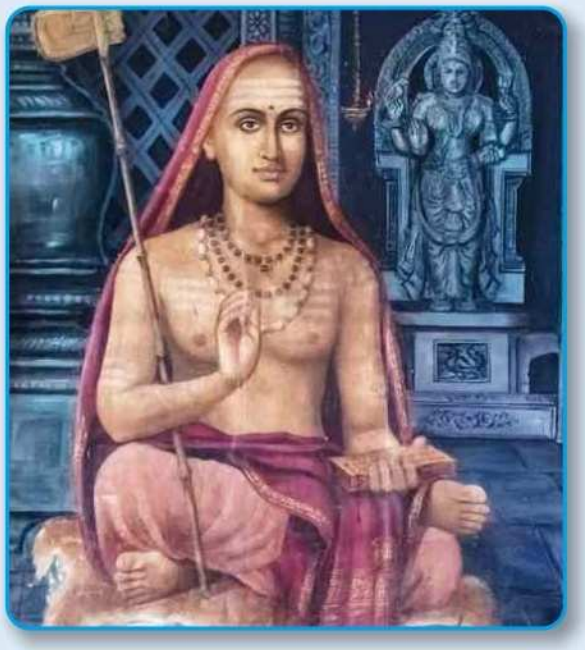

श्री तोरण गणपति मंदिर के अद्वितीय मंदिर का दरवाजा चांदी का है जिसके शीर्ष पर गणपति की सोने से ढकी प्रतिमा है। तोरण गणपति के दर्शन करने के बाद श्री शारदम्बा के दर्शन करने की प्रथा है। श्री शारदम्बा मंदिर के दाई ओर भगवान श्रीराम-सीता और लक्ष्मण जी को समर्पित श्री कोडंदरमास्वामी मंदिर है।

श्री जनार्दन मंदिर के परिसर में एक बड़ा सुदर्शन चक्र देखा जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि चक्र की पूजा करने से अन्य मनुष्यों के प्रति शत्रुता के भाव दूर होते है। भगवान जनार्दन के रूप में भगवान विष्णु को समर्पित इस जनार्दन मंदिर में भगवान जनार्दन की मूर्ति को साल भर चंदन के लेप से ढका जाता है तथा इसके दोनों ओर श्रीदेवी और भूदेवी की मूर्ति हैं।

श्री शारदम्बा मंदिर परिसर के ठीक बाहर अद्वैत वेदान्त तथा आदि शंकराचार्य पर आधारित साहित्य पुस्तकों की एक दुकान है जहां से आप इन पुस्तकों को खरीद सकते हैं। इस मंदिर के सामने एक विशाल हाल है तथा एक बड़ा मंच है जहाँ पर कोई न कोई प्रवचन चला रहता है। वहाँ पर कुछ विद्यार्थी अपने गुरु के चित्र के सामने बैठकर वेदों का उच्चारण कर रहे थे। मंदिर परिसर में एक सोने एवं चांदी से निर्मित एक बड़ी सी पालकी दिखाई देती है। नवरात्र एवं कुछ अन्य विशेष दिवसों पर देवी को पालकी

में बिठाकर उनकी शोभायात्रा निकाली जाती है। शारदम्बा मन्दिर से थोड़ा पीछे आदि शंकराचार्य को समर्पित एक छोटा-सा सुन्दर मंदिर है जिसमें आदि शंकराचार्य की मूर्ति चार शिष्यों के साथ एक योगासन की मुद्रा में है तथा सामने एक शिवलिंग है।

विद्याशंकर मंदिर श्रृंगेरी का सर्वाधिक आकर्षक मंदिर है, इस मंदिर का निर्माण 1338 ईस्वी में चालुक्य और द्रविड़ शैली की वास्तुकला में किया गया था। शिलाओं के एक ऊंचे आधार पर उत्कीर्णित अर्धगोलाकार आकार में निर्मित विद्याशंकर मंदिर वास्तुकला का जीता-जागता नमूना है। कुछ समय मंत्रमुग्ध हो इस मंदिर को बाहर से निहारने के पश्चात हमने इसके भीतर प्रवेश किया। मंदिर की बाह्य दीवारों पर आदि शंकराचार्य द्वारा परिभाषित पंथों के भगवानों- दशावतार, काली, शिव, विष्णु, कार्तिकेय, गणेश एवं सूर्य की प्रतिमाएं उकेरी हुई थी। मंदिर की छत पर कमल एवं तोतों की आकृतियां उत्कीर्णित थीं तथा मंदिर में कुल 12 स्तंभ थे लेकिन इनका आकार एक नहीं था। यहाँ भक्तजनों की बहुत भीड़ थी। एक भक्त के पूछने पर पुजारीजी बता रहे थे कि ये 12 स्तंभ 12 राशियों के प्रतीक हैं। जब सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है तब सूर्य की प्रथम किरणें उस राशि के प्रतीकात्मक स्तंभ पर पड़ती हैं। उन सभी स्तंभों पर उनकी राशियों के चिन्ह पड़े हुए थे। तत्पश्चात् हम मंदिर के गर्भगृह में गए। गर्भगृह के भीतर काले पत्थर का एक बड़ा शिवलिंग था। शिवलिंग के बाईं ओर गणपति की काले पत्थर में बनी प्रतिमा है तथा दायीं ओर देवी दुर्गा की प्रतिमा है। इस शिवलिंग के बारे प्रचलित हैं कि दोनों विषुव दिवसों को सूर्योदय की किरणें सीधे विद्याशंकर लिंग पर पड़ती हैं। खगोलीय घटना के फलस्वरूप जब पृथ्वी पर दिन और रात बराबर होते है तथा भूमध्य रेखा पर सूर्य की सीधी किरणें पड़ती हैं तब पृथ्वी की ऐसी स्थिति को विषुव दिवस कहा जाता है ये दो स्थितियाँ 21 मार्च और 23 सितंबर को होती हैं। विद्याशंकर मंदिर के पृष्ठभाग में एक पंक्ति में कुछ छोटे- छोटे पत्थर से बने मंदिर है। यहाँ का मुख्य उत्सव दीपावली से 15 दिनों के पश्चात् कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में मनाया जाता है।

श्रृंगेरी शारदा पीठम में भूतपूर्व शंकराचार्यों की समाधियाँ भी हैं। गुरु निवास एक विशाल कक्ष है जहां शंकराचार्य अपने भक्तों को दर्शन देते हैं। मठ परिसर में कर्मकांड आदि के कार्य करवाने के लिए एक किनारे बहुत सारे हवन-कुंड बने हुए है। मंदिरों की आप बाहर से फोटो ले सकते है लेकिन कई मंदिरों की भीतर से फोटो लेने की अनुमति नही है। तुंग नदी के किनारों पर तीर्थयात्री मछलियों को दाना खिला रहे थे। नदी का जल काली मछलियों से भरा पड़ा था।

श्रृंगेरी मठ प्रशासन द्वारा बहुत सारे लोक कल्याणकारी कार्य भी किए जाते है जैसेकि श्रृंगेरी मठ द्वारा कुछ कॉलेज और एक अस्पताल भी चलाया जाता है तथा यह पूरे भारत में कुछ मंदिरों और वैदिक स्कूलों का रखरखाव भी करता है। श्रृंगेरी मठ परिसर में शारदा मंदिर के पास 'श्री भारती तीर्थ प्रसाद' के नाम से एक विशाल भोजन कक्ष भी बनाया गया है जिसमें भक्त भोजन ग्रहण करते हैं। हजारों की संख्या में प्रत्येक दिन दोपहर 12:15 से 2:30 बजे के बीच और रात में 7:15 बजे से 8:30 बजे के बीच भोजन परोसा जाता है। हमने भी यहाँ भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

ऐसे स्थानों का भ्रमण कर हमें अपने देश के समृद्ध साहित्य और पावन संस्कृति को देखकर गौरव का सुखद अहसास होता है वहाँ की सुंदरता, हरियाली और भव्यता ने मेरा मन मोह लिया। वहाँ आस-पास घूमने की ओर भी जगहें थी जहाँ हम जा नहीं सके। यह मेरी अविस्मरणीय यात्राओं में से एक थी तथा हमेशा याद रहेगी।

रिश्तों का रसायन

उदय प्रताप सिंह
हिंदी अधिकारी
महालेखाकार (ले.व.ह.) का कार्यालय,
कर्नाटक, बेंगलूरु-560001
कार्यालय फोन नं. 080 22640262
मो. नं. 8277090764
ईमेल- udayprataps.kar.ae@cag.gov.in

धरती पर जब से मानव का उद्भव हुआ है तब से मानवीय संबंध इतनी भयावह स्थिति में कभी नहीं पहुंचे थे जितने की आज मालूम होते हैं। आज आपसी संबंधों का स्तर इतना नीचे गिर गया है कि कल्पना करना भी मुश्किल है। संबंधों में आयी ये गिरावट एक बड़े संकट की ओर इशारा करती है। इशारा ये है कि आज समाज का ताना-बाना बुरी तरह से टूट रहा है। ताना-बाना टूट कर बिखर रहा है, तार-तार हो रहा है। मानवीय मूल्य जिन पर समाज की नींव टिकी होती है वे समाप्त होते जा रहे हैं। संबंधों में आई गिरावट पर बात करने से पहले यहाँ थोड़ा संबंधों के बारे में विचार कर लेना आवश्यक है। यदि हम विचार करें तो पाएंगे कि हमारे चारों तरफ संबंधों का एक जाल है, एक ताना-बाना सा बुना हुआ है जिसमें हम एक दूसरे से जुड़े हैं, परस्पर संबंधित हैं और एक दूसरे पर निर्भर भी हैं। यही ताना-बाना हमारा समाज कहलाता है और हम इसी समाज का हिस्सा है और इसी में रहते हैं और अपना जीवन यापन करते हैं। जंजीर की कड़ी की भाँति समाज की भी प्रत्येक इकाई इस समाज रूपी ताने-बाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसीलिए समाज की सभी कड़ियों का मजबूत होना जरूरी है। कड़ियों की मजबूती उनके आपसी संबंधों के स्थायित्व पर निर्भर करती है।

किसी भी सशक्त समाज की आधारशिला उसके आपसी संबंधों पर निर्भर करती है। संबंध जितने मधुर और स्थायी होंगे समाज उतना ही अधिक फले-फूलेगा, उसकी उतनी ही उन्नति होगी, उसके नागरिक उतने ही अधिक सुशिक्षित और संस्कारवान होंगे, ये सब सामाजिक संबंधों पर ही निर्भर करता है। जीवन में संबंधों का उतना ही महत्त्व है

जितना कि जीवन का। हमारे जीवन का आधार ही हमारे संबंधों पर टिका है। हमारा जीवन हमें संबंधों से ही मिला है। हमारा जीवन हमारी खुद की देन नहीं है, हमारे माता-पिता की देन है और इसीलिए माता-पिता से हमारा संबंध सबसे प्रगाढ़ होता है। इसमें भी संतान का संबंध पिता से अधिक माता से गहरा होता है क्योंकि संतान को माता एक तो अपने गर्भ में महीनों तक धारण करती है दूसरा हम प्रत्यक्ष रूप से देखते है कि जन्म के समय नाल द्वारा संतान माता से जुड़ी रहती है, जब तक संतान नाल द्वारा माता से जुड़ी होती है तब तक उस का अपनी माता के सिवा अन्य किसी से कोई संबंध नहीं होता है, हो भी नहीं सकता है। संतान का पहला संबंध प्रत्यक्ष रूप से माता के साथ होता है और इसीलिए यदि संतान चाहे तो भी माता के जैसा संबंध किसी अन्य के साथ स्थापित नहीं कर सकती है। जननी का भी वैसा लगाव, प्रेम और वात्सल्य किसी दूसरे के साथ नहीं हो सकता है। यह निर्विवाद रूप से सत्य है इसमें कहीं कोई दो राय नहीं है। माता के बाद वही संतान पिता, और फिर समय के साथ भाई-बहन, दादी-दादा, नानी-नाना, तथा अन्य रिश्तों से परिचित होता है और तद्नुरूप वह परिवार और समाज में व्यवहार करता है।

जो बच्चा बचपन में सभी रिश्तों और संबंधों को समान आदर व सम्मान देता है। अपने चचेरे भाई-बहनों और बाल सखाओं को भी अपने सगे भाई-बहनों के समान ही प्यार और दुलार करता है। वहीं बच्चा बड़ा होकर जब तथाकथित समझदार हो जाता है तो अपने ही सगे रिश्तेदारों से इतना अधिक खिन्न हो जाता है। उनसे इतनी अधिक दूरी बना लेता है और इस कदर नफरत करने लगता है कि अपने ही सगे संबंधियों पर बंदूक तान देता है, तलवार, हांसिया और गंड़ासा उठा लेता है, लाठी-डंडों से उनकी पिटाई करता है। जरा भी नहीं हिचकता है, एक बार भी नहीं सोचता है कि वह क्या कर रहा है। जीवन पर्यंत के लिए उनका दुश्मन बन जाता है। माता-पिता को गाली गलौज करने लगता है। उन्हें मारता-पीटता है, उन्हें उन्हीं के घर में पराया कर देता है। घर से बाहर निकाल देता है, रोता-बिलखता हुआ असहाय छोड़ देता है। कभी-कभी तो उन्हें वृद्धाश्रम तक में छोड़ने में गुरेज नहीं करता है।

संवेदनहीनता की पराकाष्ठा तो देखिए कि कुछ कपूत तो अपने माता-पिता जो उन्हें इस दुनिया में लाते हैं, उन्हें अपने रक्त से सींचते हैं उनसे ही छुटकारा पाने के लिए, उन्हें रेलवे स्टेशन या किसी मेले या भीड़ भरी जगह में छोड़ कर इतिश्री कर लेते हैं। ऐसी खबरें पढ़ कर देह में सिहरन सी होने लगती है, मन कचोटने लगता है, रोएँ खड़े हो जाते हैं। पता नहीं ऐसे कुलदीपक और सपूत कौन सी घड़ी में अपने खानदान का उद्धार करने के लिए पैदा होते हैं? कमाल की बात तो यह है कि ये वहीं माता-पिता होते हैं जो अपने बच्चों के जन्म के लिए कितने जतन करते हैं। पूजा, पाठ, हवन, यज्ञ, व्रत, नियम-धर्म, मंदिर- मस्जिद, पीर, फकीर, चौखट, चादर, माला, ताबीज और पता नहीं कितनी और क्या-क्या मन्नतें मांगते हैं? संतान के लिए माता-पिता किस-किस की मिन्नतें नहीं करते हैं। तीर्थ-यात्राएं करते है, उनके जन्म के समय दिल खोल कर पैसे उड़ाते हैं और खूब खुशियाँ मनाते हैं। खूब मिठाईयाँ बाटते हैं, खुशी में फूले नहीं समाते हैं।

अब यक्ष प्रश्न यह उठता है कि इन संतानों में ऐसा क्या परिवर्तन हो जाता है या फिर यूं कहें कि ऐसा क्या घटित होता है जो इतने मजबूत रिश्तों को तार-तार कर देता है। यह स्थिति क्यों और कैसे पैदा होती है? ऐसा क्या हो जाता है जो संबंधों में कड़वाहट इस हद तक बढ़ जाती है कि सगे भाई एक दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं। भाई-भाई में जरा सी बात पर अन-बन होने लगती है। एक छोटे

से जमीन के टुकड़े के लिए उम्र भर का बैर बन जाता है। कभी-कभी तो बित्ते भर जमीन के लिए सगे भाईयों में हत्याएं तक हो जाती हैं। फिर वही बैर पीढियों तक चलता रहता है। रिश्तों की यह पहेली आज तक अनसुलझी ही तगती है। रिश्तों की ये कौन सी कैमिस्ट्री है जो किसी के समझ में नहीं आती है। हमारा समाज इस गुत्थी को सुलझाने में नाकाम ही रहा है। कम से कम मुझे तो यही लगता है। जितना इसको सुलझाने की कोशिश की गई है उतना ही और उलझी है। मनुष्य के मष्तिक में कौन सा ऐसा रसायन है जो रिश्तों को इस हद तक बर्बाद करने की क्षमता रखता है। बचपन के वे सुनहरे पल, वो साथ-साथ का खाना-पीना, उठना-बैठना, खेलना-कूदना, हँसी-ठिठोली, शरारतें और वो निश्छल प्रेम और लगाव मात्र क्षण भर में सबकुछ खत्म हो जाता है।

यदि हम चिंतन करें तो महसूस करेंगे कि इस संसार में सभी प्राणी सहअस्तित्व की अवधारणा पर जीवित हैं। सहअस्तित्व से हमारा तात्पर्य यह है कि हम एक दूसरे पर निर्भर हैं और एक दूसरे के पूरक भी हैं। पूरी सृष्टि एक दूसरे को आधार प्रदान करती है, न सिर्फ आधार प्रदान करती है बल्कि उसका समर्थन भी करती है। प्रकृति के इसी नियम के कारण सदियों से ये आभासी संसार निरंतर गतिमान होकर चला आ रहा है। यद्यपि ये संसार आभासी है तथापि अपनी निरंतरता के कारण हमें सत्य प्रतीत होता है। इसको दूसरी तरह से समझें तो ये पूरी सृष्टि एकात्मक रूप में है, अलग-अलग नहीं है। इसीलिए इसका एक अंग दूसरे अंग को सहारा देता है न सिर्फ सहारा देता है बल्कि उसका पूरक बन कर उसे समर्थ भी बनाता है। ठीक उसी तरह यही नियम संबंधों और रिश्तों पर भी लागू होता है। जब तक बच्चा माँ के गर्भ में माँ के साथ एकाकार रहता है तब तक वह वही पोषण पाता है जो माँ खाती-पीती है। माँ के पोषण से ही बच्चा पोषित होता है। माँ से अलग होने के बाद उसमें अनेक परिवर्तन आते हैं। बाहरी दुनिया के संपर्क में आने पर वह अच्छा-बुरा सब सीखता है। संबंधों के प्रति उसमें तब तक कटुता नहीं आती जब तक उसमें लालच का अंकुर नहीं फूटता है।

लालच एक ऐसा अवगुण है मनुष्य के अंदर जो उसके पूरे जीवन और उसकी उपलब्धियों को नष्ट कर देता है। मानव जीवन को अर्थहीन बना देता है। जिस मनुष्य के अंदर लालच बढ़ जाता है उसके जीवन में अन्य अवगुणों की आवश्कता नहीं रहती। तालच ही वो बला है जो मनुष्य के रिश्तों का दुश्मन है, सभी संबंधों का वैरी है। मनुष्य के मस्तिष्क में विद्यमान यह एक ऐसा रसायन है जो यदि आवश्यकता से अधिक बढ़ जाए तो अपना और अपनों का जीवन नरक बना देता है। इसीलिए लालच को एक बुरी बला कहा गया है। कहते हैं कि 'लालच बुरी बला है' जितनी बुरी बला इसे कहा गया है यह उससे भी कहीं ज्यादा बुरी है। जब तुम्हारे अपने ही तुमसे खफा रहने लगें तो फिर जीवन का क्या मोल है। छोटा भाई अपने जिन बड़े भाईयों को हमेशा पिता तुल्य आदर और सम्मान करता है उन्हें ही गाली-गलौज करने लगता है, वो भी जरा से जमीन के टुकड़े के लिए। इतनी गंदी गालियाँ देता हैं वो भी सरेआम कि सुनने वालों के कानों से खून निकल पड़े। इतना लालच! धिक्कार है ऐसे जीवन को! इसे ही कहते हैं कि लालच में अंधा हो जाना। दूसरी तरफ देखा गया है कि बड़े भाई जरा सा भी झुकने को तैयार नहीं होते और क्षण भर में रिश्ता खत्म कर लेते हैं। उन्हें चाहिए कि वे अपने छोटे भाईयों से स्नेह करें। जिन्हें तुमने अपनी संतान की तरह ही बड़ा किया है, पालन-पोषण किया है उनके प्रति इतने कठोर बन जाना कि अपना मानने से ही इंकार कर देना। अपने छोटे भाईयों को समझाने की बजाय उनका सामाजिक बहिष्कार कर देना। उनके प्रति अपने मन में बैर पाल लेना, उनका तिरस्कार करना, इससे संबंध सुधरते नहीं बल्कि हमेशा के

लिए खत्म हो जाते हैं। ये नादानी की पराकाष्ठा है।

लालच को त्याग से ही जीता जा सकता है। रिश्तों में जो लोग बड़े होते हैं, उन्हें चाहिए कि वे संबंधों में स्नेह बनाए रखने के लिए त्याग का सहारा लें। थोड़ा सा त्याग करके हम रिश्तों को बचा सकते हैं। संबंधों में आने वाली कटुता को कम कर सकते हैं। ये सर्व विदित है कि हाथ की पाँचों उंगलियाँ बराबर नहीं होती हैं। ठीक उसी प्रकार समाज में सभी लोग या परिवार में सभी भाईयों की आर्थिक स्थिति भी एक समान नहीं होती है। जिनकी स्थिति कमजोर हो, मजबूत स्थिति वालों को उन्हें सहारा देना चाहिए, और हां इसे उन पर किया गया अहसान नहीं समझना चाहिए इसे पारिवारिक कर्तव्य और दायित्व समझना चाहिए। इस कर्तव्य को सभी को निभाना चाहिए। यदि परिवार का कोई सदस्य या छोटे भाई गलत रास्ते पर चले गए हैं या बहकावे में आकर लालच के वशीभूत हो गए हैं तो उन्हें भी समझा बुझा कर रिश्तों की अहमियत को बताते हुए सही राह पर लाना बड़े भाईयों का कर्तव्य है। उन्हें समझाना चाहिए कि रिश्तों के बिना जीवन नीरस है, एकाकी है। रिश्ते ही हमारी असली ताकत है, हमारा अभिमान हैं, हमारा संबल है जिन पर हमें गर्व होता है। उन्हें यह भी समझाना चाहिए कि रिश्ते हमारी पहचान हैं। जीवन में मधुर रिश्ते न हों तो जीवन एक सजा के समान हो जाता है। जिनके जीवन में अच्छे रिश्तों की पूंजी होती है उनका जीवन यूँ ही हँसते- खेलते गुजर जाता है, उम्र कब कट जाती है पता ही नहीं चलता है।

रिश्तों में गाँठ पड़ जाए तो आसानी से नहीं खुलती है। कड़वाहट जल्दी दूर नहीं होती है। मन में हमेशा कसक सी बनी रहती है। हमारे रिश्ते भावनाओं की एक अत्यंत नाजुक डोर से बंधे होते हैं। रिश्तों की डोर इतनी नाजुक होती है कि इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि 'एक शब्द' मात्र से वह नाजुक डोर क्षण मात्र में ही टूट जाती है। एक कड़वा शब्द, एक कड़वा वाक्य गहरे से गहरे रिश्ते को हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त कर देता है। रिश्ते में जहर घोल देता है। कितने नाजुक होते हैं ये रिश्ते। इसीलिए रिश्ते निभाना और उन्हें संजो कर रखना महानता की निशानी है। रिश्तों को मजबूत बनाए रखने के लिए आपसी सामंजस्य बहुत जरूरी है। रिश्तों को उचित महत्त्व देना परिवार के सभी सदस्यों का दायित्व है। आज के समय में रिश्तों का संवरण और भी अधिक आवश्यक हो गया है। आज परिवार बहुत तेजी से टूट रहे हैं, पारिवारिक रिश्ते बिखर रहे हैं। हमें रिश्तों को संजोना पड़ेगा, जीवन में उनके महत्त्व को समझना पड़ेगा। हमें अपने अहम भाव से ऊपर उठकर सोचना पड़ेगा तभी रिश्ते बचेंगे। अहम भाव रिश्तों को खत्म कर देता है। रिश्ते ही हमारे जीवन का आधार है, हमारी प्रेरणा का स्रोत है। वे हमें जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। रिश्ते हमें जीने की प्रेरणा देते हैं। घर परिवार में यदि रिश्ते मधुर हों तो सब एक दूसरे से खुल कर बातें करते हैं, सबका दुख-सुख बांटते हैं। जहाँ एक तरफ गिले-शिकवे होते हैं तो वहीं दूसरी तरफ हँसी ठिठोली भी होती है। घर स्वर्ग सा महसूस होता है। घर के सभी सदस्य अवसाद और तनाव से मुक्त रहते हैं।

रिश्तों को मधुर बनाए रखने और उन्हें संजोए रखने का यही रसायन है कि हमें छोटी-छोटी बातों पर प्रतिक्रिया नहीं देनी चाहिए। अपने लालच को नियंत्रण में रखना चाहिए। इस बात का आत्म चिंतन करते रहना चाहिए कि कहीं हमारा लालच रिश्तों पर भारी तो नहीं पड़ रहा है। हमेशा आपसी सामंजस्य बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। बड़ों को बड़प्पन दिखाना चाहिए। जो रिश्ते में छोटे हैं उन्हें अपने बड़ों का आदर सम्मान करना चाहिए। ऐसा करने से ही हमारे रिश्तें जीवंत और मधुर बने रह पाएंगे और जीवन खुशहाल बना रहेगा।

यूनेस्को मान्यता प्राप्त कोलकाता का दुर्गा पूजा

करूणाकार साहू
(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
कोलकाता पश्चिम बंगाल

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

दुर्गा-पूजा एक प्रसिद्ध हिन्दू त्यौहार है। यह पूजा समग्र भारत में की जाती है। यह त्यौहार पश्चिम बंगाल का विशेष रूप से कोलकाता का सबसे महत्त्वपूर्ण पर्व है, जो लगभग दस दिनों तक बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है। माँ दुर्गा की प्रतिमा का कारुकार्य एवं पंडाल की मनोरम सजावट अत्यंत आकर्षक होती है। इसके साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम, दर्शनार्थियों का रंगीन परिधान दुर्गा पूजा को बहुत मनमोहक बना देता है। दुर्गा पूजा त्यौहार शरद ऋतु में लगभग सितंबर-अक्टूबर महीने में मनाया जाता है। इस समय धीरे-धीरे दस्तक देती ठंड लोगों को सुकून देती है। दुर्गा पूजा के दौरान लोग पंडाल से पंडाल दिन रात घूमते हैं, दुर्गा माँ का दर्शन करने के साथ-साथ पूजा करते हैं एवं

माँ का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। पूरे भारत में दुर्गा पूजा अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। फिर भी पश्चिम बंगाल के कोलकाता में दुर्गा पूजा जिस उल्लास के साथ मनाया जाता है वह अकल्पनीय और वर्णन से परे है। लोग प्रत्येक वर्ष दुर्गा पूजा का बेसब्री से इन्तजार करते हैं। दुर्गा पूजा के दो-तीन महीने पहले से ही पंडाल/मंडप निर्माण की तैयारी शुरु हो जाती है। पंडाल में आकर्षक पारम्परिक प्रसंगों को महत्त्व दिया जाता है। आर्किटेक्ट तथा शिल्पीकार पंडाल में विभिन्न प्रकार के प्रसंगों को खूब जीवंतरूप से प्रदर्शित करते हैं। प्रसंगों के माध्यम से ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक घटनाएं पुनर्जीवित हो जाती हैं। कुछ प्रसंग इस प्रकार हैं- बंगाल विभाजन के बाद ईस्ट बंगाल से आने वाले लोगों के संबंध में बहुत कुछ पंडाल में दर्शाया गया है जिसमें लोगों के नेम प्लेट, कपबोईस, हस्त चित्रित प्रतिकृतियाँ तथा चित्रों देखकर विभाजन की विभीषिका को महसूस किया जा सकता है, कहीं पंडालों में वार्निंग फॉर गर्ल चाइल्ड ट्रैफिकिंग के संबंध में उल्लिखित सावधानियां दर्शनार्थियों को एक सामाजिक शिक्षा देती है, कई पंडालों में यह भी दिखाया जाता है कि निर्माण कार्य के श्रमिक का जीवन कैसा होता है, कहीं पंडाल की दीवारों पर श्रमिकों के द्वारा प्रयोग में लाये जाने वाले उपकरणों को विस्तार से दिखाया जाना और कहीं टेराकोटा पॉटरिंग इत्यादि दिखाये जाते है। तो कहीं नटराज की मूर्ति का महत्त्व देखने को मिलाता है, किसी-किसी पंडाल को एफिल टावर, बुर्ज खलीफा, अयोध्या राम मंदिर, कोणार्क सूर्य मंदिर के ढांचे में तैयार किया जाता है जिसको देखने के लिए बहुत दूर-दूर से लोग आते हैं, और कहीं-कहीं पंडाल में भयावह घटनायें जैसे सुपर साइक्लोन, रेल दुर्घटना जैसी दर्दनाक घटनाएं आदि दर्शायी जाती हैं, भारत द्वारा अंतरिक्ष में भेजे गये चन्द्रयान के दृश्यों को भी पंडाल में सुन्दर ढंग से प्रदर्शित किया जाता है।

दुर्गा माँ की प्रतिमा और पंडाल की तैयारी:

दुर्गा पूजा में दो महत्त्वपूर्ण कार्य होते हैं। कुम्हार टोली में दुर्गा माँ की प्रतिमा तैयार होती है। दुर्गा माँ के साथ-साथ माँ लक्ष्मी, माँ सरस्वती, भगवान गणेश और भगवान कार्तिक की प्रतिमाएँ तैयार होती हैं। माँ दुर्गा द्वारा महिषासुर के वध करने के स्वरूप को प्रतिमाओं के माध्यम से दर्शाया जाता है। सबसे पहले भगवान महादेव की प्रतीक पूजा होती है। माँ के वाहन सिंह की मूर्ति भी तैयार की जाती है। सभी प्रतिमाएँ वेदिकाओं के ऊपर रखी जाती हैं और उनको नए एवं सुंदर कपड़ों या साड़ी में सजाया जाता हैं। दुर्गा माँ की सुंदर प्रतिमा को देखकर मन में अप्रतिम शांति और आनंद की अनुभूति होती है। लोग अपार श्रद्धा एवं आग्रह के साथ नवरात्रि पर्व का पालन करते हैं। माँ दुर्गा की प्रतिमा को विदेश में भी ले जाया जाता है। लन्दन में बंगाली समुदाय के लोग अपने घरों में दुर्गा पूजा मनाते हैं।

पंडाल बनाने के लिए अत्यंत साधारण एवं अविश्वसनीय वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है। कभी- कभी वर्जित वस्तुओं का व्यवहार करके भी पंडाल बनाया जाना है। इससे बनाया गया पंडाल दिखने में बहुत सुंदर और आश्चर्य लगता है। गाय का गोबर, ठोस चाय का कप, जूट के धागे एवं बोरियों, साइकिल पैडल, फेंका हुआ बॉटल्स, पुराने फटे

कपड़े, बांस की छड़ें, कुर्सियाँ, मछली की खाल, स्नेल्स, बांस इत्यादि पंडाल बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है। शिल्पी एवं श्रमिक खूब मेहनत से इनका उपयोग करके पंडाल तैयार करते हैं। इसके बाद लाइटिंग से साज-सज्जा किया जाता है। पंडाल में एक महत्त्वपूर्ण देखने वाली सजावट जो होती है वह लाइटिंग है। विभिन्न रिदम के साथ लाइट जलना और बंद होना जैसे म्यूजिक का रिदम के साथ लाइट का नाचना । इसे देखकर बहुत खुशी एवं कौतूहल का अनुभव होता है।

सबसे मनोरंजक घटना जो घटती है वह है कि कैसे बंगाली समुदाय के लोग दुर्गा उत्सव के लिए स्वयं को तैयार करते हैं। लगभग एक महीने पहले से लोग खरीददारी करना शुरू कर देते हैं। अपने परिवार के लोगों और रिश्तेदारों के लिए खरीदारी करते हैं। आपस की बातचीत का केंद्र दुर्गापूजा की ख़रीदारी ही होता है । फिर वह चाहे दो सहकर्मियों के मध्य हो या फिर पड़ोसियों या रिश्तेदारों के मध्य हो । महिलाओं का तो यह पूरे वर्ष का मनपसंद विषय है।

दुर्गा पूजा के दौरान विशेष तौर पर महिलाएं स्वयं की साज-सज्जा पर विशेष ध्यान देती हैं। पसंदीदा कपड़ों के साथ-साथ साज-सजावट की विभिन्न चीजें खरीदी जाती हैं। हर एक दिन विशेष तौर पर पंचमी से नवमी तक नये नये रूप में महिलाएं सजावट करती हैं। यह देखा जाता है कि ब्यूटी पार्लर की दुकान के सामने में बहुत लम्बी कतारें लगी होती हैं जहां महिलाएं और बच्चे खुद को सजाने के लिए जाते हैं। मन में एक बात रहती है कि वे लोग दुर्गा पूजा का अच्छी तरह से आनंद लेंगे क्योंकि वर्ष में एक बार दुर्गा पूजा आता है। दुर्गा पूजा के दौरान कई नई नई दुकानों का उद्घाटन होता है, दुकानदार अपनी-अपनी दुकानों को सजाते हैं, नए-नए सामान लाते हैं एवं नए होर्डिंग भी लगाए जाते हैं साथ ही साथ कई प्रकार के डिस्काउंट भी दिए जाते है।

साधारणतः देखा जाता है कि देशभर में लोग अत्यंत आस्था के पर्व दुर्गा पूजा विशेष रूप से सप्तमी से दशमी तिथि तक मनाते हैं जबकि कोलकाता में दुर्गा पूजा प्रथम तिथि से प्रारंभ कर दशमी तिथि तक मनाते है। प्रथम तिथि से पंडाल सजा-सज्जा प्रतिमा उपस्थापना इत्यादि प्रारम्भ हो जाती है. केवल अनुष्ठानिक रूप से पूजा नहीं होती है. लेकिन पंडाल घूमना शुरू हो जाता है। सुबह 8:00 बजे से लोग तैयार होकर पूजा पंडाल घूमने के लिए निकल पड़ते। अगर दूर जाना है तो बस, ट्रेन या मेट्रो में जाते हैं या कोई निजी गाड़ी भाडा करके निकल पड़ते, लोग पंडाल से पंडाल घूमते हैं, फोटो खींचते हैं, सेल्फी लेते हैं और वह सब फेसबुक ट्विटर, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप सोशल मीडिया में शेयर करते हैं। सोशल मीडिया में हम लोग घर में बैठकर भी बड़े-बड़े पंडाल का दृश्य देख पाते हैं। दिन में तो नहीं, हाँ जब शाम होती है तब लोग अधिक संख्या में पूजा देखने के लिए निकल पड़ते हैं फलस्वरूप पंडाल में भीड़ उमड़ने लगती है।

पूजा पंडाल का दृश्य खूब आकर्षक, मनोरम एवं मनमोहक होता है। पंडाल में दुर्गा माँ की प्रतिमा आने के बाद विशिष्ट अतिथि के द्वारा पूजा के अनुष्ठानिक स्वरूप का उदघाटन किया जाता है। महासप्तमी तिथि से दुर्गा माँ की पूजा पंडाल में आरम्भ हो जाती है। महाअष्टमी तिथि में माँ को पुष्पांजलि अर्पित किया जाता है। माँ के समक्ष धुनुचि नृत्य प्रसिद्ध है। दर्शनार्थी धुनुचि नृत्य करके आनन्दित होते हैं। पंडाल के सामने खिचड़ी और आलूदम दर्शनार्थियों को प्रसाद स्वरूप वितरित किया जाता है। दशमी तिथि को सिंदूर खेल खूब चित्ताकर्षक होता है। यह दृश्य बेटी को विदाई देने जैसा दृश्य होता है। महिलाएं एक दूसरे को सिद्रा लहराती है और माँ दुर्गा को विदाई देती हैं। माँ दुर्गा की विदाई के अवसर पर महिलाएँ एक दूसरे से गले मिलकर शोक प्रकट करती हैं। इससे मां दुर्गा के प्रति जो श्रद्धा भाव, स्नेह भाव और माँ के

बिछड जाने का जो दुःख है वह स्पष्ट अनुभव किया जा सकता है। सही मायने में ऐसा लगता है कि अपनी बेटी ससुराल से विदा हो रही हो। इसके साथ विसर्जन यात्रा प्रारम्भ किया जाता है। प्रतिमाओं को बड़े-बड़े वाहन में बिठाया जाता है। लाइटिंग और म्यूजिक के साथ शोभायात्रा निकाली जाती है। इसके सामने महिला, पुरुष, बच्चे इत्यादि नृत्य करते करते गंगा नदी तक दुर्गा प्रतिमा को ले जाते हैं। यह शोभायात्रा होली पर्व की स्मृतियों को ताजा कर देती है

कोलकाता में बहुत पुराना एवं प्रसिदध दुर्गा पंडाल बनाया जाता है। उनमें से कुछ पंडाल उल्लेखनीय है जैसे- बागबाजार सर्वजनिन दुर्गा उत्सव जो 100 साल पुराना है, कॉलेज स्क्वेयर पंडाल जो 75 साल पुराना है, बालीगंज कल्चरल एसोसिएशन जो 70 साल पुराना है संतोष मित्र स्क्वेयर जो 80 साल पुराना है, सुरुचि संग जो 50 साल पुराना है गीधारा सम्मेलन शाहिद्वारी एवेन्यू जो 75 साल पुराना है। इसके अलावा श्रीभूमि स्पोर्टिंग क्लब, मोहम्मद अली पार्क, दमदम पार्क तरूण संघ, कल्याणी पूजा पाल जाधवपुर पार्क पूरा पडल. काशीपुर पूजा पंडाल, बेहाला नूतन दल, नाकताला उदयन संघ, जो 73 साल पुराना है. 66 चल्ती क्लब, बारिशा क्लब, माडक्स स्क्वायर, देशपिया पार्क, सिंही पार्क, बेलिया घाटा 33 पाली तरुण दल, मिताली संघ काकुरगाछि, केंदुआ शांति संघ, हाथी बागान नवीन पल्लि, गिदिरपुर 25 पाली, दन दम एयर पोर्ट के पास अर्जुनपुर इत्यादि पूजा पंडाल में दुर्गा पूजा बहुत आस्था और सौहार्दपूर्ण परिवेश में अनुष्ठित होती है।

जाति, धर्म, वर्ण से परे हटकर हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई स्त्री पुरुष बच्चे-बुजुर्ग प्रत्येक वर्ग के लोग माँ दुर्गा के प्रति आस्था प्रकट कर आराधना करते हैं। सभी लोग अपने परिवार और आत्मीय जनों के साथ दुर्गा पूजा को सौहार्दपूर्ण वातावरण में उल्लास के साथ मनाते हैं। कोलकाता तथा बंगाल के दुर्गा-पूजा की यह बहुत बड़ी विशेषता होती है।

पश्चिम बंगाल सरकार पूजा पंडाल के संयोजकों को प्रोत्साहन देने के साथ-साथ आर्थिक सहयोग के प्रतीक स्वरूप कुछ धनराशि उपलब्ध कराती है। सरकार के सूचना एवं संस्कृति विभाग की तरफ से विभिन्न क्षेत्रों में दुर्गा पूजा पंडाल को पुरस्कृत किया जाता है।

नवरात्रि की समाप्ति के बाद दुर्गा पूजा कार्निवल मनाया जाता है। कोलकाता के रेड रोड में सांस्कृतिक परंपराओं और कलात्मक उत्साह के साथ माँ दुर्गा की कुछ विशेष प्रतिमाओं को प्रदर्शित किया जाता है। इसमें लोक नर्तक, सिनेमा कलाकार, स्कूल के बच्चे और अन्य कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। यह सांस्कृतिक कार्यक्रम राज्य सरकार के द्वारा आयोजित किया जाता है। स्वयं पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री भी इस कार्यक्रम में उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाती हैं। कोलकाता के दुर्गा पूजा को यूनेस्को की मानवता की अमूर्त विरासत सूची में दर्ज किया गया है। यह मान्यता कोलकाता के दुर्गा पूजा की विशिष्टता को विश्व स्तर में एक पहचान देता है।

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यंबके गौरी नारायणि नमोस्तुते।।
जड़ानां जड़तां हन्ति भक्तानां भक्तवत्सला ।
मूढ़तां हर मे देवि त्राहि मां शरणागतम्।।

–अर्थात आप सब कुछ शुभ करने वाली है, आप कल्याणकारी है, आप सबके मनोरथों को पूरा करने वाली है, आप शरण ग्रहण करने योग्य है। हे नारायणी आपको हमारा प्रणाम है। आप मूर्खों की मूर्खता का नाश करती हैं और भक्तों के लिये भक्तवत्सला हैं।

।। धन्यवाद।।

हिंदी - विमर्श

"ये हिंदी भाषा को शुद्ध बनाते रहे, हम अंग्रेजी की गोद में बैठ गए"

जगदंबा प्रसाद शुक्ल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा II)
मध्य प्रदेश, भोपाल

हिंदी के बारे में अपनी बात कहना शुरू करेंगे और अफसोस से कहेंगे। हिंदी भाषा को शुद्ध करने के चक्कर में संस्कृत शब्दों की भरमार करने वालों ने इसे मुश्किल बना दिया और आम लोगों ने धीरे-धीरे इससे दूरी बना ली, स्थानीय भाषा के शब्दों को निकाल बाहर किया फारसी के प्रचलित शब्दों से परहेज किया, संस्कृत व्याकरण में बने हुए नकली नए शब्द डाल दिए, जो आज तक चलन में नहीं आए। इसका दुष्परिणाम यह हुआ की चलन में न होने में ये सारे शब्द आम लोगों की जुबान पर नहीं चढ़ पाए और चलन / प्रयोग से बाहर हो गए, उसकी जगह अंग्रेजी शब्दावली आ गई। अखबारों की भाषा देखकर अब यह महसूस होने लगा है कि भविष्य में अंग्रेजी से मिलकर हिंदी बनेगी जो हिंग्लिश कहलाएगी और संस्कृत के नकली शब्द बाहर होते जाएंगे।

गांधी ने कभी हिंदी और उर्दू मिलाकर हिंदुस्तानी भाषा की हिमायत की थी जिसे पर्याप्त समर्थन नहीं मिला क्योंकि शुद्धतावादी लोगों और सांप्रदायिक मानसिकता ने बेड़ा गर्क कर दिया।

होना यह चाहिए था कि उर्दू के प्रचलित शब्द रखे जाते, स्थानीय भाषाओं के शब्द जोड़कर हर साल शब्दकोष में शब्द बढ़ाए जाते, जिस तरह से अंग्रेजी की डिक्शनरी हर साल विस्तार पाती है, पंजाब की हिंदी बंगाल की हिंदी से थोड़ी अलग होती लेकिन संस्कृति स्थानीयता स्वभाव में अपनापन लिए होती। इस प्रकार स्वाभाविक रूप में हमारी हिंदी इतनी मजबूत हो जाती कि उसमें हर तरह के विचार विज्ञान तकनीक को बखूबी व्यक्त करने की काबिलियत आ जाती जो आम लोगों को आसानी से समझ में आ जाती। यह हिंदी हमारी राष्ट्रीय एकता को मजबूत करती और तमिलनाडु जैसे प्रदेश हिंदी विरोध की राजनीति करने में अपने को कमजोर महसूस करते।

अतिवादी प्रयास आत्म विनाशी होते है यही बात भाषा के मामले में भी है। अगर भाषा सहज रूप से विकसित होगी तो जनमानस इसे अपने करीब पाएगा। यदि कृत्रिम भाषा बनाई जाएगी तो उसका नाकाम होना तय है।

17 वीं शताब्दी का अंत आते-आते मुग़लिया दिल्ली के दरबारी माहौल के गिर्द एक नई ज़ुबान पनपने लगी। यह दिल्ली के आस पास बोली जाने वाली खड़ी बोली के साथ फ़ारसी अल्फ़ाज़ की मिलावट से जन्मी थी। ज्ञातव्य हो कि फ़ारसी उस समय दरबारी ज़ुबान भी थी और भारत की राजभाषा भी। 17वीं शताब्दी के अंत में पहली बार इस नई ज़ुबान में कुछ ऐसा लिखा गया जिसे हम अदब या साहित्य कह सकते हैं। खड़ी बोली की व्याकरण पर आधारित इस नई भाषा में फ़ारसी के अलावा देसी, तुर्की और अरबी अलफाज़ भी थे किन्तु फारसी की तुलना में बहुत कम। यह हिंदवी थी। आर्य समाज प्रवर्तक स्वामी दयानंद सरस्वती ने इसी को हिन्दी कहा क्योंकि 1875 में इसका केवल हिन्दुस्तानी रूप ही शक्ल पा सका था, यह आज की शुद्ध हिंदी तो तब कल्पनातीत थी।

सांप्रदायिकता के मारे देश में ऐसी कौन सी चीज़ है जो रिलिजन की मार मे बची हो। अगर मुसलमान देसी शब्दों और सामान्य फ़ारसी के मेल से बनी इस सीधी सादी हिन्दुस्तानी ज़ुबान में, साहित्यिक फ़ारसी, अरबी और तुर्की मिला कर उर्दू बना सकते हैं तो हम क्यों पीछे रहें? हम संस्कृत मिला देते हैं। सो लग गए हम भी इसी महाकर्म की राह पर। बीसवीं सदी के हिन्दी साहित्यकारों, लेखकों, कवियों तथा पत्रकारों ने धीरे धीरे और आजादी के बाद द्रुत गति से हिन्दुस्तानी या सामान्य हिन्दी को मिटा एक नई हिन्दी को जन्म दिया, इसी को भाषाविज्ञानी आधुनिक हिन्दी और हम सब शुद्ध हिन्दी कहते हैं। मज़े की बात यह है कि यह सायास जन्मी भाषा केवल किताबी पन्नों अथवा भाषा ज्ञानियों की दुनिया तक ही सिमटी हुई है और यहाँ से भी नई पीढ़ी धीरे धीरे इसका उठावना/अन्त्येष्टि करने में लगी है। संस्कृत शब्दों में लदी यह अति क्लिष्ट भाषा अंततः उसी जाल में फंसती जा रही है जहां से इसका विसर्जन होना तय है। केवल लिखी जाती है यह, कोई इसे नहीं बोलता। बोल भी ले तो सामने वाला प्रभावित नहीं होता, परिहास का विषय जरूर बना देता है क्योंकि यह आम आदमी की जुबान है ही नहीं। यही हाल पाकिस्तान में उर्दू का है। वहां के सिंधी, पंजाबी मुसलमान उर्दू पढ़ते तो जरूर हैं पर उसे बोलते देसी पंजावी अन्दाज़ में हैं। कभी उनके पंजाबीनिष्ठ उच्चारण पे ध्यान दीजिए, मनोरंजन हो जाएगा। पंजाब के लाहौर में यदि आप उर्दू को लखनऊ या दिल्ली की नफासत के साथ बोलें तो आपको मुहाजिर की औलाद कहते हैं, साथ ही पंजाबी अंदाज में आपकी पैरोडी भी कर डालते हैं। आप यू ट्यूब पर खालिस उर्दू बोलने वालों की पाक पैरोडियाँ खुद सुन सकते हैं।

भारत में इस शुद्ध भाषा और इसके दुरूह से पारिभाषिक शब्दों ने सहज सरल हिन्दुस्तानी का भट्ठा तो बिठाया ही,

अंग्रेज़ी को भी उभारने में सहायता की है। आप जरा कोशिशें देखिए और उनके अंजाम भी परखिए। उदाहरणार्थ हिन्दुस्तानी में अच्छा भला कहा जाता, "वह जहाज के आने का इन्तजार कर रहा है, हमें अरवी-फारसी का जहाज और इंतजार अटक गया, हमनें बनाया, वह वायुयान के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा है। यह बात और है कि हम नहीं केवल एयरपोर्ट के एनाउंसर बोलते हैं इस जुबान को, हम बोलते हैं, वह प्लेन के आने का वेट कर रहा है। हमनें अरबी फ़ारसी के जहाज और इन्तजार हटाए पर वायुयान, आगमन और प्रतीक्षा जैसे दुरूह शब्द नहीं बोले, हमें अंग्रेज़ी का प्लेन और वेट अधिक आसान प्रतीत हुए।

इसी प्रकार हम वकील की जगह अधिवक्ता ले आए, पर एडवोकेट चल निकला, अधिवक्ता घर पे ही रह गया। अमीर को सम्पन्न से बदला पर किताब में ही रह गया, ज़ुबान पर अंग्रेज़ी का रिच आ गया। हां, अरबी का ग़रीब भारत की गरीबी की तरह अपनी जगह बना रहा। हम सीधी सादी तकनीक की जगह प्रौद्योगिकी उठा लाए, नहीं चला, टेक्नोलॉजी चल निकला। इदारे के स्थान पर संस्थान लाए, वह पुस्तक में घुस गया, और बाहर इंस्टीट्यूट आ गया। हमने देसी शब्द रात की शिफ्ट को संस्कृत की रात्रि पारी में बदला, नहीं चला, नाइट शिफ्ट चल गया। बिजलीवाले की जगह विद्युतकर्मी ने नहीं ली, इलेक्ट्रिशियन अनपढ़ भी बोलने लगे। अच्छे खासे पॉपुलर शब्द तबादले में स्थानांतरण की घुसपैठ कर दी, पढ़े लिखे तक नहीं बोले, हां अनपढ़ भी ट्रान्सफ़र बोलने लगे, देसी शब्द तबादला बेमौत मारा गया। कमरे और कुर्सी की जगह कक्ष और पीठिका रख दी, लोग अंग्रेज़ी के 'रूम' में जा कर 'चेयर' पे बैठ गए।

देसी शब्दों की जाने कितनी हत्याएं दर्ज की हमने। लगभग हर मुआमले में देसी हट कर अंग्रेजी आ गया पर कुछ अपवादों को छोड़ शुद्ध हिंदी या संस्कृत का शब्द उसका सामान्य विकल्प न बन सका। दलाल की जगह अभिकर्ता नहीं डीलर या एजेन्ट ले गया। लौहपथ गामिनी पटरी से हिली तक नहीं, ट्रेन चलती रही, दूरभाष, दूरदर्शन, आकाशवाणी बुरी तरह पिटे, फ़ोन, टीवी, रेडियो सदाबहार रहे। द्रुतगामी मार्ग कॉमेडियन भी नहीं बोले, आम आदमी एक्सप्रेस वे बोलना सीख गया। "सर्वश्रेष्ठ" शब्द साहित्यिक विलास रहा, "बेस्ट" सामान्य भाषा बन गया, बेचारा "बेहतरीन" जैसे तैसे टिका हुआ है। "स्थानीय" आप लिख कर खुश हो गए, अंग्रेज़ी शब्द 'लोकल' जनमानस की जीभ पर जा चढ़ा। स्कूल, सर्टिफिकेट, कम्प्लीशन, इंटरवल, पोस्ट, फीस, ट्रैफ़िक, कोर्ट ये सब आज अनपढ़ तक बोलते हैं, जबकि पढे लिखे तक इनके शुद्ध हिंदी रूप विद्यालय,प्रमाण पत्र, पूर्णता, मध्यांतर, पद, शुल्क, यातायात और न्यायालय से बच कर गुज़र लेते हैं।

जब हमने देसी अल्फ़ाज़ों की छुट्टी कर हिंदुस्तानी या सहज हिन्दी को मारा मगर शुद्ध हिन्दी का बिगुल न बजा सके,

उसको दुरूह बनाते गए, और इस संस्कृत प्रेम में आसान और आमफ़हम अंग्रेज़ी शब्दावली बाज़ी मारती गई। यही हाल पाकिस्तान में उर्दू को अरबी में लादने वालों ने किया, देसी अल्फाज़ बेमौत मार डाले, अरबी से गढ़ी इस्लामिक टच वाली भारी भरकम शब्दावली किताबों की जीनत बन रह गई। कितने आम मुसलमान हैं भारत और पाकिस्तान के जो लुगात, तैयारा, मुन्सनिक, बुरहान, इस्तिलाही अल्फाज़, इल्मे नफसियात, मनशियात जैमे क्लिष्ट अरबी शब्दों का इस्तेमाल करते हैं? आम आदमी वहाँ भी ज्यादातर अंग्रेज़ी शब्द ही इस्तेमाल करता है।

भारत और पाकिस्तान को सांप्रदायिक रूप से शुद्ध बनाने के फेर में संस्कृत और अरबी के पागल दीवानों ने खुद ही अपना सर्वनाश कर लिया। लोकप्रिय देसी शब्दों को हटा शुद्ध हिन्दी और खालिस उर्दू जैमी बनावटी भाषाएं पैदा कर डाली। मुसलमान तो एक कदम और आगे निकले, उन्होंने फारसी को भी जहाँ तक हो सका, बाहर का रास्ता दिखा दिया क्योंकि अरबी का इस्लाम से सीधा सम्बन्ध जो है; खुदा हाफ़िज़ की जगह अल्लाह हाफ़िज़, रमज़ान की जगह रमादान, बन्दगी या आदाब की जगह सलाम बआले कुम आ गया।

अफ़सोस तो मुझे उन हिन्दीवादियों की हरकतों पर होता है जो हर समय इस बनावटी हिन्दी के लोकप्रिय न हो पाने का बाकायदा शोक मनाते हैं और इस बात पर ध्यान नहीं देते कि आम आदमी की मेहरबानी और राष्ट्रीय स्तर पर पहुंच होने की वजह से हिन्दी आज भी सबसे आगे है। यह अफ़सोस और भी बढ़ जाता है जब इस कृत्रिम भाषा को प्रचारित करने में अरबों रुपये उड़ा दिये जाते हैं जबकि प्रादेशिक भाषाओं की गिरती हालत पर कोई ज़ुबानी जमाखर्च तक नहीं करता।

मेरी मातृभाषा भोजपुरी है, गांव से जब मैं शहर आया तो मुझे आभास हुआ कि लोग किताब की भाषा खड़ी बोली बोलते हैं। हिंदी से यह मेरा पहला परिचय था। मैंने इस शुद्ध भाषा को अपनी आदत में शुमार किया और यथासंभव शुद्ध भाषा मे ही बोलता था सर्विस में आने के बाद मेरी एक पहचान बनी कि मैं शुद्ध हिंदी वाला हूं। धीरे-धीरे मुझे महसूस होता गया कि मेरी शुद्ध हिंदी कृत्रिम ज्यादा है। मैंने कुछ अंग्रेजी, आम उर्दू के शब्दों का भी इस्तेमाल करना शुरू किया। अब मेरी भाषा सहज बन गई।

एक बार मैं इंदौर जा रहा था, मुझे गांधी के विचार एक होर्डिंग पर पढ़ने को मिले जब वह हिंदी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता करने 1918 में इंदौर आए थे। उन्होंने हिंदी को हिंदुस्तानी कहा और उस भाषा की हिमायत की जिस भाषा में प्रेमचंद लिखते थे, जवाहरलाल नेहरू बोला करते थे कि मैं राष्ट्रपिता की समझ, दूरदर्शिता एवं विचारों की गहराई का कायल हुआ, साथ ही अफसोस भी हुआ कि वे कितने सही थे और उनकी बात हमने क्यों नहीं सुनी?"

हिंदी में ठीक-ठाक उर्दू को रखते हुए, अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचलित कुछ शब्दों को लेते हुए, बोलचाल में आए सभी अंग्रेजी के शब्दों को जोड़ते हुए, हमें अपनी हिंदी बनानी पड़ेगी, तभी यह भाषा कार्यालय से लेकर जन सामान्य के बीच में स्वाभाविक रूप से प्रगति कर पाएगी, हमें हिंदी के रास्ते के स्पीड ब्रेकर हटाने होंगे।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेख

भारतीय रेल

रेड हिल से वंदे भारत तक का सफर

नितिश कुमार

भारतीय रेल, आधुनिक भारत के परिवहन हेतु सबसे महत्त्वपूर्ण साधन और इस देश की जीवन रेखा है। अपितु कह सकते हैं कि यह ऐसी सार्वजनिक सुविधा है जो देश के विभिन्न हिस्सों को जोड़ने के साथ-साथ राष्ट्रीय अखंडता का भी संवर्धन करती है। आकार और कार्यक्षेत्र की दृष्टि से भारतीय रेल एशिया का दूसरा सबसे बड़ा एवं संसार का चौथा सबसे विशाल नेटवर्क वाला रेलवे है, जो तकनीकी विकास के साथ आवागमन को सुगम और सुरक्षित बनाने के लिए विभिन्न उपयोगी तत्त्वों का उपयोग करती है। ***तो आइए आज के सफर में देखें कि हमारे भारतीय रेलवे का विकास किस प्रकार हुआ और वर्तमान में यह किस प्रकार संचालित है।***

इतिहास

भारत में रेल का इतिहास 185 वर्ष से भी अधिक पुराना है। स्वतंत्रता के पहले एवं उसके बाद से भारतीय रेल ने देश में परिवहन को नए रूप में परिभाषित किया है। भारत में रेलवे के लिए पहली बार प्रस्ताव दक्षिण भारत में सन 1832 ई. में पारित किया गया था। भारत में पहली ट्रेन 1837 ई. में मद्रास में लाल पहाडियों (रेड हिल) से चिंताद्रीपेट तक 25 कि.मी. चली थी। इसे सडक निर्माण के लिए ग्रेनाइट परिवहन के लिए बनाया गया था, जिसके निर्माण का श्रेय आर्थर कॉटन को दिया जाता है। इसमें विलियम एवरी द्वारा निर्मित रोटरी स्टीम लोकोमोटिव प्रयोग किया गया था।

गुजरते वक्त के साथ-साथ इसका भी विकास हुआ और सन 1850 में जब ईस्ट इंडिया कंपनी और ग्रेट पेनिनसुला रेलवे ने मिलकर बम्बई से थाणे तक रेल लाइन बिछाने का कार्य प्रारम्भ किया तब जाकर भारत की पहली यात्री रेलगाड़ी चली थी। हमारे देश की पहली यात्री ट्रेन 16 अप्रैल 1853 को दोपहर 3:30 बोरीबंदर (बॉम्बे) से एक विशाल भीड़ की जोरदार तालियों और 21 तोपों के सलामी के बाद ठाणे तक

कुल 34 किलोमीटर तक चली थी। इसका संचालन साहिब, सुल्तान और सिंध नामक तीन इंजनों द्वारा किया गया था। 14 बोगियों वाली इस ट्रेन में कुल 400 यात्रियों ने सफर किया था।

देश के पश्चिमी हिस्से के बाद अब बारी थी पूर्वी हिस्से की तो 15 अगस्त 1854 को पूर्वी हिस्से में पहली यात्री ट्रेन हावड़ा स्टेशन से 24 मील की दूरी पर स्थित हुगली तक चलाई गई थी। इस प्रकार ईस्ट इंडियन रेलवे के पहले खंड को सार्वजनिक यातायात के लिए खोल दिया गया था, जिससे पूर्वी हिस्से में रेलवे परिवहन की शुरुआत हुई थी।

बॉम्बे-पूना मेल सन 1863 ई. में प्रस्तावित होकर वर्ष 1869 में पहली बार चली थी। यह रोट इंडियन पेनिनसुला रेलवे द्वारा मुंबई और पुणे के बीच शुरू हुई यह पहली इंटरसिटी ट्रेन थी। यह ट्रेन, डेक्कन क्वीन एक्सप्रेस के साथ मिलकर

कई वर्षों तक मुंबई-पुणे यात्रियों की सेवा करती रही। यह ट्रेन रॉयल मेल ले जाने वाली और ब्रिटिश साम्राज्य की सबसे अच्छी ट्रेन थी।

कालका मेल (1 जनवरी 1866)

कालका मेल भारतीय रेलवे के इतिहास में सबसे पुरानी चलने वाली ट्रेन है। इस ट्रेन ने इस वर्ष 2023 को साल 157

बॉम्बे-पूना मेल (21 अप्रैल 1863)

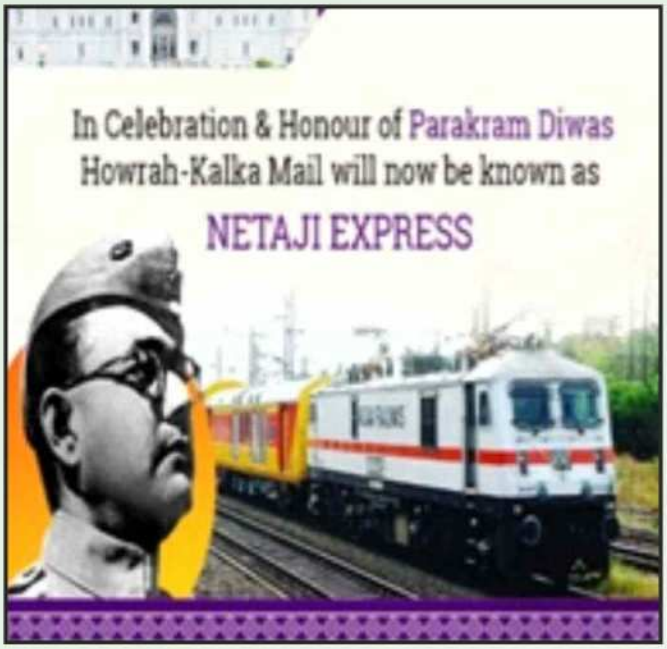

वर्ष पूरे किए हैं। यह ट्रेन 1866 में 01 अप और 02 डाउन नंबर प्लेट के साथ "ईस्ट इंडियन रेलवे मेल" के रूप में पटरी पर उतरी थी। देश की पहली सुपरफास्ट ट्रेन कालका मेल का नाम सरकार ने स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी सुभाषचंद्र बोस की जयंती को दृष्टिगत रखते हुए नेताजी एक्सप्रेस कर दिया गया है। वर्तमान में यह ट्रेन संख्या: 12311/12 नेताजी एक्सप्रेस के नाम से चल रही है।

पंजाब मेल (1 जून 1912)

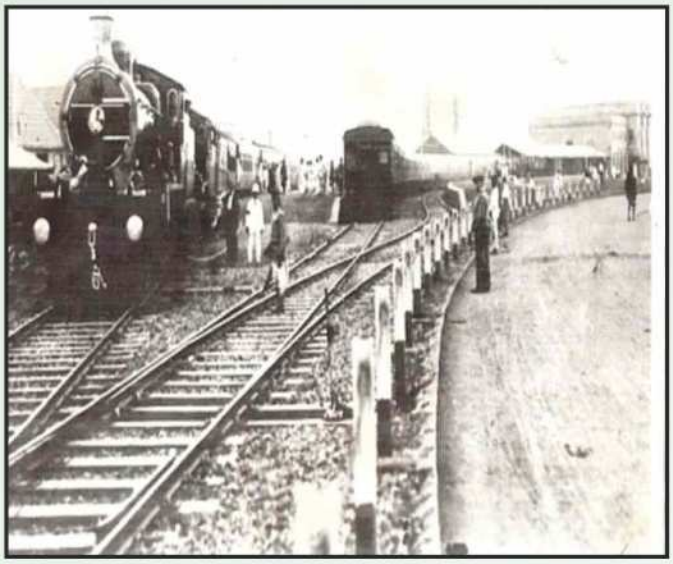

ऊपर तस्वीर में दिख रही पंजाब मेल भारतीय रेलवे की सबसे पुरानी और लंबी दूरी तय करने वाली ट्रेनों में से एक है। पहले इसे पंजाब लिमिटेड ट्रेन के रूप में जाना जाता था। आजादी के पहले शुरू हुई यह ट्रेन आज भी चल रही है। किसी जमाने में इस ट्रेन को ब्रिटिश भारत में सबसे तेज ट्रेन होने का तमगा हासिल था। पहले यह बाम्बे (मुंबई) से पेशावर छावनी में समाप्त होने से पहले इटारसी, आगरा, दिल्ली,अमृतसर और लाहौर से होते हुए पेशावर (पाकिस्तान) तक जाती थी एवं अब यह ट्रेन मुंबई से पंजाब

के फिरोजपुर तक जाती है। यह मध्य रेल की ट्रेन है। इसी साल 01 जून 2023 को इस ट्रेन ने 111 साल पूरे किए हैं।

फ्रंटियर मेल (1 सितंबर 1928)

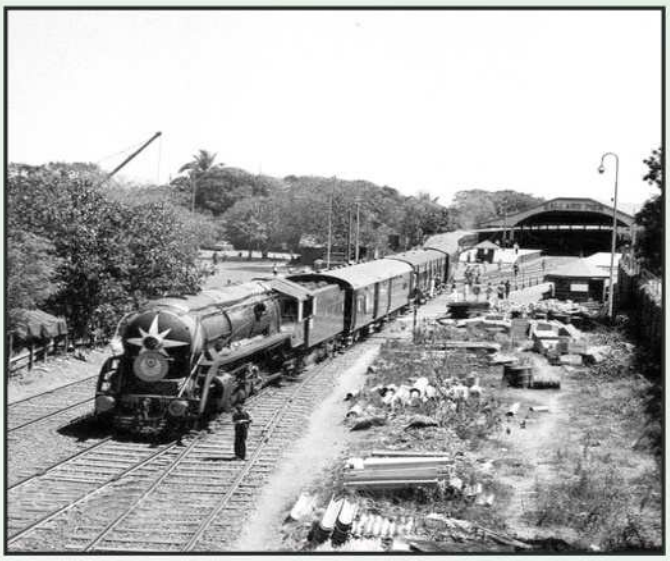

ऊपर तस्वीर में अंकित ट्रेन 'फ्रंटियर मेल' है। इस ट्रेन ने भी देश का बंटवारा देखा है। यह रेलगाड़ी पंजाब मेल चलने के लगभग 16 वर्ष बाद शुरू हुई थी। 1930 में द टाइम्स ऑफ लंदन ने इसे ब्रिटिश राज में चलने वाली सबसे प्रसिद्ध ट्रेनों में से एक के रूप में वर्णित किया था। 01 सितंबर, 1928 को यह ट्रेन पहली बार मुंबई से पेशावर तक चली थी। वर्ष 1934

में सबसे पहले इस ट्रेन में ए.सी. बोगी (तस्वीर बीच मे) लगाए गए थे और यह भारत की पहली वातानुकूलित बोगी वाली ट्रेन थी। आजादी के बाद यह सिर्फ बॉम्बे से अमृतसर तक जाती थी। वर्ष 1996 में इस ट्रेन का नाम 'गोल्डन टेम्पल एक्सप्रेस' कर दिया गया था एवं वर्तमान में भी यह ट्रेन संख्या-12903 मुंबई सेंट्रल से अमृतसर तक चल रही है।

ग्रैंड ट्रंक एक्सप्रेस (1 अप्रैल 1929)

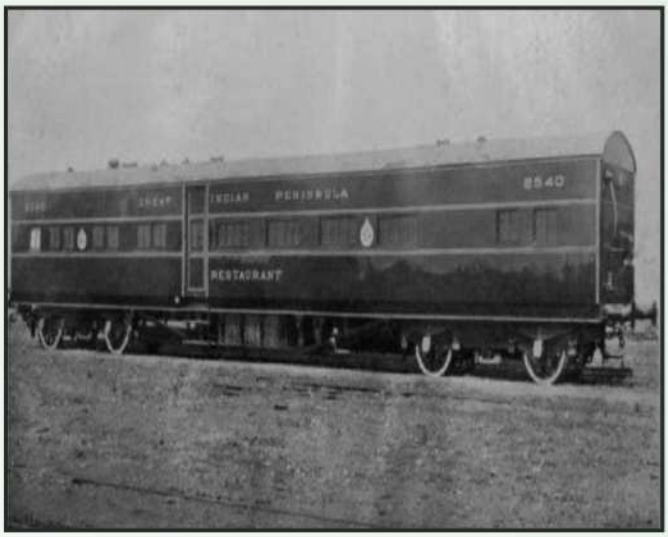

ग्रैंड ट्रंक एक्सप्रेस अथवा जी.टी एक्सप्रेस ब्रिटिश राज में चलने वाली सबसे पुरानी ट्रेनों में से एक है। प्रारम्भ में यह ट्रेन

पेशावर से मैंगलोर तक चली और यह ट्रेन अपनी पूरी यात्रा में लगभग 104 घंटे का समय लेती थी। यह देश के सबसे लंबे रेलमार्गों में शामिल था। बाद में इस सेवा को लाहौर मेट्टुपलायम तक बढ़ाया गया। वर्तमान में यह ट्रेन संख्याः 12616 दिल्ली से चेन्नई के बीच चल रही है।

उपरोक्त ऐतिहासिक ट्रेनें हमारे देश के इतिहास का हिस्सा हैं। बंटवारे के दौरान इन ट्रेनों में बड़ी संख्या में शरणार्थियों ने सफर किया था। देश के बंटवारे के समय जो दर्द और पीड़ा थी उसे इन ट्रेनों ने भी महसूस किया है। लेकिन समय की पटरी पर दौड़ते हुए इन्होंने बगैर थके अपने कर्तव्य का पालन किया और यात्रियों की सेवा की। उपरोक्त ट्रेनों में यात्रा करना और भारतीय रेलवे के समृद्ध इतिहास पर गौरव करना हमारा कर्तव्य बनता है।

सम्पूर्ण देश में ट्रेनों के परिचालन एवं प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से भारतीय रेल को अठारह (18) जोनों में बाँटा गया है।

1. उत्तर रेलवे 2. पूर्व रेलवे 3. पश्चिम रेलवे 4. मध्य रेलवे 5. पूर्वोतर रेलवे 6. पूर्वोतर सीमांत रेलवे 7. दक्षिण पूर्व रेलवे 8. दक्षिण मध्य रेलवे 9. दक्षिण रेलवे 10. दक्षिण पश्चिम रेलवे 11. उत्तर पश्चिम रेलवे 12. पश्चिम मध्य रेलवे 13. उत्तर मध्य रेलवे 14. दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे 15. पूर्व तटीय रेलवे 16. पूर्व मध्य रेलवे 17. कोंकण रेलवे 18. दक्षिण तटीय रेलवे।

भारतीय रेल के कुछ ट्रेनों को विश्व विरासत ट्रेनों का दर्जा प्राप्त है जो निम्नलिखित है:

- नीलगिरि पर्वतीय रेल जो पतली गेज की रेल व्यवस्था है इसे भी विश्व विरासत घोषित किया गया है।
- दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे जो पतली गेज की रेल व्यवस्था है उसे यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत घोषित किया गया है। यह रेल अभी भी भाप से चलित इंजनों द्वारा खींची जाती है। आजकल यह न्यू जलपाईगुड़ी से सिलीगुड़ी तक चलती है। इस रास्ते में सबसे ऊँचाई पर स्थित स्टेशन घूम है।
- कालका शिमला रेलवे जो पतली गेज की रेल व्यवस्था है इसे भी विश्वविरासत घोषित किया गयाहै।

भारतीय रेल ने पर्यटन हेतु भी कई ट्रेनों का विकास किया है।

1. पैलेस ऑन व्हील
2. डेकन ओडिसी
3. महाराजा एक्सप्रेस

उपरोक्त जोन समय-समय पर यात्रियों की सुविधा हेतु कई ट्रेन चलाते रहते हैं जो इस प्रकार है:

- राजधानी एक्सप्रेसः वर्ष 1969 में शुरू हुई यह ट्रेन भारत के बड़े-बड़े अथवा देश के प्रमुख शहरों को राजधानी दिल्ली से जोड़ती है। यह ट्रेन भारतीय रेल की सबसे तेज ट्रेनों में शामिल है जो लगभग 130-140 कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार तक चल सकती है।
- शताब्दी एक्सप्रेसः वर्ष 1988 में शुरू हुई यह ट्रेन वातानुकूलित इंटरसिटी है।
- जनशताब्दी एक्सप्रेसः वर्ष 2002 में शुरू हुई यह ट्रेन वातानुकूलित एवं बिना वातानुकूलित डिब्बों के साथ 120-130 कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली सस्ती ट्रेन है।
- जनसाधारण एक्सप्रेसः वर्ष 2004 में शुरु हुई यह ट्रेन पूरी तरह से अनारक्षित ट्रेन है जो आम जनमानस को सस्ता परिवहन सुविधा प्रदान करती है।
- गरीबरथ एक्सप्रेसः वर्ष 2005 में शुरू यह एक वातानुकूलित 3 टियर इकॉनमी वर्थ वाली ट्रेन है।
- संपर्क-क्रांति एक्सप्रेसः वर्ष 2005 में शुरू हुई दिल्ली को जोड़ने वाली सुपरफास्ट ट्रेन है।
- दुरन्तो एक्सप्रेसः वर्ष 2009 में शुरु हुई यह ट्रेन काफी कम स्टॉप के साथ भारत के मेट्रो शहरों और राज्यों की राजधानियों को आपस में जोडती है।
- युवा एक्सप्रेसः वर्ष 2009 में शुरू हुई इस ट्रेन में 60% से ज्यादा सीट 18-45 वर्ष के यात्रियों हेतु आरक्षित है।
- कविगुरु एक्सप्रेसः वर्ष 2011 में रविन्द्रनाथ टैगोर के सम्मान में शुरु की गई ट्रेन है।
- डबलडेकर एक्सप्रेसः वर्ष 2012 से शुरू पूर्ण वातानुकूलित दो मंजिला एक्सप्रेस ट्रेन है।
- विवेक एक्सप्रेसः स्वामी विवेकानंद की 150 वी वर्षगांठ पर 2013 में शुरू हुई असम से कन्याकुमारी को जोड़ने वाली यह ट्रेन भारत की सबसे लंबी दूरी तक चलने वाली ट्रेन है।
- गतिमान एक्सप्रेसः वर्ष 2016 में दिल्ली से वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी के बीच 160 किमी प्रति घंटे तक की रफ्तार से चलने वाली ट्रेन है। ये रेल हजरत निजामुद्दीन से वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी की 188 कि.मी. दूरी मात्र 100 मिनट में तय कर लेती है।
- हमसफर एक्सप्रेसः वर्ष 2016 प्रारम्भ हुई एक अच्छी साप्ताहिक ट्रेन है।
- तेजस एक्सप्रेसः वर्ष 2017 में शुरू हुई एक सेमी हाई स्पीड पूर्णतः वातानुकूलित ट्रेन है। इसमें दरवाजे के साथ आधुनिक ऑनबोर्ड सुविधाएं हैं जो स्वचालित रूप से संचालित होती हैं।

इसतरह वर्ष 2019 से वर्तमान में भारतीय रेल द्वारा संचालित "वंदे भारत" एक मध्यम दूरी की ट्रेन सेवा है। इस ट्रेन का नाम पूर्व में ट्रेन-18 था. जिसे बदलकर 'वंदे भारत' कर दिया गया, चुकी यह ट्रेन पूर्णतः स्वदेशी और इसे भारतीय इंजीनियरों द्वारा भारत में बनाया गया है, इसलिए इसका नाम 'वंदे भारत एक्सप्रेस' रखा गया।

लेख

आकांक्षाओं का बोझ

पीयूष कुमार
सहायक प्रशासनिक अधिकारी
निरीक्षण एवं समकक्ष समीक्षा अनुभाग

आज एक सज्जन से मिला। बड़े दुखी दिखे। वही बाप परेशान बेटे से, देश परेशान नेता से वाला मामला..... कहने लगे बेटा कुछ कर नहीं पाएगा। पढ़ता नहीं है। पिछले साल कम मार्क्स आए थे। पढ़ाई में मन नहीं लगाता है। हमेशा घूमने में ही लगा रहता है। सांत्वना देते हुए हमने कहा कोई बात नहीं समय के साथ सब कुछ ठीक हो जाएगा। वैसे अभी किस क्लास में पढ़ता है? पता चला कि अभी नाइन्थ में है। "अभी आप क्यों परेशान हो रहे है? वह तो अभी बहुत छोटा है। ज्यादा जोर देने से बच्चों का मानसिक विकास रुक जाता है। बच्चे को अपनी गति से विकास करने दीजिये..."। उसके बाद उन्होने मुझे ऐसे देखा कि मानो कि मेरे ही कारण उनके बच्चे का विकास रुक गया हो। खैर उन्होने कहा कुछ नहीं। कुछ देर बाद बोले कोई टीचर बताओ जो मेरे बच्चे को पढ़ा सके। यानि कि कोई टीचर ऐसा नहीं जो इनके बेटे को पढ़ा सके...। किस विषय का अध्यापक चाहिए आपको? मैंने भी यूं ही पूछ लिया। "... फिजिक्स, केमिस्ट्री, जूलोजी, बॉटनी, इंग्लिश, सोशल साइन्स..." कुछ देर की चुप्पी के बाद वे फूटे। कोई

विषय छूट तो नहीं गया। बाकी सब में ठीक है न.... कुछ तो बोलना ही था हमें। क्या ठीक है, खाक ठीक है। थोड़ा उत्तेजित होते हुए बोले वे। अभी कहीं पढ़ता है या नहीं? थोड़ा रुचि दिखाते हुए मैं बोला। पढ़ता है कई जगह, पर कुछ समझ में नहीं आता। लगता है टीचर अच्छे नहीं हैं। इसीलिए टीचर बदलने के बारे में सोच रहा हूँ। निराशाजनक स्वर में बोले वे। सुन कर ऐसा झटका लगा कि उन "सज्जन" को गाली देने का मन हुआ... कंट्रोल, कंट्रोल कंट्रोल । "आप कभी खुद पढ़ाते है अपने बच्चे को? कभी टाइम देते है अपने बच्चे को? कभी चेक किया है उसकी नोटबुक को...?" अपने पर नियंत्रण करके ये सवाल पूछा उनसे मैंने। कहाँ टाइम है अपने पास दिन भर ऑफिस करके रात में कहा टाइम बचता है और फिर अब पढ़ने की आदत छूट गई। इसीलिए इतने सारे ट्यूशन करा दिये थे,

सोचा था कुछ पढ़ लिख कर डॉक्टर बन जाएगा पर लगता है सारे सपने मिट्टी में मिल जाएंगे। भर्राई आवाज में बोले वे...। ओह हो तो डॉक्टर बनाना चाहते हैं। मुझे सहानुभूति हुई। क्यों डॉक्टर ही बनाना चाहते हैं आप? असल में बात यह है कि मैं डॉक्टर बनना चाहता था पर परिस्थितियाँ ऐसी हुई कि मैं डॉक्टर नहीं बन सका अब मैं चाहता हूँ कि मेरा बेटा मेरा सपना पूरा करे। एक ही बेटा है जिससे आशा कर सकता हूँ। आवाज मे थोड़ा गर्व भर कर वे बोले। अरे तेरी तो...। तो यह बात है। अब मेरी सहानुभूति गुस्से में बदल गई। मैंने अपने स्वर को तेज करते हुए पूछा कि क्या आप ब्रह्मा हैं? क्या अपने बेटे से जन्म लेने से पहले पूछा था कि तू डॉक्टर बन पाएगा या नहीं? अगर नहीं तो आप कौन होते है उसके भविष्य का फैसला करने वाले। आप भाग्य विधाता बनना चाहते है। अपने सपनों का बोझ किसी और के कंधों पर ढोना चाहते हैं आप। अपनी आकांक्षाओं का पिटारा उसके सिर पर लादना चाहते हैं ना। उसके डॉक्टर या पेंटर बनने का फैसला करने वाले आप कौन होते है...? मेरी सलाह मानिए कि पहले तो उसकी सारी ट्यूशन बंद कराइए और घर पर कुछ टाइम अपने ही नहीं बल्कि उसके सपनों के लिए भी निकालिए। तभी सच्चे अर्थों में एक अभिभावक का उत्तरदायित्व आप निभा पाएंगे। आगे जोडा कि बहुत टाइम बचेगा सारी ट्यूशन छोडने के बाद.... । आप चाहते है मल्टी टैलेंटेड डिज़ाइनर संतान हो। गाने, नाचने, बजाने, पढ़ने, लिखने सब में टॉप। टूट जाएगा वो। मेरी आवाज तेज होती चली गई। आँखें मुंदनें लगी। आँखै खोला तो देखा तो सामने कोई नहीं था। सामने सड़क की तरफ देखा तो वो भागते चले जा रहे थे। मैं चिल्ला कर बोला "टूट जाएगा वो...."। और मुझे पूरा यकीन है उन्होने सुन कर भी मेरी आवाज को सुना नहीं। आप सुन रहे है ना.....।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेख

भगवद् गीता
में आत्म प्रबंधन पर एक चर्चा

ऋचा
कनिष्ठ अनुवादक
मुख्यालय, नई दिल्ली

दर्शन हमारे दैनंदिन जीवन में बहुत महत्त्व रखता है। दर्शन केवल ज्ञान के प्रदर्शन और समुपार्जन के लिए नहीं है। उसका प्रयोजन है एक समुचित जीवन पद्धति का अन्वेषण और प्रतिपादन। जीवन में कई बार परिस्थियां हमारे वश में नहीं होती। ऐसे में हम परिस्थितियाँ तो बदल नहीं सकते लेकिन उनके प्रति अपनी दृष्टि बदल सकते हैं। दर्शन हमें जीवनदृष्टि बदलना सिखाता है। भारतीय दर्शन के एक आधार के रूप में भगवद् गीता यह कार्य भली-भाँति करते हुए एक काउंसलर की भूमिका निभाती रही है। भगवद् गीता सैकड़ों वर्षों से भारतीय दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक, सामाजिक चिंतन का आधार रही है। हमारे समाज की शक्ति रही है। भारतीय दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों विचारों का ऐसा प्रैक्टिकल समाहार प्रस्तुत किया है जो आम जन को जीवन में आने वाली कठिनाइयों को पार करना सिखाती है।

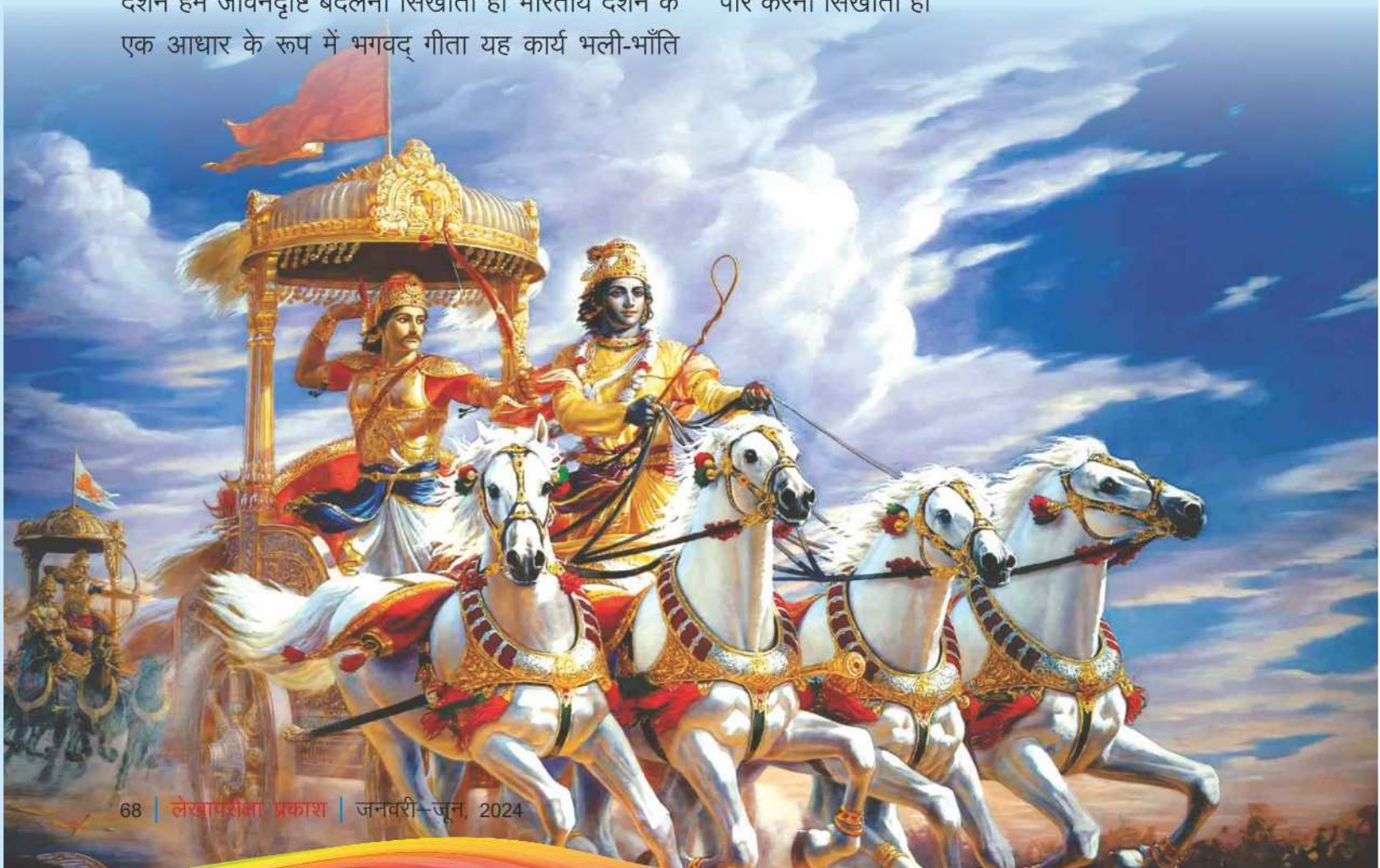

भगवद् गीता मनोविज्ञान के महत्त्व को अच्छी तरह समझती है। साथ ही सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार की भावनाओं की भूमिका भी जानती है। इसलिए भगवद्गीता अर्जुन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कर रही है। युद्ध न करने के निर्णय के पीछे की भावनाओं को परत दर परत खोलकर उनका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कर रही है। हमें अपने जीवन में भी हर निर्णय लेने से पहले उसके मूल में स्थित विचारों और भावों को जानना चाहिए एवं उनका अध्ययन विश्लेषण करना चाहिए।

युद्धक्षेत्र में खड़ा अर्जुन असमंजस की स्थिति में है।

न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो
यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः| 2/6

जब अर्जुन कह रहा है कि वह युद्ध नहीं करेगा तो वह किन भावों से प्रेरित है। कृष्ण इन सभी भावों को एक-एक कर विश्लेषित करते हैं। किसी भी निर्णय तक पहुँचने से पहले/कार्य करने से पहले हमारे अंतर्मन में चलने वाली दुविधा का मूल कारण अज्ञान होता है। स्वयं के विषय में अज्ञानता, अपनी योग्यताओं के विषय में अज्ञानता, लक्ष्य के विषय में अज्ञानता इत्यादि। ये अज्ञानताएं दुविधाओं को जन्म देती हैं। इन्हीं अज्ञानताओं/दुविधाओं में फंस कर हम निर्णय तक नहीं पहुँच पाते।

यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति।
तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च || 2/52

मोह (अज्ञानता) में फंसी बुद्धि कभी भी सही निर्णय नहीं ले पाएगी। अतः किसी भी कार्य को करने से पहले हमें सात्त्विकी बुद्धि चाहिए।

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये
भयाभये।
बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा
पार्थ सात्त्विकी || 18/30

सात्त्विकी बुद्धि से उस विषय के सन्दर्भ में पक्ष-विपक्ष सहित सम्पूर्ण ज्ञान चाहिए। सभी विकल्पों पर सोचने समझने के बाद निर्णय लेना है। भावी विपत्तियों, चुनौतियों का पूर्वानुमान करना और उनके प्रतिकार के यथोचित उपाय पहले से करना भी आवश्यक है। चुनौतियों से हमें डरना भी नहीं है बस उनका अनुमान और यथोचित प्रतिकार पहले से करना है। श्रीकृष्ण अर्जुन को इसी प्रकार निर्णय लेने को प्रेरित करते हैं। पहले अलग-अलग विकल्प, सूचनाएं इकट्ठा की जाए फिर उनमें अपने लिए उपयुक्तता का निर्णय लिया जाए।

श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि || 2/53

श्रीकृष्ण अर्जुन को कर्मयोग का सारा ज्ञान देकर अठारहवे अध्याय में कहते हैं-

इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरम् मया।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरू || 18/63

अर्थात् मैंने तुम्हें सारा ज्ञान दे दिया है अब जैसी तुम्हारी इच्छा हो वैसा करो। निर्णय लेने की प्रक्रिया का यह सबसे

महत्वपूर्ण मन्त्र है। अंत में निर्णय हमें स्वयं लेना है। हमारे शुभेच्छु गुरुजन मित्र हमें सलाह दे सकते हैं, हमें ज्ञान दे सकते हैं लेकिन अंत में निर्णय हमें स्वयं लेना है। जो निर्णय हम स्वयं लेते हैं। उसके प्रति हम जिम्मेदारी तथा उत्साह भी अधिक महसूस करते हैं। ऐसे निर्णय को हम पूरी कर्मठता से लक्ष्य तक पहुंचाते हैं।

निर्णय लेकर जब हम कार्य करना शुरू कर देते हैं तब भी बीच में ऐसी कई अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं जो हमें लक्ष्य से भटकाने लगती है। नई इच्छाएं उत्पन्न होने लगती हैं। पूर्व निर्णय के प्रति संदेह भी उत्पन्न होने लगता है। इन समस्याओं से बचने के लिए गीता कहती है कि हमें फल पर नहीं अपितु कर्म पर ध्यान देना चाहिए। यदि सारा ध्यान फल पर रहा तो दो बातें होंगी-

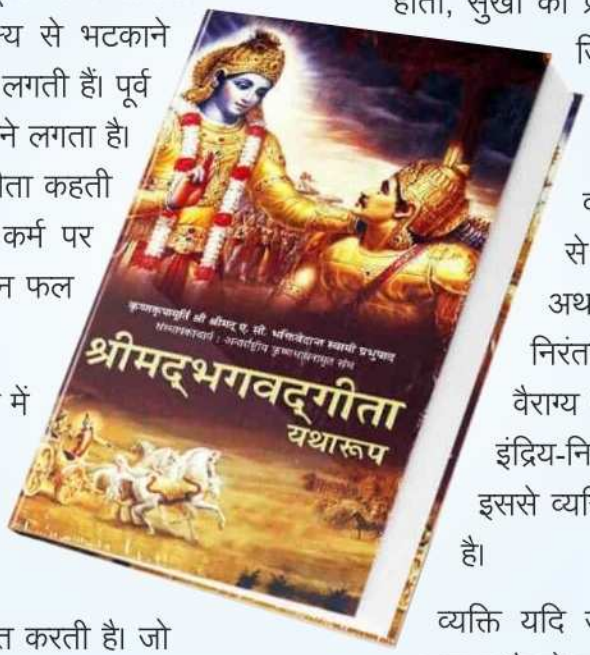

1) यदि फल सुलभ लगेगा तो कर्म में शिथिलता आएगी।
2) यदि फल दुर्लभ लगेगा तो भी कर्म में शिथिलता आएगी।

इसलिए गीता निष्काम कर्म की बात करती है। जो केवल कर्म करेगा, फल की चिंता नहीं करेगा वह असफलताएं आने पर भी कर्म नहीं छोड़ेगा।

योगस्थः कुरु कर्माणि संङ्ग त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्धयसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते || 2/48

समस्त आसक्तियों को त्यागकर तथा सिद्धि और असिद्धि में समान बुद्धि वाला होकर ही हमें कर्तव्य को करना है। इस प्रकार गीता हमें किसी भी निर्णय तक पहुँचने की राह बताती है।

व्यक्ति द्वारा निष्काम कर्म तब ही संभव है जब वह स्थितप्रज्ञ की अवस्था को प्राप्त कर ले। गीता में अर्जुन श्री कृष्ण से पूछते है- "हे मधुसूदन। ये स्थितप्रज्ञ क्या होता है?" तब श्री कृष्ण स्थितप्रज्ञ की अवधारणा के विषय में बोलते है

दुःखेष्वद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोध स्थित धीर्मुनिरुच्यते।।

अर्थात दुःखों की प्राप्ति होने पर जिसके मन में उद्वेग नहीं होता, सुखों की प्राप्ति में ज़ो सर्वथा निस्पृह है तथा जिसके राग, भय और क्रोध नष्ट हो गए है ऐसा व्यक्ति स्थित प्रज्ञ होता है। आगे श्री कृष्ण कहते है कि व्यक्ति निरंतर अभ्यास और वैराग्य से स्थितप्रज्ञ बन सकता है। अभ्यास अर्थात व्यक्ति को अपने कर्म का निरंतर मार्जन करते रहना चाहिए और वैराग्य का तात्पर्य है कर्मोन्मुख व्यक्ति को इंद्रिय-निग्रह का अनुपालन करना चाहिए। इससे व्यक्ति का ध्यान केवल कर्म पर रहता है।

व्यक्ति यदि जीवन में आनंद को प्राप्त करना चाहता है तो उसे गीता के निष्काम कर्मवाद को अपने जीवन में आत्मसात कर उसका अनुपालन करना चाहिए। ध्यातव्य है कि सांख्य दर्शन में आनंद और सुख को पर्यायवाची है, परंतु प्रत्यभिज्ञा दर्शन में आनंद को सुख और दुख से ऊपर की अवस्था माना गया है। अतः आज व्यक्ति के जीवन में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दबावों के कारण ज़ो बिखराव है उसे रोकने में निष्काम कर्मवाद प्रासंगिक हो सकता है। क्योकि बाह्य दबावों से मुक्त होकर किया गया कर्म ही स्थायी होता है, सनातन होता है, अनुकरणीय होता है।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कहानी

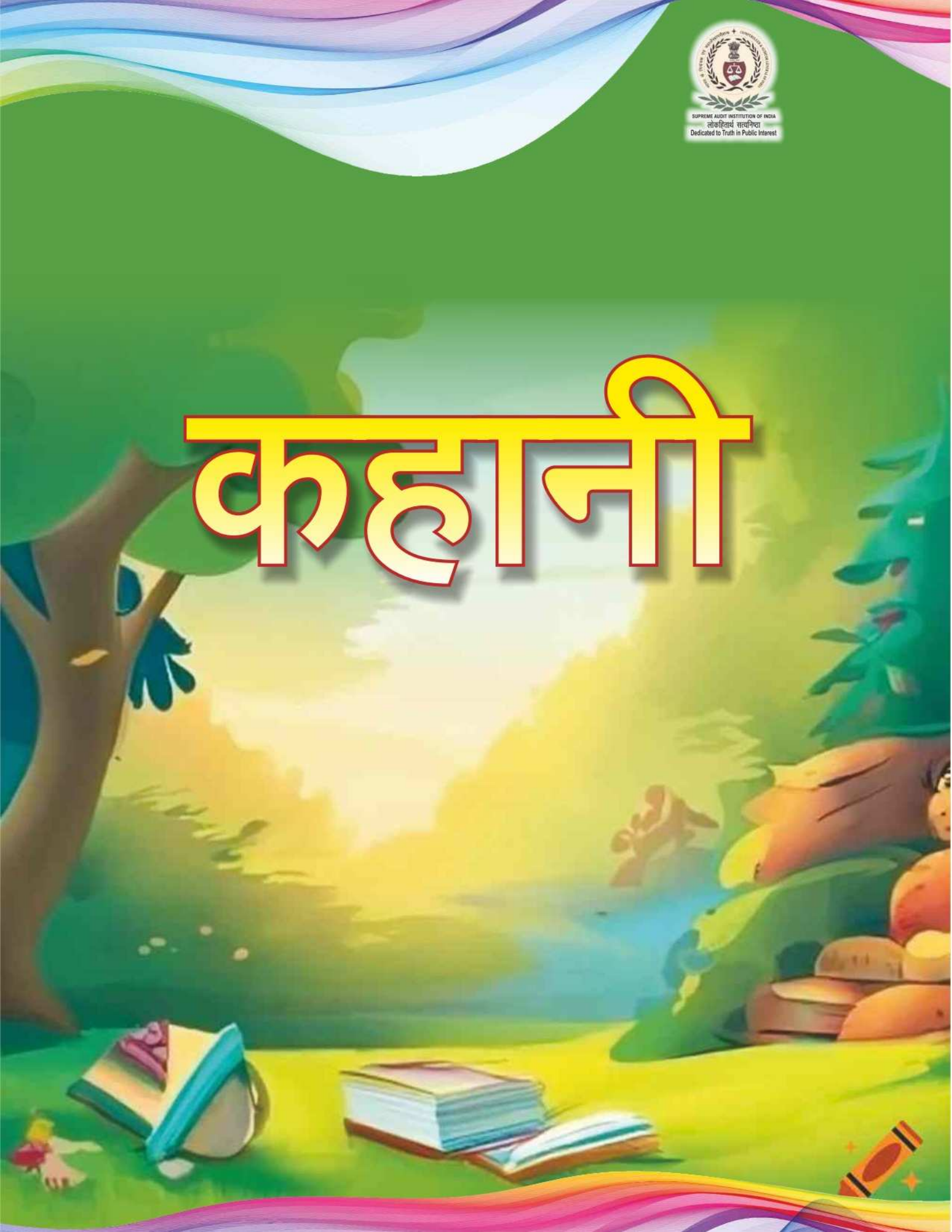

कहानी - लोककथा

नाउरू की किंवदंतियाँ

बिवाश रंजन मंडल
महानिदेशक (पश्चिम क्षेत्र),
सीएजी मुख्यालय, नई दिल्ली

(नाउरू सबसे अलग-थलग मध्य प्रशांत देश है जहां लेखक आईटीईसी के अन्तर्गत महालेखापरीक्षक के रूप में 2008 से 2011 तक तीन साल तक रहे।)

1. डेटोरा की कहानी: समुद्र का राजा

एक बार की बात है, डेनुनेंगावोंगो नाम का एक आदमी था। वह अपनी पत्नी ईदुवोंगो के साथ समुद्र के निचले हिस्से में रहता था। उनका एक बेटा था जिसका नाम मदारदार था। एक दिन, उसके पिता उसे पानी की सतह पर ले गए। वहाँ वह तब तक बहता रहा जब तक वह एक द्वीप के किनारे पर नहीं पहुँच गया, जहाँ उसे ईगेरुगुबा नाम की एक खूबसूरत लड़की मिली।

ईगेरुगुबा उसे अपने घर ले गया और बाद में दोनों की शादी हो गई। उनके चार बेटे हुए। सबसे बड़े का नाम अदुगुगिना, दूसरे का नाम डुवारियो, तीसरे का नाम अदुवारगे और सबसे छोटे का नाम अदुवोगोनोगोन था। जब ये लड़के बड़े होकर बड़े हुए तो वे बड़े मछुआरे बन गए। अब वे अपने माता-पिता से अलग रहने लगे। कई सालों बाद, जब उनके माता-पिता बूढ़े हो गए तो उनकी माँ ने एक और बेटे को जन्म दिया।उसका नाम डेटोरा रखा गया। जैसे-जैसे वह बड़ा हो रहा था, उसे अपने माता-पिता के साथ रहना और उनकी कहानियाँ सुनना अच्छा लगता था।

एक दिन, जब वह लगभग वयस्क हो गया था, वह बाहर घूम रहा था उसने एक डोंगी में कुछ लोगों को देखा। वह उनके पास गया, और उन्होंने उसे अपनी कुछ छोटी मछलियाँ दीं। वह उस मछली को घर ले गया और अपने माता पिता को दे दी। अगले दिन, उसने वही किया लेकिन, तीसरे दिन, उसके माता-पिता ने उसे अपने भाइयों के साथ मछली पकड़ने के लिए बाहर जाने के लिए कहा। इसलिए वह उनकी डोंगी में उनके साथ गया। जब वे शाम को लौटे, तो भाइयों ने डेटोरा को केवल सबसे छोटी मछली दी। डेटोरा घर गया और अपने पिता को इसके बारे में बताया। फिर उसके पिता ने उसे मछली पकड़ना सिखाया, और उसे अपने दादा-दादी के बारे में बताया, जो समुद्र के निचले हिस्से में रहते थे। उन्होंने उससे कहा कि, जब भी उसकी (मछली पकड़ने वाली) डोरी फंस जाए, तो उसे नीचे गोता लगाना चाहिए। और जब वह अपने दादा-दादी के घर आए, तो उसे अंदर जाना चाहिए और अपने दादा से अपने मुंह में रखे हुक देने के लिए कहना चाहिए; और उसे किसी भी

अन्य हुक को नहीं लेना चाहिए जो उसे दिया जाए।

अगले दिन डेटोरा बहुत जल्दी उठ गया और अपने भाइयों के पास गया। उन्होंने उसे कई गांठों वाली मछली पकड़ने वाली डोरी दी और हुक के लिए एक सीधी छड़ी का टुकड़ा दिया। समुद्र में, उन्होंने सभी ने अपनी डोरियाँ डालीं और, यदा कदा , भाइयों ने एक मछली पकड़ ली; लेकिन डेटोरा को कुछ भी नहीं मिला।

आखिरकार, वह थक गया और उसकी डोरी चट्टान में फंस गई। उसने अपने भाइयों को इसके बारे में बताया, लेकिन उन्होंने केवल उस पर ताने कसे। अंत में, उसने गोता लगाया। जैसे ही उसने ऐसा किया, उन्होंने अपने आप से कहा, 'वह कितना बेवकूफ आदमी है, वह हमारा भाई!' गोता लगाने के बाद, डेटोरा अपने दादा-दादी के घर पहुंचा। एक अजनबी लड़के को घर आते देख उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ।' तुम कौन हो?' उन्होंने पूछा। 'मैं देतोरा, मदारदार और ईगेरुगुबा का बेटा हूं,' उसने कहा। जब उन्होंने उसके माता-पिता के नाम सुने, तो उन्होंने उसका स्वागत किया। उन्होंने उससे कई सवाल पूछे और उस पर बड़ी दयालुता दिखाई। अंत में, जब वह प्रस्थान करने वाला था, याद करते हुए कि उसके पिता ने उसे क्या बताया था, उसने अपने दादा से उसे एक हुक देने के लिए कहा। उसके दादा ने उसे घर की छत से कोई भी हुक लेने के लिए कहा।

डेटोरा ने उन सभी को मना कर दिया, और उस एक के लिए कहा जो दादा ने अपने मुंह में लिया हुआ था। इसके द्वारा, दादा को पता चला कि डेटोरा को उनके पिता, मदारदार द्वारा निर्देश दिया गया था; तो उसने उसे अपने मुंह वाला हुक दिया। तब डेटोरा अपने भाइयों के पास वापस चला गया। जैसे ही वह डोंगी में कूदा, उसने देखा कि

एक बड़ी व्हेल उनकी ओर तैर रही है। उसने हुक को कुछ जादुई शब्द दोहराए और उसे जाने दिया। व्हेल को हुक पर पकड़ा गया था और उसने डोंगी को समुद्र से बाहर खींच लिया, जब तक कि वे दामो नामक द्वीप पर नहीं आ गए। दामो के लोग इस अजीब डोंगी और पांच अजीब पुरुषों को देखकर बहुत आश्चर्यचकित थे। इसलिए उन्होंने अपने कुछ आदमियों को यह देखने के लिए भेजा कि यह किस तरह की डोंगी है।जब दामो पुरुष उस अजीब दिखने वाली डोंगी के पास पहुंचे, तो उन्होंने पूछा कि वे कौन हैं ? क्या वे खोजकर्ता या मछुआरे हैं ? जवाब में देतोरा ने कहा, 'हम खोजकर्ता भी हैं और मछुआरे भी। तब दामो लोग किनारे पर लौट आए और अपने लोगों को बताया। इसलिए दामो के लोगों ने अपने पाँच मछुआरों को चुना और उन्हें उनके पास भेज दिया। जब वे देतोरा की डोंगी के पास पहुँचे, तो उन्होंने अपनी मछली पकड़ने वाली डोरियाँ लटका दीं और जल्द ही एक मछली को खींच लिया। उन्होंने डेटोरा और उसके भाइयों से उन्हें पकड़ी गई मछली का नाम बताने के लिए कहा। 'इरम' देतोरा ने कहा। यह सही नाम साबित हुआ।

दामो पुरुषों ने फिर से अपनी डोरियों को फेंका , और इस बार उन्होंने एक अलग तरह की मछली पकड़ी। 'इसका नाम क्या है?' उन्होंने पूछा। और डेटोरा ने जवाब दिया, 'एपे!' फिर से नाम सही था। इससे दामो के मछुआरे नाराज हो गए। देतोरा के शोरबा उसकी चतुराई पर बहुत हैरान थे। डेटोरा ने अब अपनी डोरी फेंकी और एक मछली खींच ली। उसने दामो आदमियों से उसका नाम पूछा। उन्होंने जवाब दिया 'इरम' लेकिन जब उन्होंने फिर से देखा, तो उन्होंने पाया कि वे गलत थे, क्योंकि डोरी के अंत में एक काला

सिर हिल रहा था । फिर से डेटोरा ने अपनी डोरी फेंकी और फिर से उसने उन्हें मछली का नाम देने के लिए कहा। 'एपे,' उन्होंने कहा। लेकिन जब उन्होंने देखा तो उन्हें डेटोरा की डोरी के अंत में सुअर के मांस की एक टोकरी मिली।

अब तक दामो पुरुष बहुत भयभीत थे, क्योंकि उन्हें एहसास हुआ कि डेटोरा जादू का उपयोग कर रहा था।

डेटोरा की डोंगी को दूसरे के बगल में खींच लिया गया था, और उसने और उसके भाइयों ने दामो पुरुषों को मार डाला और उनके सभी मछली पकड़ने के समान ले लिए। जब तट पर लोगों ने यह सब देखा, तो वे जान गए कि उनके लोग मछली पकड़ने की प्रतियोगिता में हार गए थे, क्योंकि उन दिनों इस तरह की मछली पकड़ने की प्रतियोगिता के विजेताओं के लिए अपने विरोधियों को मारने और मछली पकड़ने का सामान लेने का रिवाज था। इसलिए उन्होंने एक और डोंगी भेजी। इस बार भी पहले की तरह ही हुआ और दामो के लोग बहुत भयभीत हो गए और समुद्र तट से भाग गए। तब डेटोरा और उसके भाइयों ने अपनी डोंगी को किनारे की ओर खींच लिया। जब वे चट्टान पर पहुंचे, तो डेटोरा ने अपने चार भाइयों के साथ डोंगी को नीचे गिरा दिया; डोंगी चट्टान में बदल गई। डेटोरा द्वीप पर अकेला उतरा। जल्द ही, वह एक ऐसे व्यक्ति से मिला, जिसने उसे चट्टान पर मछली पकड़ने में एक प्रतियोगिता के लिए

चुनौती दी । उन्होंने एक मछली देखी और दोनों उसका पीछा करने लगे। डेटोरा इसे पकड़ने में सफल रहा, जिसके बाद उसने दूसरे व्यक्ति को मार डाला और चला गया। आगे के और भी तटों पर , डेटोरा ने सभी प्रतियोगिता जीती और अपने हर प्रतिद्वंदी को मार डाला।

डेटोरा अब द्वीप का पता लगाने के लिए निकल पड़ा। भूख लगने पर, वह एक नारियल के पेड़ पर चढ़ गया और कुछ पके हुए मेवों को नीचे गिरा दिया, जिसका दूध उसने पिया। नारियल की भूसी के साथ, उसने तीन जगह आग लगाई। जब आग तेज जल रही थी, तो उसने कुछ नारियल की छाल फेंक दी, और इससे एक मीठी गंध आई। फिर वह आग से कुछ गज की दूरी पर रेत पर लेट गया। वह लगभग सो रहा था जब उसने देखा कि एक मटमैला चूहा आग की ओर आ रहा है। इसने पहली दो जगहों की आग से नारियल खा लिया और, जैसे ही वह तीसरी आग से नारियल खाने वाला था, डेटोरा ने उसे पकड़ लिया और उसे मारने ही वाला था। लेकिन छोटे चूहे ने डेटोरा से विनती की कि वह उसे न मारे। 'कृपया मुझे जाने दो और मैं आपको कुछ बताऊंगा' उसने कहा। डेटोरा ने उस चूहे को छोड़ दिया, जो अपना वादा निभाए बिना भागने लगा। डेटोरा ने फिर से चूहे को पकड़ लिया, और छड़ी का एक छोटा सा तेज टुकड़ा उठाकर, चूहे की आंखों के माध्यम से छेद करने की धमकी दी। चूहा डर गया और बोला, 'उस बड़े पत्थर के ऊपर से उस छोटे से पत्थर को लुढ़काओ और देखो क्या मिलता है। डेटोरा ने पत्थर को लुढ़का दिया और जमीन के अंदर की ओर जाने वाला एक मार्ग पाया। छेद में प्रवेश करते हुए, उसने एक संकीर्ण मार्ग के साथ अपना रास्ता बनाया और चलते चलते वह लोगों के साथ चलने और जाने वाली सड़क पर आ गया।

डेटोरा उनके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को समझ नहीं पा रहा था। अंत में उसे एक युवक मिला जो उसकी भाषा बोलता था, और उससे देटोरा ने अपनी कहानी सुनाई। युवक ने उसे नई भूमि के कई खतरों के खिलाफ चेतावनी दी, और उसे उसका मार्ग दिखाया। देटोरा आखिरकार एक ऐसी जगह पर आया जहां उसने खूबसूरत डिजाइनों वाले बारीक मैट से ढका हुआ एक मंच देखा। मंच पर रानी लूस बैठी थी, उसके चारों ओर उसके सेवक खड़े थे।

रानी ने डेटोरा का स्वागत किया और धीरे धीरे वह उससे प्रेम करने लगी। जब कुछ सप्ताह बाद डेटोरा ने घर लौटने की इच्छा जताई तो लूस-रानी ने उसे जाने की अनुमति नहीं दी। लेकिन, अंततः जब उसने उसे पत्थर के नीचे दबे अपने चार भाईयों के बारे में बताया, जिन्हें उसके जादू के अलावा किसी और उपाय से नहीं निकाला जा सकता था, तो उसने उसे आगे बढ़ने की अनुमति दे दी। वह जिन लोगों से मिला, उनमें से कई उसे नुकसान पहुंचाना चाहते थे, लेकिन डेटोरा ने जादुई मंत्र से उन सभी पर काबू पा लिया। अंत में वे उस चट्टान के पास पहुंचे जहां डेटोरा ने अपने भाइयों को छोड़ा था। वह नीचे झुका, एक जादुई मंत्र दोहराया, और वह बड़ी चट्टान एक डोंगी में बदल गई जिसमें उसके चार भाई सवार थे। सभी भाई मिलकर अपने देश के लिए रवाना हो गए।

समुद्र में कई दिन बिताने के बाद, उन्हें दूर अपना घरेलू द्वीप दिखाई दिया। जैसे ही वे उसके पास पहुंचे, डेटोरा ने भाईयों से कहा कि वह उन्हें छोड़कर समुद्र की तलहटी में उनके दादा-दादी के पास रहने जा रहा है। उन्होंने उसे अपने साथ रहने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन वह डोंगी के किनारे से कूद गया और नीचे चला गया। भाई अपने माता-पिता के पास पहुंचे और अपनी रोमांचक कहानी सुनाई।

जब डेटोरा अपने दादा-दादी के घर पहुंचा तो उन्होंने उसका शानदार स्वागत किया। दादा-दादी की मृत्यु के बाद, डेटोरा समुद्र का राजा और मछली पकड़ने और मछुआरों का प्रेरणा स्रोत बन गया। और आजकल, जब भी मछली पकड़ने की डोरियाँ या हुक डोंगी से खो जाते हैं, तो यह माना जाता है कि वे डेटोरा के घर की छत पर पड़े हैं।

डेटोरा की कहानी का अंत.....

2. ईगीगू वृक्ष की कथा

एक बार की बात है एक महिला थी जो अपने पति एवं तीन बेटियों के साथ नौरू में रहती थी। उस औरत का नाम ईगीगू था तथा यही नाम उसकी तीन बेटियों का भी था। उसके पति का नाम गादिया था। एक दिन जब महिला अपने दैनिक कामों में व्यस्त थी तब उसकी सबसे बड़ी बेटी ने उसे बाहर बुला कर बताया कि उसका पहला मासिक धर्म शुरू हो गया है। उसके बाद, लड़की की माँ ने उसे अपने पिता, गादिया के पास भेजा तथा कहा कि उसे पहनाने के लिए प्रथागत गहने मांगे। तो सबसे बड़ी बेटी ने वही किया जो उसकी माँ ने उसे करने के लिए कहा। इसके तुरंत बाद, दूसरी बेटी ने अपनी माँ को बाहर बुला कर बताया कि उसका पहला मासिक धर्म शुरू हो गया है। माँ उससे वहीं करने के लिए कहा जो उसने सबसे बड़ी लड़की को करने के लिए कहा था, तथा उसे अपने पिता से गहने

लेने के लिए भेजा। थोड़ी देर बाद, तीसरी बेटी जो सबसे छोटी थी ने अपनी माँ को बुलाया और उसे सूचित किया कि उसने भी यौवन प्राप्त कर लिया था। लेकिन माँ अब गुस्से में थी, उसने लड़की को डांटा ताकि वह उसके पिता के पास जाने के बजाय वह अपने गहने स्वयं प्राप्त करें, वह उदास होकर समुद्र तट की ओर चली गई। लेकिन जब वह जा रही थी तो उसे अपने रास्ते में पड़ा एक बीज मिल गया। वह इसे नियमित रूप से पानी देती रही और यह लंबा और लंबा होता गया, जब तक कि, यह आकाश तक नहीं पहुंच गया। फिर वह इसके ऊपर चढ़ गयी; उसने पेड के नीचे की शाखाओं से तोड़ दिया ताकि कोई और उसके बाद ऊपर न चढ़ सके।

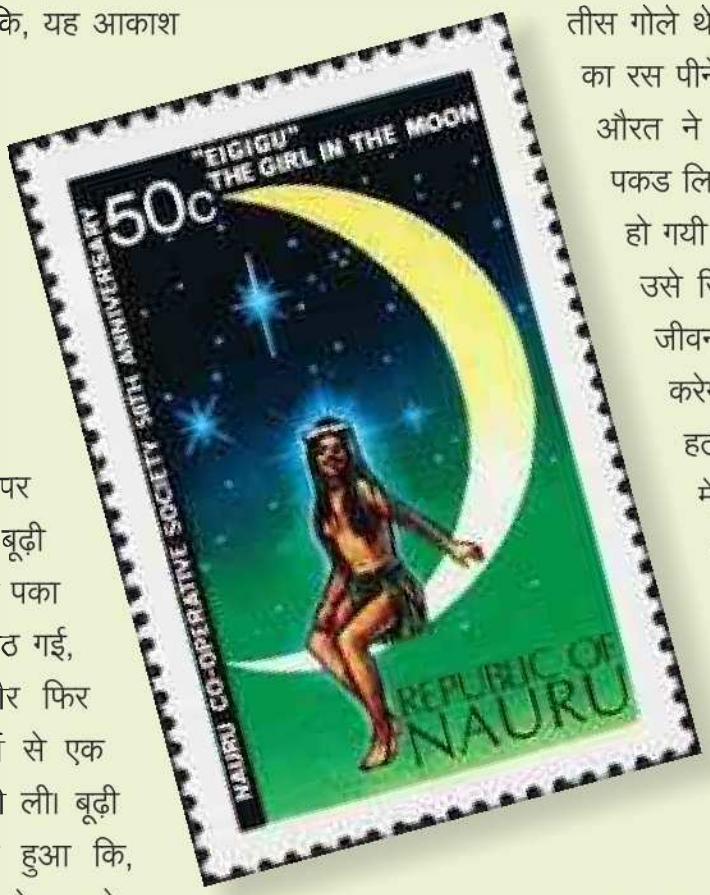

आखिरकार वह आसमान पर पहुँच गई। वहाँ उसे एक बूढ़ी अंधी औरत मिली जो ताड़ी पका रही थी। वह उसके पास बैठ गई, वह उसे देखती रही, और फिर उसने नारियल के गोले में से एक लिया और उसकी ताड़ी पी ली। बूढ़ी अंधी औरत को अहसास हुआ कि, उसके रखे गोलों के बीच में से एक गोला क्यों गायब लग रहा था, लेकिन उसे यह संदेह नहीं था कि कोई और भी वहाँ पर था जो इसे चोरी कर सकता था।

तब ईगु ने एक और गोला खोल लिया और उसका भी रस पी लिया, अब उसने एक तिहाई ताडी पी ली थी। जब बूढ़ी औरत को एहसास हुआ कि उसके तीनों नारियल यहां नहीं है, तो उसे लगा कि कोई न कोई पास में है जो उन्हें ले जा रहा था, तब बूढ़ी औरत इस व्यक्ति को पकड़ने का दृढ़ संकल्प लिया। ईगीगु को खतरे का एहसास नहीं हुआ लेकिन एक के बाद एक गोले में से रस पीना जारी रखा। अब, वहां ताड़ी के रस के कम से कम से तीस गोले थे, और ईगीगु अब तीसवें गोले का रस पीने वाली थी कि तभी उस बूढ़ी औरत ने उसकी कलाई को तेजी से पकड लिया। इससे ईगीगु बहुत भयभीत हो गयी और वादा किया कि यदि वह उसे रिहा कर दे तो, वह अपने पूरे जीवन उस बूढ़ी औरत की सेवा करेगी। लेकिन बूढ़ी औरत बहुत हठी थी, और बोली, 'नहीं, तुम मेरे तीन बेटों के घर आने तक इन्तज़ार करोगी'। ईगीगु ने फिर से निवेदन किया, और कहा कि वह बूढ़ी औरत का अंधापन ठीक कर देगी। बूढ़ी औरत इसके लिए राजी हो गई। ईगीगु ने फिर एक जादू बुदबुदाया और बूढ़ी औरत की आँखों में फूँक दिया। उसने इस तरह छिपकलियों और अन्य कीड़ों की सभी किस्मों के साथ ऐसा किया, और, वे सभी बाहर आ गए, वहीं बूढ़ी औरत को लगने लगा कि अब उसके बेटे जल्दी लौटने वाले हैं तो, उसने ईगीगु से कहा कि वह खुद को एक बड़े सीप के

खोल में छिपाए, जो पास में पड़ा था, और उसे किसी भी वजह से बाहर न आए, ऐसा न हो कि उसका कोई बेटा उसे ढूंढ़ ले।

ईगीगु ने वहीं किया जो उसने बोला और, अभी वह ठीक से छिप भी नहीं पाई थी कि, बूढ़ी औरत का सबसे बड़ा बेटा वहां आ गया। उसका नाम एकवान (उसका बेटा) था। जब वह वहाँ आया जहाँ उसकी माँ बैठी थी, तो उसने आस-पास देखा और कहा, 'मुझे कुछ नई गंध आ रही है!' लेकिन उसकी माँ ने नाटक किया कि वह तो अभी भी अंधी थी और बोली, 'तुम भूखे हो, बेहतर होगा कि कहीं बाहर जाकर खाने के लिए कुछ ढूंढ़ लो'। तो इकवान कहीं और खाना ढूंढ़ने चला गया।

इसके तुरंत बाद बूढ़ी औरत का दूसरा बेटा आ गया। उसे देबाओ (मेघगर्जन) कहा जाता था। उसने भी हवा सूँघकर अपनी माँ से कहा, 'माँ, मुझे कुछ नई गंध आ रही है!' लेकिन फिर बूढ़ी औरत ने अंधे होने का नाटक किया, और उससे कहा, 'तुम भूखे हो, और बेहतर होगा कि खाने के लिए तुम बाहर कुछ तलाश करो'। तो देबाओ भी चले गया।

अंत में बूढ़ी औरत का तीसरा बेटा आ गया। उसे मारामन कहा जाता था। उसने भी यही कहा, 'माँ, 'मुझे कुछ नई गंध आ रही है!' फिर उसने जवाब दिया कि 'जाओ और वहाँ पर उस सीप के खोल के अंदर देखो'। तो वह वहाँ गया जहाँ सीप का खोल था, और उसे खोला और अंदर उसने को ईगीगु को पाया। उसने उसे छिपी हुई जगह से बाहर खींच लिया। फिर उसकी माँ ने अपनी पलकें उठाईं, जो उसने

अपने अंधेपन के अपने नाटक के कारण नीची रखी थी, और मारमेन से कहा कि, 'मेरी आँखों को देखो, मैं अब अंधी नहीं हूँ। उस लड़की ने मुझे ठीक कर दिया'। तब उसने मारामन से कहा कि उसे ईगीगु से विवाह करना है, और वह उसकी अच्छी तरह से देखभाल करे क्योंकि उसने उसकी माँ को दृष्टि दी थी। इसलिए मैरामेन ने ईगीगु से शादी की, और रात में आप अभी भी अक्सर उन्हें देख सकते हैं। मारामेन ईगीगु को अपनी बाहों में पकड़े हुए (युवा चाँद के साथ उसकी बाहों में बूढ़ा चाँद)। आप नारियल के गोले से उगती भाप भी देख सकते हैं जिसमें बूढ़ी औरत अपनी ताड़ी का रस पका रही है, इस वजह से आकाश में बादल भी हैं। बूढ़ी औरत का नाम एनीबरारा है।

नई शुरुआत

अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (राजभाषा)
भारत के नियंत्रक एवं
महालेखापरीक्षक का कार्यालय,
नई दिल्ली 110002

मेरी भतीजी बारहवीं की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गई है। सामाजिक तानाबाना ऐसा है कि किसी से बताया नहीं जा सकता। पास पड़ोस के लोगों से झूठ बोलकर काम चलाया जा सकता है पर रिश्तेदार....?

कुछ लोग तो पास होने की भी मिठाई पर दावा कर देते हैं। वह भी खिलाई जा सकती है पर जब सचमुच ऐसा हुआ हो तो...! फेल होने की मिठाई तो खुद के भी गले नहीं उतरेगी। वह कल से कमरे में ही बंद है । रो रही है। भाई के चेहरे पर व्यंग्यात्मक मुस्कान है जिसने तीन साल पहले ही छियानवे प्रतिशत पाए थे। कह रहा है "....मत रो गुड़िया, तुझे कौन सी नौकरी करनी है ? शादी करके दूसरे घर ही तो जाना है" भतीजी मुझसे प्रोफेसर बनने की बातें किया करती थी। उसे अच्छा लगता था कि विद्यार्थी मैडम मैडम कहते हुए उसके आगे पीछे डोलें। मुझसे बता रही थी कि वह किस कालेज को ज्वाइन करना चाहती है। अपनी सहेलियों के साथ उसने ग्रुप भी बना लिया था। मैं उसके कमरे में गया तो मेरी तरफ देखा भी नहीं। आँसू बहाती हुई चुपचाप दीवार की ओर ताकती रही। शायद नजर नहीं मिलाना

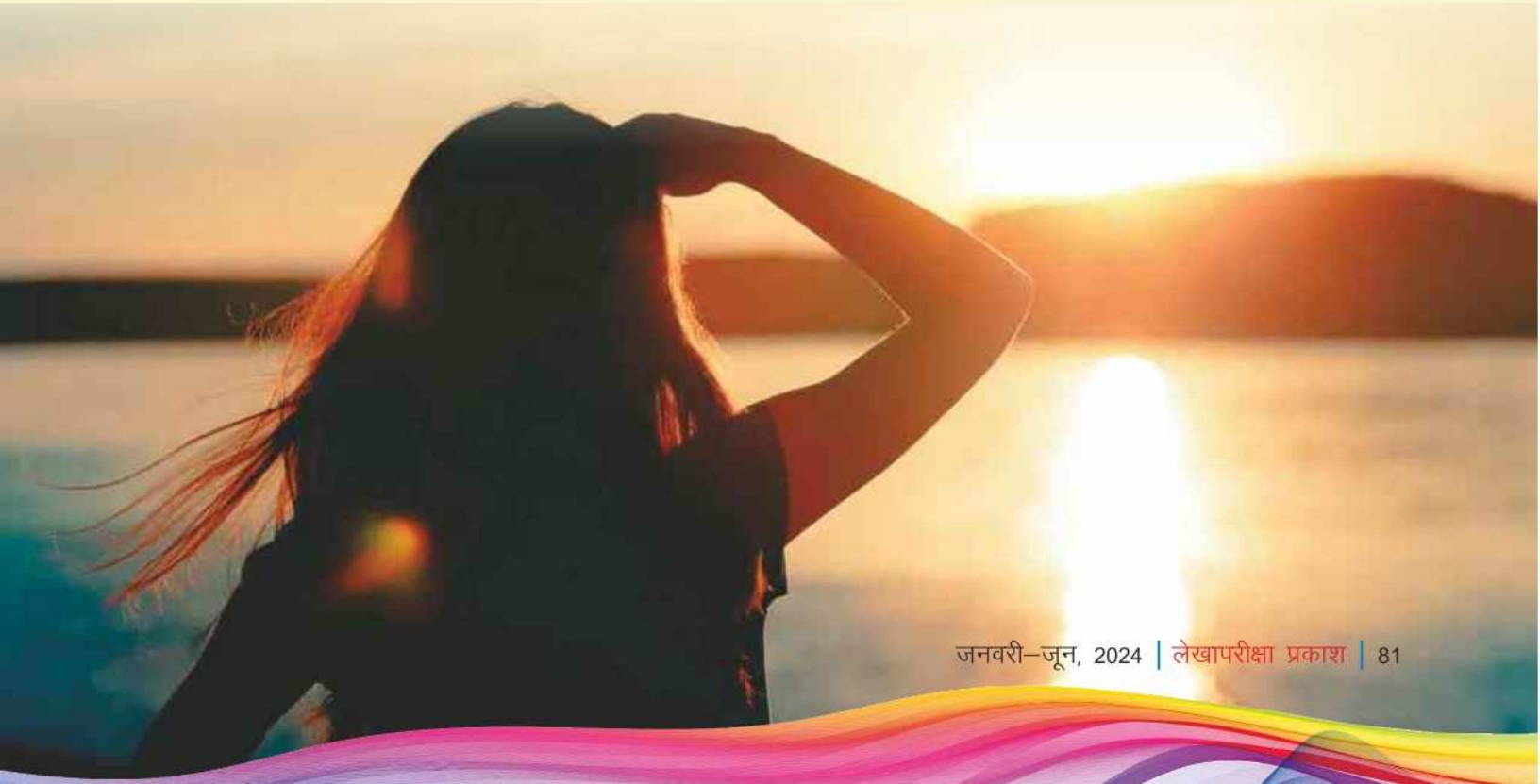

चाहती वह किसी से। मोबाइल उसके हाथ में निर्जीव पड़ा हुआ था।

मैंने उसके हाथ से मोबाइल ले लिया तो कुछ गीला गीला सा आभास हुआ। "...पापा ने कहा था - फेल होने पर मोबाइल छीन लेंगे पर आप ने तो अभी से...!" कहते हुए फिर से सुबकने लगी। आँसुओं की बूँदें टप टप करके मोबाइल भिगो रही थीं। "...वैसे भी अब मोबाइल का क्या करना... मैंने ग्रुप ही छोड़ दिया।" अब उसके आँसू सूख चुके थे।

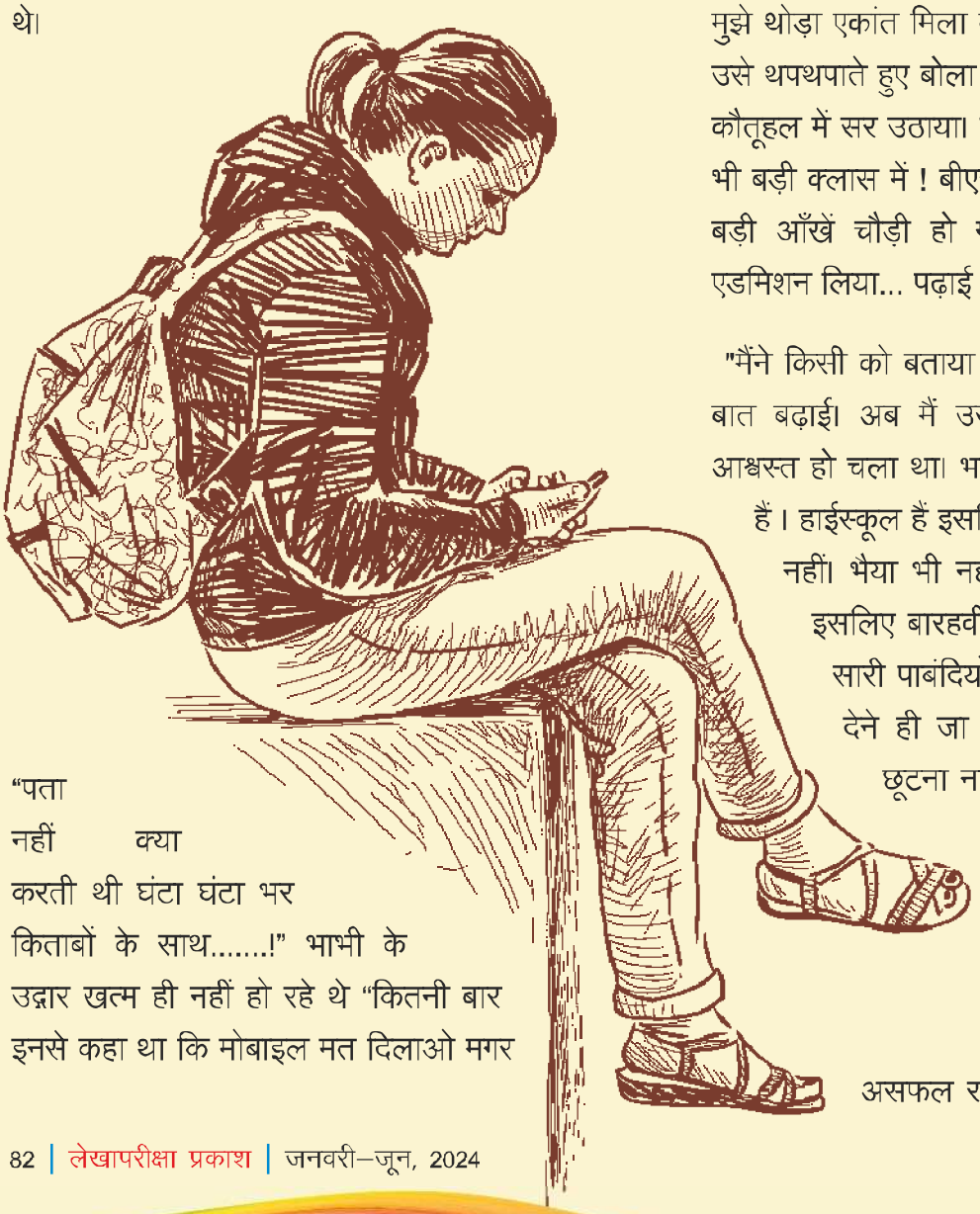

"पता नहीं क्या करती थी घंटा घंटा भर किताबों के साथ.....!" भाभी के उद्गार खत्म ही नहीं हो रहे थे "कितनी बार इनसे कहा था कि मोबाइल मत दिलाओ मगर नहीं....! बाप बेटी मिलकर बुद्धू बनाते रहे साल भर...." बड़ बड़ करती हुई भाभी सामान समेटती हुई किचन में चली गईं लेकिन वहीं से फिर हाँक लगाई "....और तेरा अगर रोने धोने का प्रोग्राम निपट गया हो तो चाचा को चाय बना दे....अब तो पढ़ाई लिखाई का चक्कर बंद कर दे..... मैं कपड़े धोने जा रही हूँ....साल भर घर का काम करती तो कम से कम मुझे आराम मिल जाता...." भाभी किचन से ही बड़बड़ा रही थीं।

मुझे थोड़ा एकांत मिला तो गुड़िया के सर पर हाथ रखा.... उसे थपथपाते हुए बोला "... मैं भी फेल हो चुका हूँ", उसने कौतूहल में सर उठाया। मैंने फिर दोहराया - " हाँ, और वह भी बड़ी क्लास में ! बीएस-सी में...!" "सच...!" उसकी बड़ी बड़ी आँखें चौड़ी हो गई थीं। "फिर आपने आगे कैसे एडमिशन लिया... पढ़ाई कैसे हो पाई ?"

"मैंने किसी को बताया थोड़े ही था" मैंने आँख मारते हुए बात बढ़ाई। अब मैं उसकी प्रतिक्रिया के बारे में थोड़ा आश्वस्त हो चला था। भाभी निम्न मध्यम वर्गीय परिवार से हैं। हाईस्कूल हैं इसलिए लड़कियों की पढ़ाई की पक्षधर नहीं। भैया भी नहीं, पर गुड़िया को मानते बहुत हैं इसलिए बारहवीं में दाखिला तो करा दिया पर ढेर सारी पाबंदियों और शर्तों के साथ। सिर्फ परीक्षा देने ही जा सकोगी, घर के किचन का काम छूटना नहीं चाहिए। हमारे पास ट्यूशन और कोचिंग के लिए पैसे नहीं हैं, यहाँ यह बता देना जरूरी है कि बंटी की इंजीनियरिंग की कोचिंग की भारी भरकम फीस उन्होंने दो साल तक वहन की थी, फिर भी असफल रहने पर डिग्री कालेज में बीएस-सी

में दाखिला कराया था ये कहते हुए कि रिंकू (मैंने) ने भी तो बीएस-सी की थी।

सरकारी नौकरी की आड़ में हमारे कई "पाप" छुप जाते हैं। हमारे कई पापों में से एक था.... स्नातक को करीब सात वर्षों में उत्तीर्ण करना। जी नहीं, विश्वविद्यालय का सत्र विलम्बित नहीं था, हमारा भाग्य ही विलम्बित चल रहा था। मगर अपनी चमड़ी की मोटाई तो देखिए कि मजाल जो कभी चेहरे पर शिकन आई हो...! सौभाग्यवश कुछ हमारे मित्र भी ऐसे थे जो हमारा साथ बखूबी निभा रहे थे। इसी अभियान में हमारे कुछ जूनियर हमारे सहपाठी बन चुके थे और एक दो साल में उनके सीनियर बनने की सँभावना भी बलवती हो चली थी। एक दौर यह भी आया था कि विषय का जोरदार अध्ययन ही हम उसकी परीक्षा देने के बाद प्रारंभ करते थे,एक नए संकल्प व जुनून के साथ। एक सच यह भी हमें पढ़ाई के अतिरिक्त कोई दूसरा काम न आता था। बस इस काम में वेतन नहीं मिलता था वैसे लगन की कोई कमी न थी।

गुड़िया को हमारी कहानी परी कथा सरीखी लग रही थी। उसे यह भी समझा दिया था कि रात को भैया के आने तक मैं रुका रहूँगा और उन्हें समझाकर ही जाऊँगा।

इतना एग्रीमेंट हमारे और गुड़िया के बीच समोसे, पकौड़ों और नमकीन के दौरान हो चुका था। अब वह पहले की तरह हँसमुख नजर आ रही थी। उसने मोबाइल को चमकाते हुए एक नया वाट्सएप ग्रुप भी बनाना शुरू कर दिया था। वह इस सत्य को जान गई थी कि फेल होने के आगे भी जिंदगी है, और बड़ी अनमोल है। फेल होने वाले, और बार बार फेल होने वाले भी सरकारी नौकरी पा सकते हैं। उसने नई शुरुआत की ओर कदम बढ़ा दिए थे।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कहानी

विवशता

अमरेंद्र कुमार चौधरी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (वाणिज्यिक)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
कर्नाटक, बेंगलुरू

रमेश कार्यालय से आज जल्दी घर वापस आ गया था। मन बहुत बेचैन था। उसका तबादला कोलकाता से दिल्ली हो गया था। वापस वही शहर, वही माहौल, वही नजारा क्योंकि इससे पहले भी वह एक बार दिल्ली रह चुका था। उस समय उसकी प्रथम नियुक्ति थी, फिर मसूरी, कोलकाता और अब फिर दिल्ली। दिल्ली में जो उसे मिला और जो उसने खोया शायद उस वक्त उसने सोचा भी न था। दूसरे दिन वह अपना स्थानांतरण पत्र लेकर दिल्ली के लिए 'राजधानी एक्सप्रेस' से रवाना हो गया।

एक सीधे-सादे मध्यमवर्गीय परिवार से था रमेश। पिताजी प्राइवेट कॉलेज में गणित विभाग के मुख्य व्याख्याता थे। तनख्वाह के नाम पर कुछ भी न था, बस कभी कभार वहां के प्राचार्य के कृपापात्र होने से कुछ राशि मिल जाया करती थी। कुछ ट्यूशन पढ़ाने से भी अर्जित हो जाता था, परन्तु वो भी उनके लगातार उपस्थित न रहने से या तो छूट जाता था या फिर पूरी राशि नहीं मिल पाती थी। अनुपस्थिति का कारण भी बड़ा निराला था, भजनानंदी होना। जहाँ कहीं से भी भजन - संकीर्तन के लिए बुलावा आता था वो चले जाते थे। कल क्या खाना है, इसकी चिंता किये बिना। बस इतना ही कहते थे-

चिंता करिहैं दीन-दयाल।

इन सबसे फुरसत मिलती थी तो बेटे को पढ़ाने में लग जाते थे। ग्यारहवीं कक्षा में था रमेश जब उसकी माँ का देहांत हो

गया था। रमेश का मन पढ़ाई में नहीं लग पा रहा था। किसी तरह उसने अपने आप को संभाला और पढ़ाई में दिल लगाने की कोशिश की। धीरे-धीरे समय बीत रहा था, रमेश ने अब बी.एस-सी. (सम्मान) की परीक्षा प्रथम दर्जे से उत्तीर्ण कर लिया था। पिताजी की उम्र भी अब ढलने लगी थी, वो भगवान् से यही आर्तनाद करते थे कि मेरे साथ जो अन्याय किया वो मेरी संतान के साथ न करना, इसे कोई ठिकाना दे देना।

इससे ज्यादा वह कर भी क्या सकते थे। इधर रमेश भी तैयारी में लगा रहा और उसने उपरवाले की कृपा, पिता का आशीर्वाद और अपने किस्मत और लगन से सफलता प्राप्त कर लिया। उसकी प्रथम पोस्टिंग थी 'दिल्ली'। पिता से आज्ञा और आशीर्वाद लेकर वह दिल्ली के लिए रवाना हो गया। दिल्ली में ट्रेनिंग के दौरान रमेश की मुलाकात सारिका से हुई जो उसी के कार्यालय में अन्य अनुभाग में नियुक्त थी। अनजाने में दोनों एक दूसरे को पसंद करने लगे। पर समय बहुत बलवान होता है। सारिका ने अचानक से रमेश से बातचीत करना कम कर दिया। धीरे धीरे वह उसे उपेक्षित करने लगी। रमेश को कुछ समझ में नहीं आ रहा था, परन्तु वह कर भी क्या सकता था, जब सामने वाला बात करने को राजी न हो तो। खफा होने का कारण भी बताये कौन? इसी कशमकश में 20 से 25 दिन बीत गए। अब तो रमेश इस बात के लिए अभ्यस्त हो गया था। यदि कहीं सारिका से आमना-सामना हो भी जाता तो वह भी नजरें झुकाए और बिना कुछ कहे आगे निकल जाता था।

महीना बीत गया और अचानक से रमेश के ही किसी अन्य मित्र ने उसे कहा की सारिका ने अपना तबादला कहीं और करवा लिया है और वह जा भी चुकी है। रमेश यह सुनकर अवाक् रह गया। वह 'कुछ' भी न बोल पाया। यह बात उसके दिल को घर कर गयी कि" मुझे बिना बताये, बिना कुछ बोले, बिना मिले वह चली गयी"।

समय बीतता गया और रमेश का भी तबादला मसूरी हो गया और लगभग 3 वर्ष के बाद उसका तबादला कोलकाता हो गया। पिताजी की उम्र काफी हो चुकी थी और एक दिन वही हुआ जो परम 'सत्य' है, रमेश के पिताजी ने अंतिम साँसे ली और 'सीताराम' कहते हुए अपने प्राण त्याग दिए। जीवन में कुछ भी अभिलाषा न रखते हुए, जीवन से कुछ भी अपेक्षा न करते हुए, जीवन से अतृप्त रहते हुए भी परम तृप्ति का भाव रखते हुए केवल राम - नाम संकीर्तन में अपने जीवन को समर्पित करते हुए अपने जीवन का त्याग किया था उन्होंने। रमेश का मन अब पूरी तरह से शिथिल हो चुका था। कुछ भी तो नियमित न रहा उसके जीवन में। आर्थिक स्थिरता तो आई लेकिन मानसिक स्थिरता न आ पायी।

रमेश की आँखें खुली तो 'राजधानी एक्सप्रेस' नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर प्रवेश कर रही थी। स्टेशन से उतरकर वह अपने रिश्तेदार के घर गया और रात्रि-विश्राम के बाद अगले दिन अपना स्थानांतरण पत्र लेकर कार्यालय पहुंचा। कार्यालय में ज्वॉइनिंग करने के बाद वह जैसे ही कमरे से बाहर निकला तो सामने सारिका खड़ी थी। ऐसा लग रहा था कि सारिका रमेश के निकलने का इंतजार कर रही थी। सारिका ने पीछे से आवाज दी और कहा...

"मुझे माफ कर दो"

रमेश ने पीछे मुड़कर देखा तो उसे 'उपेक्षा' के दिन याद आ गए। उसने सारिका को सजल नेत्रों से देखा, कुछ भी कहने सुनने को तो न रह गया था। उसे अन्य मित्रों द्वारा किये गए व्यंग्य याद आने लगे। किसी साथवाले ने तो यहाँ तक व्यंग्यात्मक रूप से कह दिया था -

"ग़ालिब यही गलती बार-बार करता रहा,
धूल चेहरे पर थी, आईने को साफ करता रहा"।

रमेश चुपचाप आगे बढ़ गया। सारिका को अपनी गलती का एहसास तो था परन्तु अब उसके पास सिवाय "विवशता" के कुछ भी नहीं था।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कविता

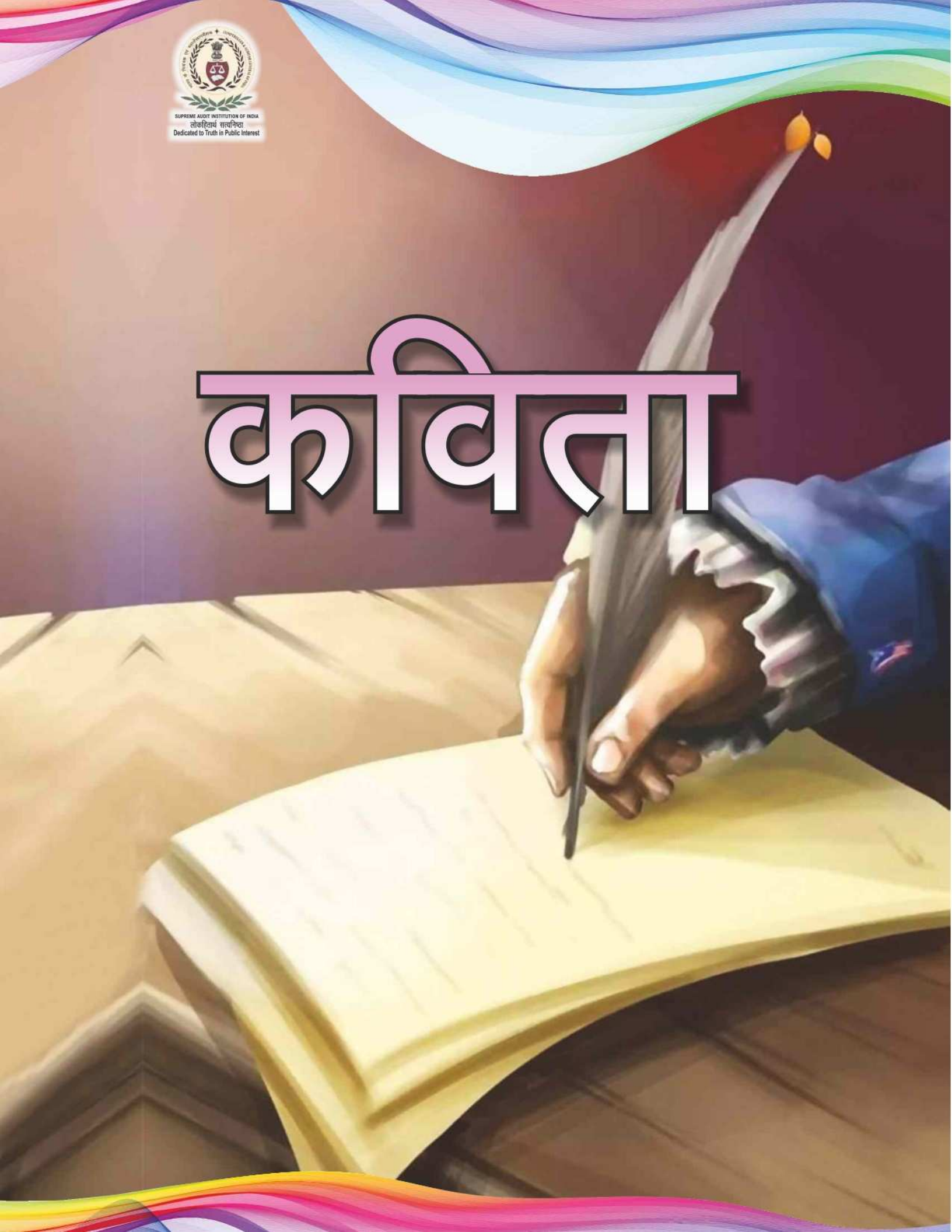

विद्यार्थी जीवन और मानसिक स्वास्थ्य

पूनम पाहुजा
निजी सचिव
अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग
सीएजी मुख्यालय , नई दिल्ली

जीवन की आपाधापी में,
मन-मस्तिष्क घबराया है।
ना जाने, कहाँ से छाया,
मानसिक अशांति का साया हैं।

छात्र, युवा, वयस्क और प्रौढ़,
हर एक, इस लहर में डूबा है।
प्रत्येक वर्ग का सामाजिक प्राणी,
इस आंधी से विचलित है।

व्यस्तता की उथल-पुथल में,
हम सब तनाव के आदी हुए।
विडम्बना तो यह है कि,
मासूम बच्चे भी अवसादी हुए।

निश्छल मन और सरल बुद्धि,
कहाँ-कहाँ पर उलझ रही।
भटकाव, दुविधा और असंतोष,
की राह पकड़, पथ-भ्रष्ट हुई।

बच्चों के सम्पूर्ण विकास हेतु,
अभिभावक ही पहल करें।
सात्विक साधनो को अपनाकर,
दिव्य मार्ग प्रशस्त करें।

विद्यार्थी जीवन के आयामों का,
अध्यापक-गण भी मनन करें।
सकारात्मक प्रयासों के माध्यम से,
तनाव-मुक़्त जीवन शैली विकसित करें।

कर्मयोग, ध्यान, योग की शक्ति से,
तन-मन अपना शुद्ध करें।
खेलों के महत्त्व को समझकर,
शारीरिक स्वास्थ्य भी सबल करें।

प्रौद्योगिकी का संतुलित प्रयोग भी,
शांत मन का आधार है।
सात्विक मन, सात्विक कर्म ही,
शांतिपूर्ण जीवन का सार है।

■■■

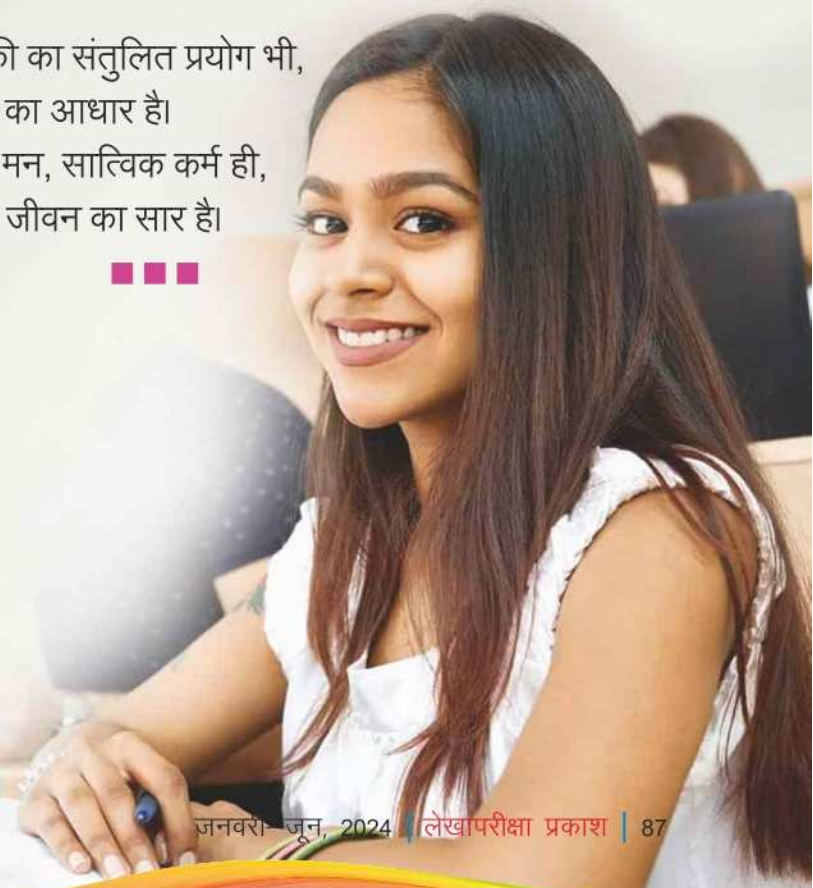

पंचमुखी हनुमान

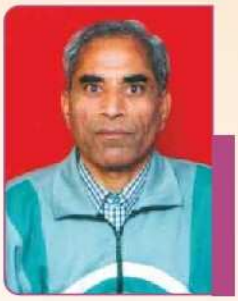

बनवारी लाल सोनी
73/318-ए, टेगोर लेन,
शिप्रा पथ, मानसरोवर जयपुर 302 020
मोबाइल नंबर : 7023908254

निज हिय हनुमत चरन धरि कवि 'बनवारी लाल'।
अद्भुत कथा सुना रहे जो काटइ जग जाल ।। 1

सवन निज मन हरि कें शरण गही तब भ्रात।
चहुँ दिसि संकट ते घिरौ लज्जा राखउ तात ।। 2

अहिरावण तेहि बंधु है वास करै पाताल ।
सब दैत्यन ते प्रबल वो जीति सकतु है काल ।। 3

तंत्र-मंत्र मेंऊ प्रबल देवी पूजतु रोज।
ता कारनई रहतु है, वाके मुख पै ओज ।। 4

कुंभ करनहू मरिगयौ सिमिट्यौ वारिद् नाद।
या कारन लंकेश नें ये कीनों है याद ।। 5

अहिरावन-दसशीश में गुप्त मंत्रणा होय ।
निज दुख ताहि सुनावतौ गयौ दशानन रोय ।। 6

धीरज अहिरावन दयौ तात आज की रात।
राम-लखन लै जाउंगो, क्यों मन में पछितात ।। 7

राम-सैन्य सो जाइ मैं प्रविसउं तिन के बीच।
लै जाऊं पाताल में और देंउ फिर मीच ।। 8

जब न रहैगों बांस ही कहाँ बांसुरी होय।
मेरे जैसे वीरते कहाँ बचिंगे दोय ।। 9

जो सोच्यों सो करि दयौ लै आयौ पाताल ।
मन प्रसन्न अति कौ भयौ दोउन करूँ हलाल ।। 10

हनुमानजी सदा ही ज्ञानिन में सिर मौर।
जहाँ न उनकौ वास है नाहिंन कोऊ ठौर ।। 11

पहुँचि गए पाताल में अहिरावण के द्वार।
मकर ध्वज ठाड़ौ वहाँ जो अति कौ हुसियार ।। 12

युद्ध करतु हनुमान ते गयौ अंत में हार।
सहि न सकतु संसार कोउ हनूमान की मार ।। 13

फिरि भवनन में घुसि गए बंधक दोऊ भ्रात ।
बलि की तैय्यारी लखी अति मन में पछितात ।। 14

पाँच दीप जरते वहाँ दिशा सबन की भिन्न।
तंत्र-मंत्र लखि दुष्ट कौ हनूमान मन खिन्न। 15

एक समै, इक साथ ही बुझा सकै जो दीप ।
सोई जीवन हरि सकै या पाताल महीप ।। 16

अंजनिसुत तब बनि गए 'पंचमुखी हनुमान' ।
ध्यान लगा सुनि लीजिए जो कछु करूं बखान ।। 17

पंचमुखी हनुमान कौ अति विराट है रूप।
सुंदरता को कहि सकै? अद्भुत और अनूप ।। 18

प्रतिनिधि पांच दिशान कौ सबई मुख है भिन्न।
इन रूपन कौ ध्यान करि मन कस रहि सक खिन्न ।। 19

प्रति स्वरूप में एक मुख और आँखि हैं तीन।
औरू भुजा द्वै-द्वै सकल, लखि अरि होत मलीन ।। 20

इक मुख है नरसिंह कौ एक गरुड़ इक अश्व ।
इक वानर, वाराह इक इनकूं जानै विश्व ।। 21

चार दिशा में चार मुख ऊर्ध्व दिशा में एक।
पुनि इनकौ विवरन लिखूं सुनिए सहित विवेक ।। 22

मुख 'वानर' पूरव दिशा, कोटि सूर्य चमकार।
वैभव कोउ न कहि सकै चाहे मुक्ख हजार ।। 23

या मुख कौ पूजन करें शत्रु जात हैं हार।
बल अतुलित तन में बढ़े जो जीवन आधार ।। 24

जो मुख पश्चिम की तरफ 'गरुड़' कहावै सोय।
याके दर्शन करत ही संकट मोचन होय ।। 25

अजर-अमर हैं गरुड़जी जो वाहन भगवान ।
असवारी श्री विष्णु की करै सदा कल्यान ।। 26

'शूकर' मुख उत्तर दिशा महिमा अपरंपार ।
इनकी करें उपासना धन दौलत भण्डार ।। 27

दिन-दिन बादै प्रतिष्ठा काया रहै न रोग।
आयु बढ़े औ जनम भरि पावै स्वर्गिक भोग ।। 28

दक्षिण मुख कहलातु है 'श्री नृसिंह भगवान' ।
चिंता नसै उपासकन, दूरि होय अज्ञान ।। 29

कष्टन मुक्त करावतौ भय हू होंइ पलान।
लगन लगा जो भी धरै अपने मन में ध्यान ।। 30

घोड़े के समरूप है 'ऊर्ध्व मुख' हनुमान ।
चतुरानन की देन ये, वरदानन की खान।। 31

इन पाँचोंई मुखन ते दीने दीप बुझाय ।
एक साथ, इक समय में, कीनी राम सहाय ।। 32

पलभर में ई है गयौ अहिरावण कौ अंत।
पंचमुखी हनुमान हैं पतझर मांहि बसंत ।। 33

भक्तन कष्ट मिटावहीं दया - ज्ञान भण्डार।
नाम जपत हनुमान कौ भवते बेड़ा पार ।। 34

इंसानियत

मनु अनेजा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

इंसान होकर भी इंसानियत से क्यों दूर चलते जा रहे हैं हम,
लालच/ईर्ष्या/द्वेष/स्वार्थ की आग में, क्यों जलते जा रहे हैं हम,
गिरगिट की तरह क्यों रंग बदलते जा रहे हैं हम,
इंसान होकर भी इंसानियत से क्यों दूर चलते जा रहे है हम,

जाने कब आएगा होश हमें कि राह भटक गए हैं हम,
एक खोखली सुबह के इंतजार में क्यों शाम-सा ढलते जा रहे हैं हम,
इंसान होकर भी इंसानियत से क्यों दूर चलते जा रहे हैं हम,

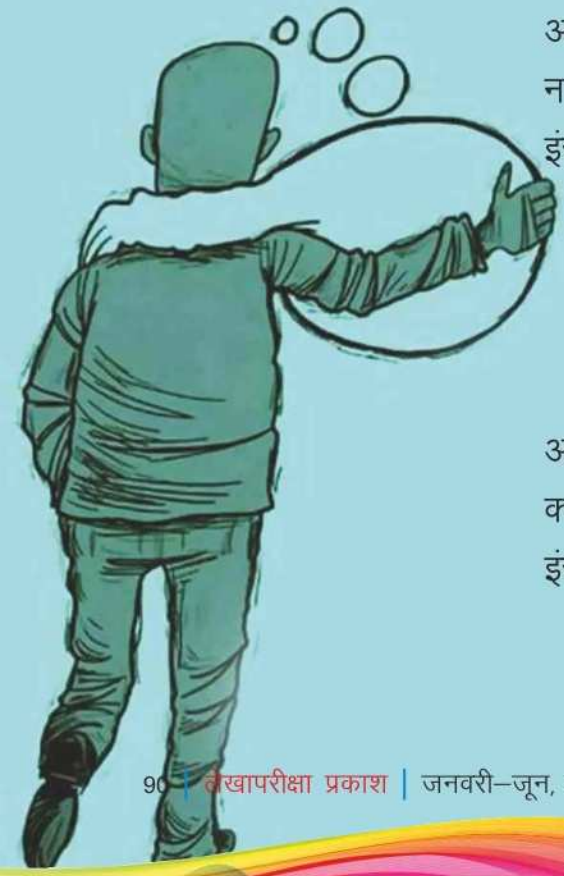

अपने सपने पूरे करने के लिए, अपनों के सपनों को क्यों कुचलते जा रहे हैं हम,
न जाने जीने के लिए क्यों, हर पल मरते जा रहे हैं हम,
इंसान होकर भी इंसानियत से क्यों दूर चलते जा रहे हैं हम,

कुछ नहीं जाएगा मरने के बाद हमारे साथ में,
फिर भी न जाने क्यों धन-दौलत की होड़ में आगे बढ़ते जा रहे हैं हम,
इंसान होकर भी इंसानियत से क्यों दूर चलते जा रहे हैं हम,

अच्छा सोचें सबके बारे में हम,
क्यों दूसरों का बुरा सोचकर अपना बुरा करते जा रहे हैं हम
इंसान होकर भी इंसानियत से क्यों दूर चलते जा रहे हैं हम।

कोई आवारा न मिला

एम. साल्वे
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
निवासी लेखापरीक्षादल नासिक

इस जहाँ में सबकुछ नहीं मिलता

कभी ख्वाब जमीन के थे वहाँ आसमान नहीं मिलता

इस शहर में हर गली में खुलूस नजर आता

जहाँ उम्मीद थी उनसे वहाँ पर कोई शफक नजर नहीं आता

हर राह पर चराग जले मगर कभी सुबह-ओ-शाम कोई मुसाफिर न मिला

हर चमन में फूल खिले पर कोई गुलाब न खिला

मेरी हर बात बे-असर हुई, मगर नुक्स बताकर कोई बयान न लेना

उम्र गुजरी है इम्तिहान में मगर कोई सवाल तुम जैसा न मिला

लम्बी जिंदगी में ना-उमीद थे मगर ग़म की कोई
शाम न मिली

चिराग जले हैं घर पर मगर किसी
हमसफ़र ने साथ न दिया

हवा में नसीम-ए-बहार है मगर शहर में कोई मकान न मिला

मेरी जिंदगी में दर्द-ओ-गम हैं मगर कोई आवारा न मिला

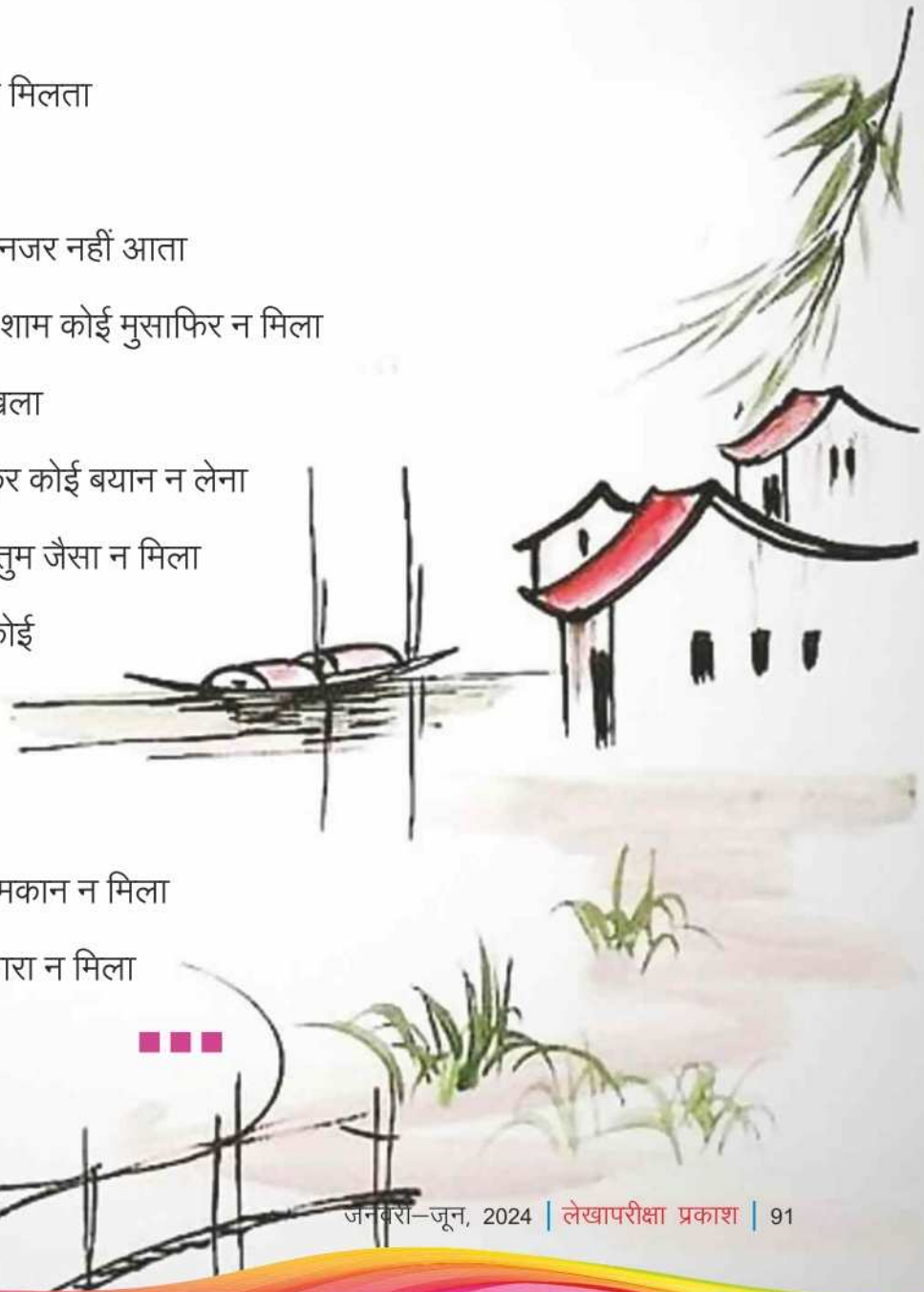

जीवन

विदित अग्रवाल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महानिदेशक (इस्पात) रांची शाखा,
दूसरा तल इस्पात भवन भिलाई इस्पात संयंत्र,
भिलाई, छत्तीसगढ़

जीवन खपा दिया, जीवन संवारने में,
फिर भी लगा कहीं न कहीं कमी रह गई इसे निखारने में,
जिंदगी उदास रूठी सहमी सहमी सी रह गई।
अपनेपन की चाह में, घूमता रहा मैं,
दिल टूटा, अश्क सूखे, फिर भी आंखों में नमी रह गई।
बदलते मौसम की तरह किरदार बदलते रहे,
दिल में उथल-पुथल हुआ, बस तरंग ध्वनि रह गई।
कुछ कर गुजरने की चाहत में, यह क्या कर गए हम,
अपेक्षाओं का अब मोल नहीं, अब सिर्फ मनमानी रह गई।
क्या फर्क पड़ता है किसी को अब भावनाओं का,
रिश्तों की यह परंपरा, अब मात्र जुबानी रह गई।
गुजरे खट्टे मीठे पल, अब याद बहुत वो आते हैं,
जीवन अब जीवन ना रहा, बस बनके कहानी रह गई।
अब चाह नहीं कुछ जीवन में, और ना ही इतना वक्त बचा,
अब ना ही वो उमंग रही, और ना वो जवानी रह गई।
जीवन का यह रंगमंच, कर्तव्य अधिकार से भरा रहा,
कितना भी किया पर, दुनिया को मुझसे शिकायत ही रह गई।
जीवन के इस कालखंड में अगणित अनुभव पाया
अश्क उभरते हैं दिल में, बस जिस्म रूहानी रह गई।
ना लोग अपने, ना रिश्ते नाते, ना ही ये जीवन अपना,
कुदरत की यह नेमत है यह बात बाकी समझनी रह गई।
जीवन खपा दिया, जीवन संवारने में,
फिर भी लगा यूं कि, थोड़ी सी कमी रह गई।

वो पापा कहलाता है

संदीप
कनिष्ठ अनुवादक मुख्यालय,
नई दिल्ली

जन्म से लेकर मरने तक
अपनी हर सांस चलने तक
जीवन के हर बदलाव तक
धूप से लेकर छांव तक
हर जिम्मेदारी वो उठाता है
हां वो पापा कहलाता है
कहाँ वो बेफिक्र सा रहने वाला लड़का
जो कभी समय की भी परवाह नहीं करता था

मर्जी से खाना, नहाना, घूमना, फिरना, खेलना
वो घर वालों की भी परवाह कहाँ करता था?
जिम्मेदारी उठानी है तुझे घर की
समाज का जर्रा जर्रा उसे ये समझाता है
हां वो पापा कहलाता है
बचपन में लड़ने वाला छोटी छोटी बातों पर
अपने दिल को समझाना सीख जाता है
अपनी खुशियों को परिवार के लिए
कुर्बान करना सीख जाता है
कई बार तो छोड़ देता है अपनी पढ़ाई को बीच में ही
छोटे बहन भाईयों को पढ़ाने के लिए
पढ़ने की उम्र में दिन रात वो कमाता है
हां वो पापा कहलाता है
निकल जाता है परदेशों में कमाने के लिए
कई कई महीनों घर कहाँ आता है
पूछे कोई हाल उनका तो
अपने आप को मस्त ही बताता है
खुद रहता है पीजी में या एक कमरे में
लेकिन घर वालों के लिए घर आलीशान बनाता है
आता है जब घर को कई महीनों बाद
घर का चप्पा चप्पा उसे मेहमान कहकर चिढ़ाता है
हां वो पापा कहलाता है

हुआ जवान तो शादी हुई
सोचा अब तो जिम्मेदारी आधी हुई
हंसी का दिन खुशियों की रात है
ये तो अभी वास्तविक जिम्मेदारियों की शुरुआत है
हुई औलाद तो पता चला कि
जिम्मेदारियां भी तो खुशियों की ही सौगात है
उसी दिन से औलाद के लिए
जाने कितने प्लान वो बनाता है
हां वो पापा कहलाता है.
बच्चों के खिलौनों से लेकर
कपड़े, जूते, बैग, किताबों तक
सोच सोच कर लाता है सब अच्छी चीजें
मोबाइल से लेकर मोटरसाइकिल तक
बड़ी हुई तो औलादें बोलीं
आपने किया ही क्या है हमारे लिए
अगर किया है इतना कुछ आपने
तो यह जिम्मेदारी हर मां बाप उठाता है
हां वह पापा कहलाता है
सारी उम्र कमाने में निकली
बुढ़ापे में जवानी भी बेवफा निकली
जिसको प्यार किया ताउम्र
उस अर्धांगिनी की जान भी हाथों में निकली
बच्चों की शादी करके दिल का बोझ कम हुआ
उसी दिन से मेरे ही घर में मेरा जाना कम हुआ
बेटों बहुओं की तानों भरी बातें
मेरे जीवन का आत्मविश्वास घटाता है
हां वो पापा कहलाता है
ज्यों ज्यों उम्र बढ़ती गई
जिंदगी बीमारी में कटती गई
अपने ही हाथों से संजोए घर में
अपनी ही इज्जत घटती गई
कभी मानते थे जिस घर को सारा जहां
उसी घर में निकम्मा और नकारा कहा
बहू के कहने पर एक दिन बेटा बोला
मैं कल ही पिताजी को वृद्धाश्रम पहुंचाता हूं
हां वो पापा कहलाता है
रात को जब वो अपने कमरे में सोया
सोचा जीवन में क्या पाया क्या खोया
अपने जीवन का पल पल परिवार को समर्पित किया
और बदले में बेटो बहुओं ने क्या अर्पित किया
हो गया वो मिट्टी रात को ही
सुबह बेटा उसका मृत देह उठाता है
हां वो पापा कहलाता है
सारी उम्र निकल गई कमाने में
सबको खुश रखने और अपना बनाने में
कहाँ खुश होते हैं सब इस दुनिया में
कोई तो रह ही जाता है नाराज जमाने में
सब कहते हैं मां हमें बहुत प्यारी है
बाप को कोई श्रेय नही मिलता जमाने में
जबकि बाप सारी जवानी खत्म कर देता है
एक शिशु को बड़ा बनाने में
बाप ही तो जरूरी होता है
समाज को समझने और समझाने में
जितना हकदार होता है पाने का इज्जत
उतनी भी कहाँ पाता है
हां वो पापा कहलाता है

एक माँ की दुविधा

सुनीता
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक (राजभाषा)
मुख्यालय , नई दिल्ली

चलती रेल के शोर में एक चीख, जो लगभग तीन माह के नन्हे शिशु की है, उसे भूख लगी है, सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है। हाल ही में माँ बनी वह नारी एकदम से सकपका जाती है कि इतनी भीड़ में मातृत्व का धर्म किस प्रकार निभाए? घर पहुँचने में अभी 2 घंटे शेष हैं। किसी प्रकार वह उस नन्हे को चुप कराने की कोशिश करती है परंतु एक वृद्धा के कहने पर वह अपने आँचल तले ढक कर नन्हें की कामना पूर्ण करती है। लेकिन वह माँ केवल अपने शिशु के लिए है और अन्यों के लिए केवल एक स्त्री। इसीलिए इस पूरे वाकये के दौरान वह अत्यंत असहज महसूस कर रही है। एक रेल यात्रा के दौरान मैंने अपने अनुभव को, जब एक माँ को अपने बच्चे को केवल दूध पिलाने को लेकर ही संघर्षरत देखती हूँ ये शब्द दिए हैं-

एक माँ अपने बच्चे को दूध पिला रही है,
कभी बच्चे को ढँकती है, कभी खुद को छुपा रही है,
कुछ नजरें देती सम्मान उसके मातृत्व को,
कुछ केवल उसकी देह को ताके जा रही हैं,
एक माँ अपने बच्चे को दूध पिला रही है।
बहुत देर बहलाया था नन्हें को, लेकिन उसकी भूख
अब माँ के दुलार पर भारी पड़ती जा रही है,
तो क्यूँ सबके बीच रोते बच्चे की भूख मिटाने में,
एक माँ इतना सकुचा रही है?
वह तो केवल अपने बच्चे को दूध पिला रही है।
दूध पीकर बच्चा तृप्त हुआ, और माँ लज्जित,
लेकिन क्यूँ?
वह तो केवल अपना उत्तरदायित्व निभा रही है।
क्यूँ वही घूरने वाली नज़रें अब दूसरी ओर जा रही हैं,
एक माँ अपने बच्चे को दूध पिला रही है।
फिर एक और नन्हा रोया,
फिर कुछ नज़रें उठी,

कुछ नज़रें देती सम्मान उसकी निजता को,
कुछ फिर उसे केवल देह समझे जा रही हैं,
लेकिन इन सबसे बेफ़िक्र,
फिर एक जननी अपनी संतान की भूख मिटा रही है,
एक माँ अपने बच्चे को दूध पिला रही है।

परमेश्वर के दर्शन

आरती शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय डीजीएएफ़डबल्यूआर,
नई दिल्ली

इक दिन मन के अंतःकरण में एक विचार आया
सरलता से दिख जाएं प्रभु, यह विचार मन को अति लुभाया

तभी जागृत हुई अंतःकरण से भी एक वाणी
ऐसे लगा रहा था मानो थी साक्षात वह अमृतवाणी

उस वाणी के थे कुछ नेक विचार
सहर्ष प्रस्तुत करते हुए, उस वाणी के प्रति करती हूँ आभार

मन ने तुम्हारे जो सोचा है वह कठिन नहीं है पाना
आँखें मूँद कर बस तुम्हे है बस एक आभास जगाना

नित्य कर लो परमेश्वर के दर्शन
छूट जाएं कष्टों और दुखों के बंधन

(पूछा मैंने उस वाणी से)
क्या इतनी सरलता से मिल जायेंगे वे
बिन तप तपस्या के दिख जायेंगे वे

ऐसा तो कभी न हमने सुना था
कि दर्शन पाना इतना सुलभ था

क्या कोई चमत्कार हुआ है
जो दर्शन पाना सरल हुआ है

बोध दिया उस वाणी ने तब यह
माता पिता ही हैं परमेश्वर की जगह

ये आभास कैसे आया
परमेश्वर ने स्वंय करवाया

नमन करो उन्हें नित्य प्रतिदिन
पावन कर लो आत्मा और तन मन

अनगिनत कष्ट कठिनाई झेलकर लालन पालन किया हमारा
कभी गोद में लिए कभी कंधे पे उठाये जीवन भर ढोया भार हमारा

यदा प्रेम से कदा कठोरता से जीवन का मार्गदर्शन किया हमारा
नेकी और धर्म के पथ पर चलें, बार बार यह पाठ दोहराया

जीवन भर आभार प्रकट करोगे तब भी ऋण से मुक्ति न पाओगे
सेवा करो उनकी निस्वार्थ, वे ही हैं जीवन में परमेश्वर रूपी आशीर्वाद

■■■

मणिमहेश यात्रा

दया सागर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

मणिमहेश की पदयात्रा
एक अद्भुत था संजोग
शक्ति आत्मबल और आस्था का
बड़ा ही सुंदर योग
11 बजे सुबह शुरु की चढाई
मजा आ रहा था भाई
एक उम्मीद थी, एक आशा थी
महादेव से मिलने की जिज्ञासा थी
वैसे तो मैं था अकेला
फिर भी थे, कई साथी
हिम्मत, ताकत, आत्मबल
वर्षा के लिए बरसाती
विवेक और बुद्धि मेरी
सही राह दिखाती थी
एक लाठी सहारा देने वाली
आत्मविश्वास बढ़ाती थी
चढ़ता गया मैं, चढ़ता गया
आगे-आगे बढ़ता गया
हौसलों में उड़ान थी
शक्ति मुझमे विशाल थी
पदयात्रा में हो अगर चढ़ाई
मजा दोगुना हो जाता भाई
चढ़ते-चढ़ते सांस फूलती
याद आती, सब चाची-ताई

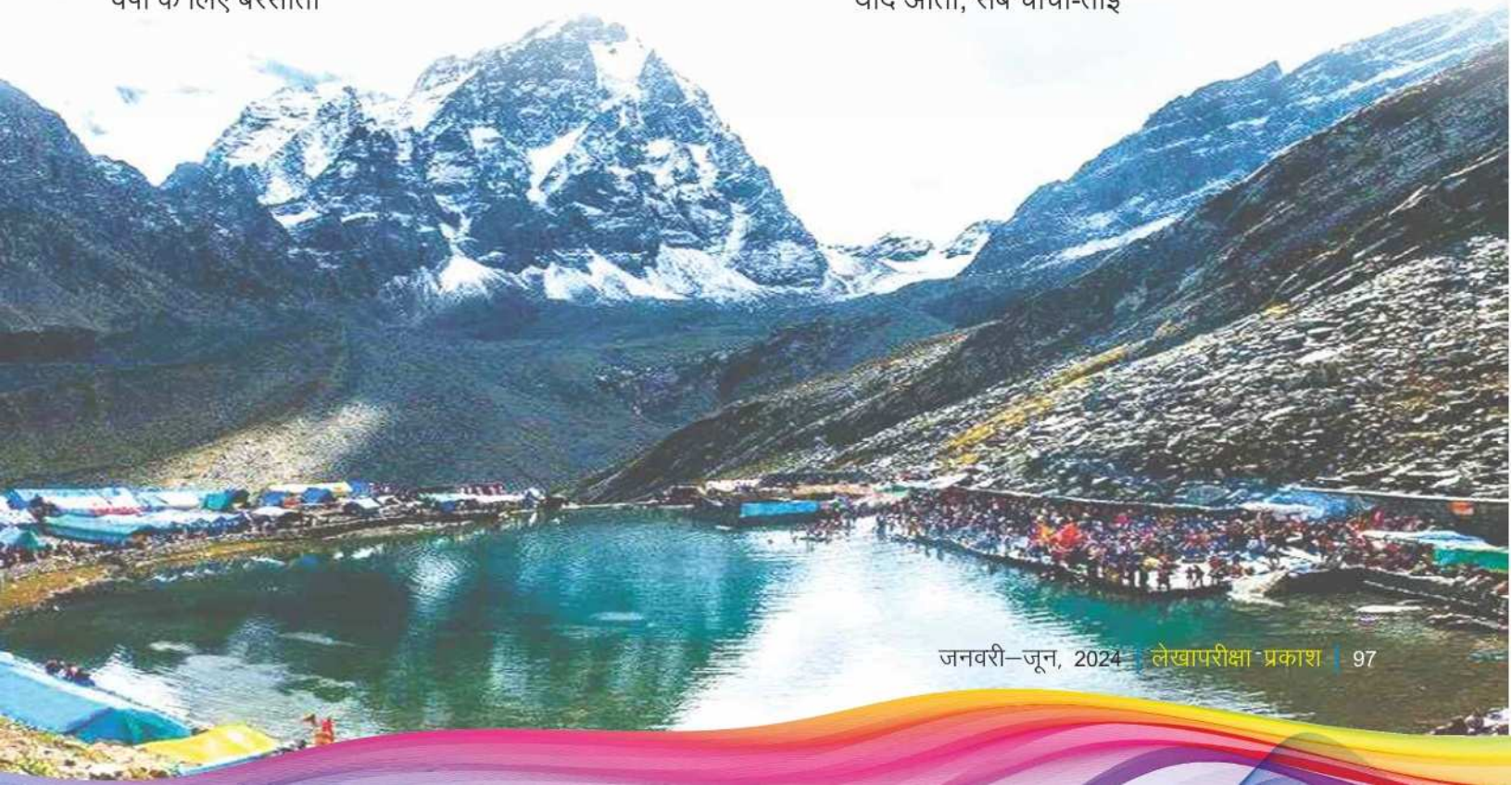

लम्बी पदयात्रा करते हैं तो
बुरी तरह थक जाते हैं
रुक जा थम जा, दिल ये कहता
पर कदम बढ़ते जाते हैं
पूरा जोश शुरू में होता
13 कि०मी० भी लगता छोटा
6 कि०मी० चढ़ते-चढ़ते
हंसने वाला लगने रोता
10 कि०मी० चढ़ते-चढ़ते
लड़खड़ाने लगे कदम बढ़ते-बढ़ते
फिर भी मन में जोश था
दिल में पूरा होश था
थक कर चकना चूर हो गया
हर कदम लगता था भारी
ऑक्सीजन की कमी से
सांस फूलने लगी हमारी
गौरी कुण्ड पहुंचने पर
चार्ज हुए सब सेल
शिव-शक्ति का गौरी कुण्ड में
बड़ा ही अद्भुत मेल
थोड़ी देर आराम किया
थोडा सा जलपान किया
मंजिल सामने दी दिखाई
फिर दिल ने रुकने न दिया
कुछ भक्त मेरे साथ चले थे
वे लगातार चढ़ नहीं पाए थे
रुक गए आराम करने को
वे आगे बढ़ नहीं पाए थे
पहुंचा जब मैं, शिखर पर
जान में जान तब आई
संकल्प पूरा हो गया
उदेश्य में सफलता पाई

मणिमहेश थी मंजिल मेरी
आगे कही जाना नहीं था
मंजिल पर मैं पहुँच गया था
खुशी का कोई ठिकाना नहीं था
अच्छा था वहां इंतजाम
कुछ घंटे किया विश्राम
भोर में भ्रमण किया
विग्रहों का दर्शन किया
फिर पूजा-अर्चना की
मणिमहेश से प्रार्थना की
भारत सबसे आगे हो
इस बात की याचना की
विश्व की खुशहाली चाही
अपनी इच्छा भी बताई
निरंतर आगे बढ़ता रहूँ
ससम्मान मैं करूँ कमाई
मणिमहेश को टोह लिया
भव्यता ने मोह लिया
वापसी की फिर की तैयारी
लक्ष्य पूरा हो गया
पदयात्रा सिर्फ यात्रा नहीं होती
ये तो एक परीक्षा है
किसमें कितना आत्मबल है
इस बात की समीक्षा है
मणिमहेश की पदयात्रा
एक अद्भुत था संजोग
शक्ति आत्मबल और आस्था का
बड़ा ही सुंदर योग

क्रिकेट के मैदान में

नवीन देया "एकांत"
निजी सचिव
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली

वाह वाह रोहित की टीम झण्डा गाड़ दिया मैदान में।
एक एक करके सभी टीमों को धूल चटा दी मैदान में।
हिटमैन रोहित का बल्ला क्या खूब गरजा मैदान में।
शर्माजी का बेटा विजय कप्तान बना, बारबाडोस के मैदान में।
जसप्रीत की गेंदे ऐसे गिरी, सूरमा गिर पड़े मैदान में।
सूर्या की बात निराली, सूर्यउदय हुआ जहाँ बाउंड्री थी, वो मैदान में।
पंत का जलवा बल्ले बल्ले, विकेट के पीछे क्या लपका वो मैदान में।
हार्दिक की गेंदो ने विकेट उखाड़े, क्या छक्के मारे उसने मैदान में।
अक्षर दिखा असरदार गेंद-बल्ले से, कठिन कैच पकड़े मैदान में।
दुबे जी के छोटे स्कोर का, इंपेक्ट दिखा मैदान में।
जडेजा के फुर्तीलेपन का असर दिखा सभी पे, फील्डिंग के मैदान में।
अर्शदीप की गेंदों ने सबसे ज़्यादा विकेट लिये, वर्ल्डकप के मैदान में।
कुलदीप की बोलिंग रहस्य बनी इस वर्ल्डकप के मैदान में।
किंग कोहली तो राजा बना, फतेह जो करनी थी, आख़िरी मैदान में।
विजयरथ का सारथी राहुल द्रविड़ खड़ा था, "द वाल" बनकर मैदान में।
चैंपियन टीम का बहुत बहुत अभिनंदन

ऐसा न हो...

अभिषेक रंजन चुन्नु
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर (छ.ग.)

ऐसा न हो, कहीं स्वप्न टूट जाए
चुपके से मेरी सपनों में आकर के
जीवन की बगिया में कुछ फूल सजा कर के
राह के साथी मुझे हमसफर बना कर के
नहीं ! कहीं, मेरी जिन्दगी में बस न जाना
धीरे- धीरे तुम आना

ऐसा न हो, कहीं स्वप्न टूट जाए
अधरों पे मेरे शब्दों को रख के
नयनों में मेरे दर्शन को सज के
नींदों में मेरे सपनों को भर के
नहीं ! कहीं, मुझमे ही समा न जाना
धीरे- धीरे तुम आना

ऐसा न हो, कहीं स्वप्न टूट जाए
स्वप्नों की निराली दुनिया में आ के
जीवन की यथार्थता पर लगाया ठहाके
स्वप्न टूटेगा ही, इतना मुझे बता के
नहीं ! कहीं, मुझे सच ही न दिखा जाना
धीरे- धीरे तुम आना

ऐसा न हो, कहीं स्वप्न टूट जाए

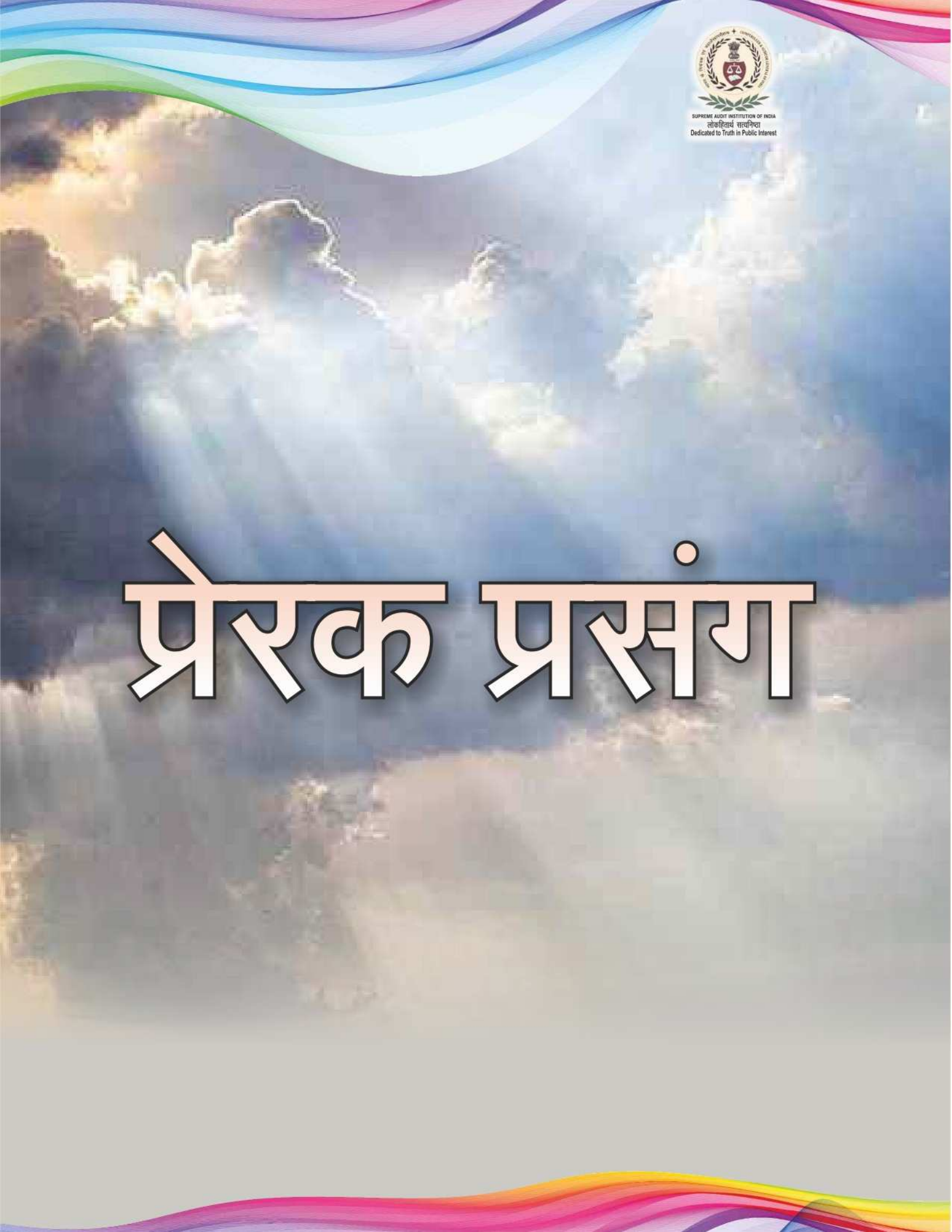
SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest
प्रेरक प्रसंग

प्रेरक प्रसंग

देह का मोह

अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (राजभाषा)
सीएजी मुख्यालय, नई दिल्ली

राजा परीक्षित को श्रीमद्भागवत पुराण सुनातें हुए जब शुकदेव जी महाराज को छह दिन बीत गए और तक्षक (सर्प) के काटने से मृत्यु होने का एक दिन शेष रह गया, तब भी राजा परीक्षित का शोक और मृत्यु का भय दूर नहीं हुआ। अपने मरने की घड़ी निकट आता देखकर राजा का मन क्षुब्ध हो रहा था।

तब शुकदेव जी महाराज ने परीक्षित को एक कथा सुनानी आरंभ की।

राजन! बहुत समय पहले की बात है, एक राजा जंगल में शिकार खेलने गया, संयोगवश वह रास्ता भूलकर घने जंगल में जा पहुँचा। उसे रास्ता ढूंढते-ढूंढते रात्रि हो गई और वर्षा होने लगी। राजा बहुत डर गया और किसी प्रकार उस भयानक जंगल में रात्रि बिताने के लिए विश्राम का स्थान ढूंढने लगा।

कुछ दूरी पर उसे एक दीपक जलता हुआ दिखाई दिया। वहाँ पहुँचकर उसने एक बहेलिये की झोंपड़ी देखी। वह बहेलिया ज्यादा चल-फिर नहीं सकता था, इसलिए

झोंपड़ी में ही एक ओर उसने मल-मूत्र त्यागने का स्थान बना रखा था, अपने खाने के लिए जानवरों का मांस उसने झोंपड़ी की छत पर लटका रखा था।

वह झोंपड़ी बड़ी गंदी, छोटी, अंधेरी और दुर्गंधयुक्त थी। उस झोंपड़ी को देखकर पहले तो राजा ठिठका, लेकिन उसने सिर छिपाने का कोई और आश्रय न देखकर उस बहेलिये से अपनी झोंपड़ी में रात भर ठहरने देने के लिए प्रार्थना की।

बहेलिये ने कहा कि आश्रय के लोभी राहगीर कभी - कभी यहाँ आ भटकते हैं। मैं उन्हें ठहरा तो लेता हूँ, लेकिन दूसरे दिन जाते समय वे बहुत झंझट करते हैं।

उन्हें इस झोंपड़ी की गंध ऐसी भा जाती है कि फिर वे उसे छोड़ना ही नहीं चाहते और इसी में ही रहने की कोशिश करते हैं एवं अपना कब्जा जमाते हैं। ऐसे झंझट में मैं कई बार पड़ चुका हूँ, इसलिए मैं अब किसी को भी यहां नहीं ठहरने देता। मैं आपको भी इसमें नहीं ठहरने दूंगा।

राजा ने प्रतिज्ञा की, कि वह सुबह होते ही इस झोंपडी को अवश्य खाली कर देगा। यहाँ तो वह संयोगवश भटकते हुए आया है, उसे तो सिर्फ एक रात काटनी है

तब बहेलिये ने राजा को वहाँ ठहरने की अनुमति दे दी, पर सुबह होते ही बिना कोई झंझट किए झोंपड़ी खाली करने की शर्त को दोहरा दिया। राजा रात भर एक कोने में पड़ा सोता रहा।

सोने में झोंपड़ी की दुर्गंध उसके मस्तिष्क में ऐसी बस गई कि सुबह जब उठा तो वही सबसे परम प्रिय लगने लगी। राजा जीवन के वास्तविक उद्देश्य को भूलकर वहीं निवास करने की बात सोचने लगा। और बहेलिये से वहीं ठहरने की प्रार्थना करने लगा।

इस पर बहेलिया भड़क गया और राजा को भला-बुरा कहने लगा।

राजा को अब वह जगह छोड़ना झंझट लगने लगा और दोनों के बीच उस स्थान को लेकर बड़ा विवाद खड़ा हो गया।

कथा सुनाकर शुकदेव जी महाराज ने "परीक्षित" से पूछा, "परीक्षित" बताओ, उस राजा का उस स्थान पर सदा के लिए रहने के लिए झंझट करना उचित था?

परीक्षित ने उत्तर दिया, भगवन्! वह राजा कौन था, उसका नाम तो बताइये? मुझे वह तो मूर्ख जान पड़ता है, जो ऐसी गंदी झोंपड़ी में, अपनी प्रतिज्ञा तोड़कर एवं अपना वास्तविक उद्देश्य भूलकर, नियत अवधि से भी अधिक वहाँ रहना चाहता है। उसकी मूर्खता पर तो मुझे आश्चर्य होता है।

श्री शुकदेव जी महाराज ने कहा, हे राजा परीक्षित! वह बड़े भारी मूर्ख तो स्वयं आप ही हैं।

इस मल-मूत्र की गठरी "देह (शरीर)" में जितने समय आपकी आत्मा को रहना आवश्यक था, वह अवधि तो कल समाप्त हो रही है। अब आपको उस लोक जाना है, जहाँ से आप आएं हैं। फिर भी आप मरना नहीं चाहते। क्या यह आपकी मूर्खता नहीं है?"

राजा परीक्षित का ज्ञान जाग गया और वे बंधन मुक्ति के लिए सहर्ष तैयार हो गए।

"वस्तुतः यही सत्य है।"

जब एक जीव अपनी माँ की कोख से जन्म लेता है तो अपनी माँ की कोख के अन्दर भगवान से प्रार्थना करता है कि, हे भगवन्! मुझे यहाँ (इस कोख) से मुक्त कीजिए, मैं आपका भजन-सुमिरन करूँगा। और जब वह जन्म लेकर इस संसार में आता है तो (उस राजा की तरह हैरान होकर) सोचने लगता है कि मैं ये कहाँ आ गया (और पैदा होते ही रोने लगता है)

फिर धीरे धीरे उसे उस गंध भरी झोंपड़ी की तरह यहाँ की खुशबू ऐसी भा जाती है कि वह अपना वास्तविक उद्देश्य भूलकर यहाँ से जाना ही नहीं चाहता है।

सभी भक्त वृंद सार सार को गहि रहें, थोथा देहिं उड़ाए

मन की पकड़

एक वेटर्निरी डॉक्टर के मोबाईल पर कॉल आया। एक हाथी बीमार पड़ गया था। डॉक्टर साहब हाथी को देखने निकले ही थे के उनका 10 वर्षीय बेटा भी साथ जाने की ज़िद करने लगा।

डॉक्टर साहब ने सुपुत्र को साथ ले लिया।

हाथी का हाल चाल देख कर डॉक्टर साहब ने महावत को बुलाया और उसे कुछ दवाइयां लाने को कहा।

डॉक्टर साहब के साथ आया सुपुत्र सुदूर खड़ा हाथी को देख रहा था। डॉक्टर साहब ने बेटे को हाथी के समीप आने को कहा। बेटे ने हाथी के समीप आने से इनकार कर दिया। डॉक्टर ने बेटे का हाथ पकड़ा और उसे हाथी के समीप ले आये। हाथी के पाँव की ओर इशारा करते हुये बोले, "वह देखो, उसके पाँव में बेड़ियां जकड़ी हुई हैं। वह चाह कर भी हिल नहीं सकता।। जब हिलेगा नहीं तो तुम्हें चोट कैसे पहुंचायेगा।"

यह सुन कर लड़का सरपट भागने लगा और तब तक भागता रहा जब तक हाथी उसकी आँखों से ओझल नहीं हो गया। डॉक्टर साहब भी लड़के के पीछे पीछे भागते रहे। लंबी दौड़ लगा कर लड़का रुक गया। उसके पीछे दौड़ते पिता की भी सांस फूल गयी।

डॉक्टर ने लड़के को क्रोध भरी नजरों से देखा और बोले, "कहा न कि उसके पाँव में बेड़ियां हैं। वह नहीं हिलेगा। फिर डर के क्यों भाग आए?"

लड़के ने बाप की आखों में आँखें डाल कर कहा, "बेड़ियां ? वह पतली सी ज़ंजीर? इतना बड़ा हाथी तो एक झटके में उन बेड़ियों को तोड़ देगा और फिर आपको और मुझे कुचल देगा।"

बात तर्कपूर्ण थी, हाथी की अदम्य शक्ति के समक्ष उन बेड़ियों की क्या औकात थी।

डॉक्टर मुस्कुराये। बेटे का हाथ पकड़ा और उसे महावत के घर की ओर ले गये। घर के पीछे हाथी का बच्चा बेड़ियों से बंधा हुआ था। लड़के ने देखा के हाथी का बच्चा बार बार बेड़ियों से निकलने का प्रयास कर रहा था, लेकिन उसकी कद काठी और उसकी शक्ति बेड़ियां तोड़ने में नाकामयाब थी।

डॉक्टर ने बेटे से कहा, "ध्यान से देखो, वही बेड़ियां हैं। वही जंजीरें हैं। हाथी के बच्चे को काबू में करने के लिये बाल्यकाल से ही उसे जकड दिया जाता है। वह कुछ दिन छटपटाता है, फिर वह बेड़ियों का आदि हो जाता है। फिर उसे लगने लगता है कि जंजीर के आगे उसकी शक्ति कम है। तभी से वह ज़ंजीर को अपने ऊपर हावी कर लेता है।

डॉक्टर ने लड़के का हाथ पकड़ा और उसे पुनः विशालकाय हाथी की ओर ले गये। उन्होंने पुनः पैर की बेड़ियों की ओर इशारा किया और बोले, "तुमने सही पहचाना। हाथी अपनी शक्ति से पाँव झटक भी दे तो इन बेड़ियों को तहस नहस कर देगा। लेकिन यह बेड़ियां उसके तन पर नहीं, उसके मन पर बँध चुकी हैं। वह इन जंजीरों की ताकत स्वीकार कर चुका है।"

ठीक उसी प्रकार इंसान भी अपने अन्दर छिपी अपार शक्ति होते हुए भी, अपनी बेड़ियां उतार कर नही फेंक पाता।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

मुख्यालय समाचार

मुख्यालय समाचार

(अवधि जनवरी – जून 2024)

अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (राजभाषा)
सीएजी मुख्यालय, नई दिल्ली

1. समझौता ज्ञापन

1.1 20 मार्च, 2024 : सीएजी तथा आईआईटी, दिल्ली के मध्य समझौता ज्ञापन

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कार्यालय एवं आईआईटी दिल्ली के मध्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

समझौता ज्ञापन पर श्री आनंद मोहन बजाज, मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी एवं अपर-उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक तथा प्रो. रंगन बनर्जी, निदेशक, आईआईटी दिल्ली ने भारत के सीएजी की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

सीएजी ने इस अवसर पर कहा कि एआई-संचालित उपकरणों में नियमित कार्यों को स्वचालित करने,

भारत के सीएजी श्री मुर्मू के साथ आईआईटी दिल्ली के निदेशक प्रो. रंजन बनर्जी

सीएजी कार्यालय व आईआईटी दिल्ली के समझौता ज्ञापन समारोह में बोलते हुए सीएजी श्री मुर्मू

लेखापरीक्षकों को रणनीतिक विश्लेषण और मूल्य-वर्धित गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करने से मुक्त करने की क्षमता है, जिससे लेखापरीक्षा परिणामों की गुणवत्ता और प्रासंगिकता बढ़ जाती है।

यह बताते हुए कि भारत सरकार ने शासन के लिए एआई को अपनाने में भारी प्रगति की है और 2024 में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (जीपीएआई) पर वैश्विक भागीदारी के पद के रूप में एआई नवाचार के लिए ग्लोबल हब बनने की राह पर है, श्री मुर्मू ने कहा कि 'एआई लेखापरीक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन, दक्षता, प्रभावशीलता और अंतर्दृष्टि को बढ़ाने के अवसरों की अधिकता प्रदान करने के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में उभरा है। एआई-संचालित एल्गोरिदम और पूर्वानुमानात्मक विश्लेषण का उपयोग करके, लेखापरीक्षक अद्वितीय गति और सटीकता के साथ डेटा की विशाल मात्रा का विश्लेषण कर सकते हैं, उन्हें अधिक सटीकता के साथ पद्धतियों, विसंगतियों और संभावित जोखिमों को उजागर करने में सक्षम बना सकते हैं।'

सीएजी ने कहा, 'जैसा कि हम एक तकनीकी क्रांति की दहलीज पर खड़े हैं, लेखापरीक्षा का परिदृश्य एक गहन परिवर्तन से गुजर रहा है। एआई, मशीन लर्निंग और डेटा विश्लेषण की तेजी से प्रगति के साथ, पारंपरिक पद्धतियों को फिर से परिभाषित किया जा रहा है, नवाचार और दक्षता के लिए अभूतपूर्व अवसर प्रदान कर रहा है।'

इस समझौता ज्ञापन के माध्यम से, दोनों संस्थान लेखापरीक्षा में एआई के उपयोग, एआई प्रणालियों की लेखापरीक्षा, क्षमता निर्माण और ज्ञान साझा करने के लिए चार प्रमुख क्षेत्रों में भागीदार होंगे। श्री बजाज ने कहा कि 'इस साझेदारी के माध्यम से हम उभरती प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके लेखापरीक्षा में उत्कृष्टता और नवाचार के लिए तत्पर हैं। एआई से सुसज्जित लेखापरीक्षा प्रक्रियाएं न केवल हमारी दक्षता को बढ़ाएंगी, बल्कि सरकार के प्रदर्शन की तुलना में जनता को अधिक आश्वासन भी प्रदान करेंगी।'

1.2 19 अप्रैल 2024 बुल्गारिया के सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान (एसएआई बुल्गारिया) साथ समझौता ज्ञापन:

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) ने अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एक कदम उठाते हुए सोफिया में एसएआई बुल्गारिया, बुल्गारियाई राष्ट्रीय लेखापरीक्षा कार्यालय के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए।

दो सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों द्वारा हस्ताक्षरित करार का उद्देश्य दोनों देशों के बीच लेखापरीक्षा के क्षेत्र में सहयोग और विशेषज्ञता के आदान-प्रदान को बढ़ाना है। इस समझौता ज्ञापन के माध्यम से, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहयोग के माध्यम से लेखापरीक्षा पेशेवरों और तकनीकी टीमों के मध्य ज्ञान और अनुभव को साझा करने के लिए एक मंच स्थापित किया जाएगा, और लेखापरीक्षा करने में आपसी सहायता की जाएगी।

बुल्गारियन राष्ट्रीय लेखापरीक्षा कार्यालय की कार्यकारी अध्यक्ष सुश्री गोरित्सा ग्रैनचरोवा–कोझारेवा के साथ सीएजी श्री मुर्मू

समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर समारोह में बुल्गारियन राष्ट्रीय लेखापरीक्षा कार्यालय की कार्यकारी अध्यक्ष सुश्री गोरित्सा ग्रैनचरोवा-कोझारेवा ने भाग लिया, जिन्होंने दोनों संस्थानों की पेशेवर क्षमता और लेखापरीक्षा पद्धति को विकसित करने और मजबूत करने में समझौते के महत्व पर बल दिया।

1.3 दिनांक - 02 मई 2024: नेपाल के सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान (एसएआई नेपाल) के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

श्री गिरीश चंद्र मुर्मू, भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक (सीएजी) ने अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एक कदम उठाते हुए नेपाल के महालेखापरीक्षक श्री तोयम राय के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। समझौते का उद्देश्य दो साई के बीच लेखापरीक्षा के क्षेत्र में सहयोग और विशेषज्ञता का आदान-प्रदान बढ़ाना है। इस समझौता ज्ञापन के माध्यम से, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहयोग और लेखापरीक्षा आयोजित करने में पारस्परिक सहायता के माध्यम से लेखापरीक्षा पेशेवरों और तकनीकी टीमों के बीच क्षमता विकास और ज्ञान और अनुभव के आदान-प्रदान के लिए एक मंच स्थापित किया जाएगा।

श्री गिरीश चंद्र मुर्मू नेपाल के महालेखापरीक्षक श्री तोयम राय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करते हुए

1.4 दिनांक-22 मई, 2024: पंचायतों और नगर निकायों के लेखाकारों के लिए प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम

स्थानीय स्वशासन (एलएसजी) के विभिन्न स्तरों पर लेखों की तैयारी में कमियां हैं, जैसा कि नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक तथा स्थानीय निधि लेखापरीक्षक द्वारा किए गए लेखापरीक्षण, एलएसजी के शासकीय विभागों द्वारा तैयार की गई विभिन्न रिपोर्टों तथा प्रगतिशील वित्त आयोगों

सभा को संबोधित करती हुई नगर पालिका निगम सागर की प्रतिनिधि

द्वारा उजागर किए गए तथ्यों से स्पष्ट है। प्राथमिक कारणों में से एक स्थानीय स्वशासन (एलएसजी) में काम करने में इच्छुक सक्षम लेखाकारों की पर्याप्त संख्या में कमी है, विशेष रूप से निचले स्तरों और दूरदराज के इलाकों में। एलएसजी के छह स्तर पंचायती राज संस्थाओं (पीआरआई) के मामले में जिला पंचायतें (डीपी), ब्लॉक पंचायत (बीपी) और ग्राम पंचायत (जीपी) तथा शहरी स्थानीय निकायों के मामले में नगर निगमों, नगरपालिकाओं और नगर पंचायतों (टीपी) हैं।

इस कमी को दूर करने के लिए, भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) और भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान (आईसीएआई) ने विभिन्न श्रेणियों के एलएसजी के लिए ऑनलाइन पाठ्यक्रमों का एक सेट विकसित करने के लिए सहयोग करने हेतु एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं, ताकि एलएसजी के समीपवर्ती क्षेत्रों से लेखाकारों का एक समूह तैयार किया जा सके, जो अपने स्थानीय क्षेत्रों में एलएसजी में लेखाकार के रूप में काम करने के इच्छुक होंगे।

प्रमाणन पाठ्यक्रम का शुभारंभ लेखापरीक्षा दिवस, 2023 पर नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कार्यालय में किया गया, जो आमतौर पर 16 नवंबर को मनाया जाता है। पाठ्यक्रम को व्यावहारिक बनाने का प्रयास किया गया है, ताकि छात्र स्थानीय सरकारी इकाइयों के लेखे तैयार करने में सक्षम हों, जहाँ वे कार्यरत हैं।

फरवरी 2024 के अंत तक पहले बैच के नामांकन के बाद, पहले बैच के लिए स्क्रीनिंग परीक्षा अप्रैल 2024 में आयोजित की गई और परिणाम 10 मई 2024 को घोषित किए गए। दोनों पाठ्यक्रमों (पीआरआई और यूएलबी) के लिए प्रारंभ में कुल 619 अभ्यर्थी पंजीकृत हुए थे। परीक्षा में 364 अभ्यर्थी शामिल हुए, जिनमें से 232 उत्तीर्ण हुए। स्क्रीनिंग परीक्षा उत्तीर्ण करने की दर क्रमशः पीआरआई और यूएलबी में 64.17% और 62.9% थी।

प्रथम स्क्रीनिंग परीक्षा का परिणाम अब वेबसाइट और ईमेल पर उपलब्ध है, तथा अभ्यर्थियों को संदेश भेजे जा रहे हैं। मुख्य परीक्षा जुलाई 2024 में आयोजित की जाएगी क्योंकि मुख्य परीक्षा के लिए पाठ्यक्रम सामग्री के अध्ययन के लिए दो महीने का समय निर्धारित किया गया है।

इस बीच, दूसरे बैच के लिए पंजीकरण जोरों पर है। दूसरे बैच के लिए पंजीकरण मार्च में शुरू हुआ था और अब तक 550 से अधिक पंजीकरण हो चुके हैं।

विभिन्न राज्य सरकारें इस प्रयास को बढ़ावा देने के लिए आगे आ रही हैं। पश्चिम बंगाल सरकार के विशेष सचिव ने पश्चिम बंगाल के मेयर/ सभी नगर निगमों के नगर आयुक्त, नगर पालिकाओं/अधिसूचित क्षेत्र प्राधिकरणों को अपने कार्यालयों से नामांकन प्रायोजित करने के लिए पत्र लिखा है। राजस्थान में, संबंधित विभाग द्वारा शहरी स्थानीय निकायों के सभी लेखा कर्मियों को पाठ्यक्रम के लिए नामांकन करने का निर्देश दिया गया है। सिक्किम में, सभी लेखा कर्मियों को पाठ्यक्रम के लिए नामांकन करना अनिवार्य किया गया है ।

2. सेवानिवृत्ति

उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

2.1 सुश्री अदिति रॉयचौधुरी

इस अवधि में सबसे पहले दिनांक 31 जनवरी को सुश्री अदिति रॉयचौधुरी सेवानिवृत्त हुईं। कोलकाता की साल्टलेक निवासी सुश्री रॉयचौधुरी के विभागीय कैरियर की शुरुआत 31 अगस्त 1987 में हुई थी जब उन्होने महालेखाकार के कार्यालय (लेखा व हकदारी), पश्चिम बंगाल में सहायक महालेखाकार का पद संभाला। उड़ीसा व चेन्नई के कार्यालयों में भी कार्य कर चुकी रॉयचौधुरी महोदया ने पहली बार महालेखाकार के ग्रेड पर क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान जयपुर के प्रधान निदेशक के रूप में पदभार संभाला। जबकि प्रधान महालेखाकार के रूप में पश्चिम बंगाल में ही लेखा व हकदारी के कार्यालय में कार्य किया। बीच में वे कुछ अवधि तक प्रतिनियुक्ति पर पश्चिम बंगाल सरकार में भी रहीं। इसके अतिरिक्त सुश्री रॉयचौधुरी ने इंडोनेशिया , जापान , संयुक्त राज्य अमेरिका (वाशिंगटन) व मालदीव आदि देशों में भी कार्य किया।

2.2 श्री सारित जफा

विधि स्नातक उपाधि धारक श्री जफा ने भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखासेवा में दिसंबर 1987 में प्रवेश किया। प्रयागराज (तत्कालीन इलाहाबाद) के लेखा व हकदारी कार्यालय में सहायक महालेखाकार के रूप में श्री जफा ने पदभार संभाला। बाद में इन्होने प्रयागराज में ही प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक सेवा लेखापरीक्षा) के पद पर कार्य किया। अपने सेवाकाल में इन्हें संयुक्त राष्ट्र संगठन (यूएन) व कैबिनेट सचिवालय में भी कार्य करने का मौका मिला। विदेशों में आपने कोसोवो, अंगोला, न्यूयॉर्क एवं विएना आदि स्थानों में अपनी सेवाएँ दीं।सीएजी मुख्यालय में डीएआई (रक्षा) के पद पर कार्यरत रहते हुए जनवरी 2024 में सेवा निवृत हुए।

2.3 सुश्री मधुमिता बसु

सुश्री मधुमिता बसु ने मध्य प्रदेश के महालेखाकार (लेखा व हकदारी) कार्यालय, ग्वालियर से अपनी शासकीय सेवा की शुरुआत की जहाँ उन्हें अगस्त 1990 में सहायक महालेखाकार के पद पर नियुक्त किया गया। अर्थशास्त्र में एमए सुश्री बसु ने उपसचिव के रूप में कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय को भी अपनी सेवाएँ दीं। महालेखाकार के रूप में पहली बार उन्होने रेल सुरक्षा इकाई व मेट्रो रेलवे लेखापरीक्षा कोलकाता कार्यालय में प्रधान निदेशक के पद पर कार्य किया। व्यवसाय प्रबंधन में परास्नातक डिप्लोमा सुश्री बसु की नियुक्ति ब्राज़ील, मिस्र, रोम व सं.रा.अमेरिका में भी कार्य किया। डीएआई (रिपोर्ट सेंट्रल) के पद पर रहते हुए फरवरी 2024 में वे सेवानिवृत हुईं।

2.4 श्री आर जी विश्वनाथन

तमिलनाडु के तत्कालीन मद्रास जो अब चेन्नई है, के निवासी श्री राज गणेश विश्वनाथन रसायनशास्त्र में परास्नातक हैं। वर्ष 1987 बैच के अधिकारी की प्रथम नियुक्ति चेन्नई के प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) कार्यालय में सहायक महालेखाकार के पद पर हुई। वरिष्ठ उपमहालेखाकार के पद पर कुछ अवधि तक श्री विश्वनाथन की नियुक्ति लंदन में भी रही। महालेखाकार के पद पर पहली बार श्री विश्वनाथन ओरिएंटल इन्शुरेंस कंपनी के वित्तीय सलाहकार के रूप में नियुक्त हुए जबकि इन्हें एडीएआई के पद पर प्रथम नियुक्ति जयपुर में सामान्य एवं सामाजिक लेखापरीक्षा कार्यालय में मिली। बीच बीच में इन्होने विदेशों में रियाध , अंगोला , जेनेवा, बीजिंग, लाहौर , न्यूयार्क , मिस्र , स्विट्ज़र लैंड व आस्ट्रिया आदि स्थानों में भी अपनी सेवाएँ दीं। अप्रैल 2024 में डीएआई (वाणिज्यिक) के पद से सेवानिवृत हुए।

3. उदघाटन/स्थापना/सम्मेलन/कार्यशाला

3.1 दिनांक 30/01/2024 : सामाजिक मूल्यों से सीखी जा सकती है नैतिकता

भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक (CAG) श्री गिरीश चंद्र मुर्मू ने गलगोटियास यूनिवर्सिटी में एथिकल ऑडिट विषय पर आयोजित व्याख्यान में कहा कि नैतिकता जीवन का अहम विचार है। इसके बिना खुद के साथ राष्ट्र और समाज का विकास संभव नहीं। नैतिकता हर सुख-दुख में मददगार होती है। इसलिए नैतिकता की अनदेखी नहीं की जा सकती है। उन्होंने कहा कि नैतिकता सभ्यतागत पहचान है। किसी भी समाज, किसी भी समाज किसी भी समुदाय, किसी भी राज्य और किसी भी राष्ट्र के लिए नैतिकता बेहद अहम है।

व्याख्यान में सीएजी श्री जीसी मुर्मू ने कहा कि जीवन में नैतिकता कानूनी, सामाजिक और नैतिक रूप से भी हमारी जिम्मेदारी है। हमें इस बात का हमेशा अपने नैतिक कर्तव्यों का पालन करना चाहिए।

उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि कि यहां आप छात्र होने के नाते, विभिन्न पाठ्यक्रमों का अध्ययन करके डिग्रियां हासिल कर रहे हैं। आपकी शिक्षा में भी नैतिकता होनी

गलगोटियास यूनिवर्सिटी में एथिकल ऑडिट विषय पर आयोजित व्याख्यान में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री गिरीश चंद्र मुर्मू

चाहिए, क्योंकि नैतिकता के लिए नेतृत्व की आवश्यकता होती है। नैतिकता पारिवारिक मूल्यों और संस्थागत नेतृत्व में सामाजिक मूल्यों से सीखी जा सकती है। उन्होंने कहा कि चाहे निजी क्षेत्र हो या सार्वजनिक, नैतिकता का योगदान हर जगह बेहद अहम होता है। नैतिकता ही हर सुख-दुख में मददगार होती है। इसलिए नैतिकता की अनदेखी नहीं की जा सकती। श्री मुर्मू ने कहा कि नैतिकता एक सभ्यतागत पहचान है। किसी भी समाज, किसी भी समुदाय, किसी भी राज्य और किसी भी राष्ट्र के लिये नैतिकता बेहद अहम है।

एथिकल ऑडिट के क्षेत्र में श्री जीसी मुर्मू का अहम योगदान

गलगोटियास यूनिवर्सिटी के चांसलर के सलाहकार और पूर्व आईएएस अधिकारी डॉ. प्रभात कुमार ने एथिकल ऑडिट के क्षेत्र में श्री जीसी मुर्मू के योगदान की विस्तार से जानकारी दी। विश्वविद्यालय के चांसलर सुनील गलगोटिया ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। वॉइस चांसलर डॉ. के. मल्लिकार्जुन बाबू ने भी नैतिकता की अवधारणा की विस्तार से चर्चा करते हुए एथिकल ऑडिट विषय की जानकारी दी।

3.2 अवधि / दिनांक : दिनांक 28/02/2024 से 01/03/2024

सीएजी मुख्यालय में जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को मजबूत बनाने पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

सीएजी मुख्यालय में जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को मजबूत बनाने पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए श्री मुर्मू ने कहा कि "स्थानीय सरकारें शासन के स्पेक्ट्रम में सबसे महत्वपूर्ण कड़ी हैं"। उन्होंने कहा कि ये संस्थान समाज की उन्नति और नागरिकों के जीवन में सुधार के लिए आवश्यक हैं। "यही वह स्तर है जहां लोगों की आकांक्षाएं, चिंताएं और आवश्यकताएं सबसे अधिक तीव्रता से महसूस की जाती हैं और उनका समाधान किया जाता है। यहीं पर विकास कार्यक्रमों की स्थानीय स्तर की योजना बनाई जाती है। 'आगे उन्होंने कहा, 'ये निकाय आपदाओं और महामारियों से निपटने वाले पहले निकाय हैं और सतत विकास लक्ष्यों के कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण हैं.'

सीएजी ने लोकल गवर्नेंस इन इंडिया - इनिशिएटिव्स एंड अपॉर्चुनिटीज नामक एक पुस्तक भी जारी की । यह पुस्तक स्थानीय शासन के क्षेत्र में भारत की चुनौतियों और प्रमुख प्रगति पर प्रकाश डालती है।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) श्री गिरीश चंद्र मुर्मू ने गुजरात के राजकोट में भारत के सर्वोच्च लेखा परीक्षा संस्थान, स्थानीय शासन के लेखापरीक्षा के लिए

जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को मजबूत बनाने पर तीन दिवसीय सम्मेलन

अंतर्राष्ट्रीय केंद्र (आईसीएएल) की स्थापना की भी घोषणा की। 'जमीनी स्तर पर लोकतंत्र और जवाबदेही को मजबूत बनाने' पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के समापन पर, श्री मुर्मू ने कहा कि स्थानीय सरकारों ने नागरिकों के जीवन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रभावी लेखा मंच और लेखापरीक्षा तंत्र यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं कि सार्वजनिक संसाधनों का कुशलतापूर्वक और समुदाय के लाभ के लिए उपयोग किया जाए।

इस सम्मेलन में जॉर्जिया, मलेशिया, मालदीव, माल्टा, मोरक्को, नेपाल, ओमान, पोलैंड, दक्षिण अफ्रीका और युगांडा के सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों (एसएआईएस) के सम्मानित प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया ।

3.3 दिनांक - 15/03/2024: एसआरसीसी बिजनेस कनक्लेव

दिनांक 15/03/2024 को नई दिल्ली में एसआरसीसी बिजनेस कनक्लेव का आयोजन हुआ जिसमें सीएजी श्री मुर्मू ने भी भाग लिया।

इस सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होने कहा कि जवाबदेही, पारदर्शिता, दक्षता और प्रभावशीलता ऐसे तत्व हैं जिनका परीक्षण लेखापरीक्षा में किया जाता है। सरकार के कामकाज पर इस तरह के स्वतंत्र नियंत्रण कार्यपालिका को विश्वसनीयता और बड़े पैमाने पर जनता को विश्वास प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि सरकार की जवाबदेही सुनिश्चित करने से उसकी वित्तीय स्थिरता और वैश्विक स्तर पर उसकी छवि सुरक्षित रहती है।

3.4 दिनांक - 19/03/2024: सीएजी मुख्यालय में "जलवायु वित्त" पर कार्यशाला

जलवायु वित्तपोषण अधिक लचीला और स्थाई भविष्य की ओर बढ़ने के हमारे सामूहिक प्रयासों की कुंजी है। यह परिवर्तन, देशों, समुदायों और व्यवसायों को हरित प्रौद्योगिकियों को अपनाने, नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश करने और स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए एक उत्प्रेरक है। यह भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री गिरीश चंद्र मुर्मू ने आज यहां जलवायु वित्तपोषण पर एक दिवसीय संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा था।

"जलवायु वित्त" कार्यशाला पर एक दिवसीय संगोष्ठी

सीएजी ने आगे कहा कि 'वार्षिक जलवायु वित्त की जरूरतों में काफी वृद्धि होने का अनुमान है, जो 2050 तक सालाना $10 ट्रिलियन से अधिक है। इन वित्तीय मांगों को पूरा करने में विफल रहने से वैश्विक तापमान में वृद्धि होगी, साथ ही जलवायु से संबंधित आपदाओं के सामाजिक-आर्थिक परिणामों को तेज करेगा। दुर्भाग्य से, कठोर लागत-लाभ विश्लेषण के बावजूद, जलवायु वित्त काफी अपर्याप्त बना हुआ है।'

सुश्री चांदिनी रैना, आर्थिक सलाहकार, वित्त मंत्रालय; श्री सौरव सिन्हा, कार्यकारी निदेशक, आरबीआई; श्री दिव्यांक सिंह, सीईओ, स्मार्ट सिटी इंदौर और अतिरिक्त नगर निगम आयुक्त इंदौर, डॉ. सत्य प्रिया रथ, निदेशक (बजट), वित्त विभाग, ओडिशा सरकार और श्री एस. अलोक, लेखापरीक्षा, रक्षा सेवा के महानिदेशक ने जलवायु वित्त, भारत की जलवायु वित्त रणनीति के प्रमुख घटक; जलवायु परिवर्तन से वित्तीय जोखिमों को हल करना; जलवायु वित्त को अनलॉक करना- एक स्थायी भविष्य में संक्रमण पर जलवायु वित्त एवं लेखापरीक्षा के दृष्टिकोण के अवलोकन जैसे विषयों पर अपने अनुभव साझा किए।

3.5 दिनांक - 24 जून, 2024 : शिमला में चैडविक हाउस संग्रहालय का उद्घाटन

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक, श्री गिरीश चंद्र मुर्मू ने आज शिमला में 'चैडविक हाउस-नेविगेटिंग ऑडिट हेरिटेज' संग्रहालय का उद्घाटन किया, जो सीएजी की समृद्ध विरासत और राष्ट्र के शासन में योगदान की संस्था के संरक्षण और उत्सव में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इस कार्यक्रम में सीएजी के लेखापरीक्षा सलाहकार बोर्ड के सदस्यों, राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों और अन्य विशिष्ट अतिथियों ने भाग लिया। चैडविक हाउस में स्थित संग्रहालय को एक अत्याधुनिक सुविधा के रूप में विकसित किया गया है जो सीएजी की संस्था के विकास, उपलब्धियों और मील के पत्थर को प्रदर्शित करता है।

उद्घाटन के बाद, श्री मुर्मू ने संग्रहालय का एक निर्देशित दौरा किया, विभिन्न प्रदर्शनियों की खोज की जो भारत में लेखापरीक्षा के इतिहास, महत्वपूर्ण लेखापरीक्षा और राष्ट्र के शासन में सीएजी की संस्था के उल्लेखनीय योगदान को क्रॉनिकल करते हैं। इंटरएक्टिव डिस्प्ले, डायरामा और मल्टीमीडिया प्रस्तुतियां प्रख्यात आंकड़ों और संस्थागत उपलब्धियों का एक विशद चित्रण प्रदान करती हैं।

चैडविक हाउस स्थित संग्रहालय अब जनता के लिए खुला है और सीएजी संस्थान की विरासत और सतत यात्रा के बारे में और जानने के लिए जीवन के सभी क्षेत्रों से आगंतुकों का स्वागत करता है।

महत्वपूर्ण बिन्दु:

- यह संग्रहालय शिमला के चैडविक हाउस में स्थित है, जहां स्वतंत्र भारत के भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा सेवा के अधिकारियों के एक बैच ने 1950 में प्रशिक्षण लिया था।
- संग्रहालय में रेमिंगटन टाइपराइटर, ब्रिटिश युग की फ्रैंकिंग मशीन, घड़ियां और सीएजी के क्षेत्रीय कार्यालयों से ट्राफियां सहित कलाकृतियों का खजाना है।
- संग्रहालय में अत्याधुनिक इंटरैक्टिव डिस्प्ले, डायरामा सेट हैं, जिनमें डिजिटल अभिलेखागार, ऑडियो-विजुअल प्रस्तुतियां और इंटरैक्टिव कियोस्क शामिल हैं।
- संग्रहालय में 10 गैलरी हैं, जिनमें से प्रत्येक सीएजी के इतिहास और योगदान के संस्थान के एक अलग पहलू को उजागर करती है।

संग्रहालय सार्वजनिक रूप से खुला है और सीएजी की संस्था की विरासत और निरंतर यात्रा के बारे में और जानने के लिए जीवन के सभी क्षेत्रों से आगंतुकों का स्वागत करता है।

चैडविक हाउस संग्रहालय में डेस्क पर बैठे श्री सी.वी. रमन की मूर्ति

4. विदेशी दौरे

4.1 दिनांक – 24/04/2024: स्पेन के लेखा न्यायालय के साथ द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देने के लिए स्पेन का दौरा

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) श्री गिरीश चंद्र मुर्मू ने स्पेन के लेखा न्यायालय (ट्रिब्यूनल डी

स्पेन के लेखा न्यायालय की अध्यक्ष सुश्री एनरिकेटा चिकानो के साथ सीएजी श्री मुर्मू

क्यूएंटस) के कार्यालय का दौरा किया, ताकि दोनों संस्थाओं के बीच द्विपक्षीय सहयोग, ज्ञान साझाकरण और क्षमता विकास को मजबूत किया जा सके। इस यात्रा का उद्देश्य दोनों देशों की सर्वोच्च लेखा परीक्षा संस्थाओं के कामकाज पर गहन चर्चा करना और सहयोग के अवसरों की खोज करना था।

अपनी यात्रा के दौरान, श्री मुर्मू ने स्पेन के लेखा न्यायालय की अध्यक्ष सुश्री एनरिकेटा चिकानो के साथ गहन विचार-विमर्श किया। चर्चाएँ संबंधित अधिदेशों, संगठनात्मक संरचना, लेखापरीक्षा योजना और निष्पादन पद्धतियों, संस्थागत स्वतंत्रता और दोनों संस्थानों द्वारा हाल ही में की गई पहलों के इर्द-गिर्द घूमती रहीं। सुश्री चिकानो ने कार्यकारी शाखा से लेखा न्यायालय को प्राप्त स्वतंत्रता के बारे में विस्तार से बताया और निष्पादन लेखापरीक्षा और सार्वजनिक नीतियों के मूल्यांकन में हाल ही में की गई पहलों पर प्रकाश डाला।

5. स्वास्थ्य कैंप - दिनांक / अवधि : 27 से 29 अप्रैल 2024 सीएजी कार्यालय में संविदा कर्मचारियों के लिए स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा अधिकारी पत्नी संघ (आईएएओडब्ल्यूए) ने भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कार्यालय में वर्तमान में कार्यरत सैकड़ों संविदा कर्मचारियों के लिए स्वास्थ्य 2024 नामक तीन दिवसीय स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया।

27 से 29 अप्रैल के बीच आयोजित इस स्वास्थ्य पहल का आयोजन नई दिल्ली स्थित सीएजी मुख्यालय में किया गया, जहां चिकित्सा शिविर के पहले चरण के दौरान लगभग 475 संविदा कर्मचारियों की स्वास्थ्य जांच की गई, दूसरे चरण के दौरान लगभग 800 श्रमिकों को कवर किया जाएगा।

यह दूसरी बार है जब आईएएओडब्ल्यूए ने स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया है, जिसका उद्देश्य कार्यबल को

गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवाएं प्रदान करना है, साथ ही दीर्घकालिक स्वास्थ्य रखरखाव के लिए निवारक देखभाल एवं नियमित जांच के महत्व पर जोर देना है।

समापन समारोह में, सीएजी श्री गिरीश चंद्र मुर्मू की पत्नी एवं आईएएओडब्ल्यूए की संरक्षक श्रीमती डॉ. स्मिता मुर्मू ने डॉक्टरों से बातचीत की एवं सामाजिक कार्यों के प्रति उनके समर्पण की सराहना की। उन्होंने स्वास्थ्य लाभार्थियों से भी बातचीत की एवं उनके अनुभव सुने। कर्मचारियों के लिए स्वास्थ्य योजना तैयार करने में डॉ. मुर्मू की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

स्वास्थ्य शिविर का उद्घाटन करने वाली आईएएओडब्ल्यूए की अध्यक्ष सुश्री सुसान विश्वनाथन ने कहा, "हमारा मानना है कि समय पर जांच, उपचार एवं परामर्श के साथ, हमारे जैसे स्वास्थ्य शिविर हमारे बीच कमज़ोर लोगों के स्वास्थ्य एवं जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने में मदद कर सकते हैं।" स्वास्थ्य सेवा पहल नियमित स्वास्थ्य जांच, निगरानी एवं उपचार के महत्व के बारे में कर्मचारियों को संवेदनशील बनाने की दिशा में एक सकारात्मक कदम है। आईएएओडब्ल्यूए ने ऐसे और शिविर आयोजित करने एवं दृष्टि सुधार की ज़रूरत वाले लोगों को मुफ़्त दवाइयाँ एवं चश्मे उपलब्ध कराने की योजना बनाई है।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के मेडिसिन विभाग के प्रोफेसर डॉ. संजीव सिन्हा ने तीन दिवसीय स्वास्थ्य शिविर के लिए ईएनटी, नेत्र विज्ञान, त्वचा विज्ञान एवं चिकित्सा के क्षेत्रों से 14 चिकित्सा विशेषज्ञों की एक टीम उपलब्ध कराई।

5. खेल समाचार

सीएजी का टेनिस टूर्नामेंट

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय प्रतिष्ठित आर.के. खन्ना स्टेडियम, नई दिल्ली में सीएजी टेनिस टूर्नामेंट के विभिन्न संस्करणों का आयोजन करता रहा है।

आर.के. खन्ना स्टेडियम में सीएजी खिलाड़ियों के साथ

सीएजी का XVवां टेनिस टूर्नामेंट 20 से 22 मार्च, 2024 तक आयोजित किया गया था। टूर्नामेंट में पत्नी एवं बच्चों सहित लगभग चालीस आईएएस अधिकारियों ने भाग लिया।

वर्तमान संस्करण का परिणाम निम्नानुसार है:

पुरुष युगल में

विजेता– श्री के. बी. जमाल एवं श्री वी. एस. वेंकटनाथन

उपविजेता- श्री प्रतीक एवं श्री पीयूष

महिला एकल में

विजेता– सुश्री मेघना

उपविजेता-सुश्री. अनुष्का

किड्स एकल में

6-7 वर्ष आयु वर्ग

1. **विजेता-केशव**
2. उपविजेता-कौस्तुभ

8-9 वर्ष आयु वर्ग

1. **विजेता-माधव**
2. उपविजेता-आरव

11-14 वर्ष आयु वर्ग

1. **विजेता- आर्यन पी**
2. उपविजेता-नेहा

खिलाड़ियों के साथ सीएजी

6. महिला दिवस

सीएजी मनोरंजन क्लब ने (8 मार्च को महाशिवरात्रि का राजपत्रित अवकाश होने के कारण) 7 मार्च 2024 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। कार्यक्रम का उद्घाटन रेबेका माथाई, डीएआई (वित्त और संचार) द्वारा किया गया। मनोरंजन क्लब की कार्यकारी सदस्य सुनीता पंडिता ने डीएआई महोदया का स्वागत बुके देकर किया। सभी महिला समूह अधिकारी वहां उपस्थित थीं। कार्यक्रम की शुरुआत गणेश वंदना से हुई, जिसे उमा कृष्णन, एएओ वाणिज्यिक – पंचम) ने प्रस्तुत किया। इसके बाद, कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा विभिन्न क्षेत्रीय समूह और एकल नृत्य प्रस्तुत किए गए। अंत में, समारोह का समापन दोपहर के भोजन के साथ हुआ।

आईएएओडब्ल्यूए द्वारा सीएजी कार्यालय के सभागार में महिला दिवस का आयोजन

महिला दिवस की झलकियाँ

7. अन्य समाचार

7.1 सीएजी में कार्यरत एएओ के सुपुत्र बने यूपीएससी (2023) टापर

16 अप्रैल 2024 को संघ लोक सेवा आयोग द्वारा भारतीय प्रशासनिक सेवा के अंतिम परिणाम की घोषणा की गई जिसमें लखनऊ स्थित महालेखाकार लेखापरीक्षा (द्वितीय) के कार्यालय में सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी के पद पर कार्यरत श्री अजय कुमार श्रीवास्तव के सुपुत्र श्री आदित्य कुमार श्रीवास्तव ने सम्पूर्ण भारत की रैंकिंग में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

7.2 आईएएएस 2023 के नए बैच ने माननीय राष्ट्रपति महोदया से मुलाक़ात की।

आईएएएस 2023 के प्रशिक्षुओं के साथ माननीय राष्ट्रपति महोदया

सीएजी - सुर्खियों में

कैग ने नेपाल के ऑडिटर जनरल के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर

विशेष प्रतिनिधि

नई दिल्ली। भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) गिरीश चंद्र मुर्मू ने अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाते हुए नेपाल के महालेखा परीक्षक टोयम राया के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू का उद्देश्य नेपाल के साथ सहयोग और आदान-प्रदान को बढ़ाना है। इस एमओयू के माध्यम से क्षमता विकास एवं आदान-प्रदान हेतु प्लेटफार्म की स्थापना की जायेगी। श्री मुर्मू ने नेपाल के प्रधानमंत्री से मुलाकात ...

भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) गिरीश चंद्र मुर्मू नेपाल के महालेखा परीक्षक टोयम राया के साथ एमओयू पर ... आदान-प्रदान करते हुए।

बीच घनिष्ठ साझेदारी पर प्रकाश डाला। श्री मुर्मू ने उन्हें एसएआई इंडिया द्वारा की गई विभिन्न पहलों से भी अवगत कराया। श्री मुर्मू ने लोक लेखा समिति के अध्यक्ष से भी मुलाकात की। एमओयू पर हस्ताक्षर समारोह के दौरान श्री मुर्मू ने अपने विचार व्यक्त किये। श्री मुर्मू ने जोर देते हुए कहा ... समझौते का महत्व व्यावसायिक क्षमता को विकसित करना और मजबूत करना है। एमओयू पर हस्ताक्षर घनिष्ठ संबंधों को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। भारत के सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों (एसएआई) के बीच सहयोग और नेपाल ऑडिटिंग प्रथाओं में उत्कृष्टता के लिए साझा प्रतिबद्धता ... कर रहा है।

कैग रिपोर्ट • कई बोर्ड के खातों में करोड़ों की वित्तीय अनिमितता

केंद्र के 472 में से आधे स्वायत्त बोर्ड्स का इंटरनल ऑडिट नहीं, 11 हजार करोड़ खर्च नहीं

भास्कर न्यूज़ | नई दिल्ली

केंद्र सरकार के तहत आने वाले 472 केंद्रीय स्वायत्त बोर्ड्स के खातों में राष्ट्रीय लेखाकार-नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक(कैग) को अनियमितताएं मिली हैं। इनके खातों के विश्लेषण के दौरान कैग को पता चला है कि बोर्ड्स को 2021-22 में आवंटित राशि में से 11 हजार करोड़ से अधिक राशि खर्च ... हो पाई। नियम ...

बाउंड्री वॉल पर फिजूलखर्ची, फैकल्टी को ज्यादा भुगतान

सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, कोकराझार ने एक बाउंड्री वॉल पर 71 लाख की फिजूलखर्ची की। आईआईएम, गांधीनगर ने अनुबंध कर्मचारियों के लिए नई पेंशन मद में 70 लाख रुपए का गैर जरूरी भुगतान किया। आईआईटी, नई दिल्ली ने 6.47 करोड़ के गैर जरूरी पेमेंट किए। नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ टेक्निकल टीचर्स ट्रेनिंग एंड रिसर्च ... ने व्यावहारिकता का आकलन किए बिना 1.45 करोड़ ... दिया।

... शिक्षा से जुड़े ... स्वास्थ्य बोर्डों ... की। रिपोर्ट ... 0 केंद्रीय ... आंतरिक ... सीएबी ... जिकल

योजना बनाने से लेकर उसको पूरा करने तक में अफसर-ठेकेदारों ने जमकर किए खेल

पीएचई के नल में मनमानी का जल

सीएजी ने अपनी रिपोर्ट में योजना पर उठाए सवाल

पत्रिका | patrika.com

इंदौर. जनता को पेयजल उपलब्ध कराने के लिए जिम्मेदार लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग (पीएचई) ... पीएचई के 10 संभागों की भारत के नियंत्रक महालेखा परीक्षक (सीएजी) ने जांच की थी। सीएजी ने अपनी रिपोर्ट में विभाग की योजनाओं को कटघरे में खड़ा कर ...

ऐसे भी हुए खेल

रिपोर्ट में ये गड़बड़ियां पकड़ी

1. नल जल योजना में 491 गांवों में से 373 गांवों की ही डीपीआर बनाई। इनमें से 273 को स्वीकृति मिली। बाकी के 107 गांवों की डीपीआर बनाने 4.96 ...

2. 2013 से 2020 तक पीएचई ने 144 योजनाओं के लिए कंसल्टेंट से डीपीआर बनवाई। इनमें से केवल 64 योजनाओं को ही शुरू किया गया। जिनमें से 2 पानी के स्रोत नहीं ...

पैसों का खेल

- 2018-19 और 2020-21 में अफसरों ने 1825.04 करोड़ रुपए की व्यय राशि में से 1012.70 करोड़ भुगतान की प्रत्याशा में ही आहरित कर लिया था।
- 2019 में शुरू भारत सरकार के जल जीवन मिशन में 2017 में चालू हो चुकी बकस्वाहा और 2018 से चल रही समूह-जलप्रदाय योजनाएं को बदल दिया गया। जल जीवन मिशन में प्रोजेक्ट का आधा पैसा केंद्र सरकार दे रही थी। जबकि पहले से चल रही ये दोनों योजना राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक और न्यू डेवलपमेंट बैंक से वित्त पोषित थी। पहले से तय योजना में जो काम होने थे, उनके ...
- ... 72.90 करोड़ का सीधा लाभ पहुंचाया।
- पीएचई की तकनीकी समिति ने 2018 में ओवरहेड टैंक के निर्माण की दर तय की थी। लेकिन राजगढ़, रायसेन, बैतूल और मंडला में इस दर के बजाय बिल ऑफ क्वांटिटी को अपनाया। जिससे 78.51 लाख की लागत बढ़ गई।
- दमोह, सतना और मुरैना में पाइप योजनाओं के ट्रायल रन के पूरा होने के पहले ही 43.21 लाख ...

एआई ऑडिटरों को निर्णय लेने में सशक्त बनाता है: सीएजी

सीएजी और आईआईटी, दिल्ली के बीच ... को आयोजित एमओयू हस्ताक्षर समारोह को सम्बोधित करते हुए सीएजी गिरीश चंद्र मुर्मू।

विशेष प्रतिनिधि

नई दिल्ली। एआई ऑडिटरों को निर्णय लेने में सशक्त बनाता है। यह बात सीएजी गिरीश चंद्र मुर्मू ने आज यहां सीएजी और आईआईटी, दिल्ली के बीच आयोजित एमओयू हस्ताक्षर समारोह में कही।

उन्होंने कहा कि चाहे वह धोखाधड़ी वाली गतिविधियों का पता लगाना हो, या अनुपालन प्रक्रियाओं को अनुकूलित करना हो, एआई-संचालित समाधान ऑडिटरों को लगातार बदलते परिवेश के अनुकूल होने और कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि प्रदान करने के लिए सशक्त बनाते हैं जो सूचित निर्णय लेने को प्रेरित करते हैं। सीएजी ने ... साथ मिलकर, हमारे पास एक ऐसे भविष्य ... एआई सकारात्मक ... में कार्य करेगा, ले... अंतर्दृष्टि अनलॉक ... बढ़ावा देने और राष्ट्... सशक्त करेगा।'सम... उपस्थिति में आनंद ... अधिकारी और अ...

... निदेशक, आईआईटी दिल्ली द्वारा ... ने कहा कि एआई- ...

राष्ट्रीय जलवायु कार्रवाई के निष्पक्ष ऑडिट आकलन के लिए डेटा अखंडता जरूरी: सीएजी

वीर अर्जुन समाचार ब्यूरो

नई दिल्ली। भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक गिरीश चंद्र मुर्मू ने एक पैनल चर्चा के दौरान कहा, किसी भी राष्ट्रीय जलवायु कार्य योजना के निष्पक्ष ऑडिट मूल्यांकन के लिए डेटा अखंडता आवश्यक है, जिसके अभाव के परिणामस्वरूप जलवायु डेटा में पक्षपात और गलत नीतिगत निर्णय हो सकते हैं।

दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन 25 और 26 मार्च को संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में संयुक्त राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक मामलों के विभाग (यूएन डीईएसए) और संघीय लेखा न्यायालय - ब्राजील (टीसीयू) द्वारा किया गया था। इस अवसर पर श्री मुर्मू ने कहा कि सर्वोच्च लेखा परीक्षा संस्थानों को राष्ट्रीय जलवायु कार्रवाई का आकलन करते समय कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जिसमें डेटा अंतराल, अधूरे रिकॉर्ड और सीमित संख्या में ... शामिल हैं। ...

भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक गिरीश चंद्र मुर्मू कार्यक्रम में भाग लेते हुए।

... अपनाने से डेटा की तुलना और एकत्रीकरण का कार्य विश्व स्तर पर चुनौतीपूर्ण हो जाता है। ... कहा कि इसके लिए ...

नीतिगत पहलुओं की अच्छी समझ शामिल होती है। एक और महत्वपूर्ण चुनौती कई विकासशील एसएआई द्वारा सामना की जाने वाली क्षमता की कमी है। मजबूत मूल्यांकन प्रणालियों को लागू करने के लिए पर्याप्त बुनियादी ढांचा, तकनीकी विशेषज्ञता और वित्तीय संसाधन महत्वपूर्ण हैं। मुर्मू ने कहा, राजनीतिक और शासन संबंधी मुद्दे भी प्रभावी माप, रिपोर्टिंग और सत्यापन में बाधा उत्पन्न करते हैं। कुछ देशों में आर्थिक प्रतिस्पर्धा या राष्ट्रीय सुरक्षा के बारे में चिंताओं के कारण अपने उत्सर्जन डेटा को पारदर्शी रूप से रिपोर्ट करने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी हो सकती है। एक अलग कार्यक्रम में, भारत के सीएजी ने औपचारिक रूप से एसएआई 20 एंगेजमेंट ग्रुप की अध्यक्षता ब्राजील के संघीय लेखा ... अध्यक्ष, मंत्री ब्रूनो दांतास को सौंपी। ... में, श्री मुर्मू ने एसएआई ब्राजील ... अध्यक्षता के दौरान दो प्रासंगिक ... वित्त और भूख और गरीबी के ... पर ध्यान केंद्रित करने के लिए

भारत, बुल्गारिया के ऑडिट संस्थानों के बीच सहयोग समझौता

एक समझौते पर हस्ताक्षर के दौरान भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) बुल्गारिया के राष्ट्रीय लेखा परीक्षा कार्यालय एसएआई बुल्गारिया के साथ।

नई दिल्ली, ... भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) ने बुल्गारिया के राष्ट्रीय लेखा परीक्षा कार्यालय एसएआई बुल्गारिया के साथ अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।

कैग ने यहां जारी एक बयान में कहा कि दोनों देशों के शीर्ष ऑडिट संस्थानों ने इस आशय के समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इसका उद्देश्य दोनों देशों के बीच ऑडिटिंग के क्षेत्र में सहयोग और विशेषज्ञता का आदान-प्रदान बढ़ाना है।

एमओयू के जरिये प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहयोग और ऑडिट कार्यों में परस्पर सहयोग से ऑडिटिंग पेशेवरों और तकनीकी टीमों के बीच ज्ञान और अनुभव के आदान-प्रदान के लिए एक मंच ... भारत ... नियंत्रक एवं ... लेखा परीक्षक गिरीश चंद्र ... समय बुल्गारियाई राष्ट्रीय लेखा परीक्षा कार्यालय की कार्यवाहक अध्यक्ष ... कोलोवा भी ... रहीं। ... उन्होंने कहा कि दोनों संस्थान साथ मिलकर काम करने के लिए तत्पर हैं।

मुर्मू ने इस सहयोग समझौते के महत्व को बताते हुए कहा कि इससे दोनों देशों के बीच पहले से ...

सीएजी ने द्विपक्षीय संबंध मजबूत करने के लिए स्पेन का दौरा किया

वीर अर्जुन संवाददाता

नई दिल्ली। भारत के सीएजी ने ... लेखा न्यायालय के साथ द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के लिए स्पेन का दौरा किया। भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) गिरीश चंद्र मुर्मू ने दोनों संस्थानों के बीच द्विपक्षीय सहयोग, ज्ञान ... और क्षमता विकास को ... मजबूत करने के लिए स्पेन के लेखा न्यायालय (ट्रिब्यूनल डी कुएंटास) के कार्यालय का दौरा किया। इस यात्रा का उद्देश्य दोनों देशों के संबंधित सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों के कामकाज पर चर्चा को गहरा करना और सहयोग के रास्ते तलाशना है। अपनी यात्रा के दौरान, श्री मुर्मू ने स्पेन के लेखा न्यायालय की अध्यक्ष सुश्री एनरिकेटा चिकनो के साथ व्यापक विचार-विमर्श किया।

सुश्री चिकनो ने कार्यकारी ...

भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक गिरीश ... चिकनो से ... न्यायालय की अध्यक्ष सुश्री एनरिकेटा चिकनो से ...

... राज्य से लेखा न्यायालय द्वारा प्राप्त ... के बारे में विस्तार से बताया और प्रदर्शन लेखापरीक्षा और सार्वजनिक नीतियों के मूल्यांकन में हाल की पहल के बारे में बताया। श्री मुर्मू ने हाल ही में सूचना प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने, पर्यावरण ऑडिट ... और ... क्षेत्रों में ... जोर पर ... ने द्विपक्षीय ... में पारस्परिक ... निकट भवि... (एमओयू) ...

इस प्रतिबद्धता को औपचारिक रूप देने की योजना की रूपरेखा तैयार की। सुश्री चिकनो से मुलाकात के अलावा, श्री मुर्मू ने स्पेन के राज्य प्रशासन के नियंत्रक जनरल (आईजीएई) पाब्लो अरेलानो पार्डो से भी मुलाकात की। आईजीएई, ... राज्य सार्वजनिक क्षेत्र की आंतरिक नियंत्रण एजेंसी के रूप में कार्य करते हुए, ... अर्थव्यवस्था, दक्षता ...

कैग कार्यालय में संविदा कर्मचारियों के लिए स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

स्वास्थ्य शिविर कार्यक्रम में भाग लेते हुए भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा अधिकारी वाइव्स एसोसिएशन के पदाधिकारी।

नई दिल्ली (वीअ)। भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा अधिकारी वाइव्स एसोसिएशन (आईएओडब्ल्यूए) ने वर्तमान में भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के कार्यालय में कार्यरत सैकड़ों संविदा कर्मचारियों के लिए स्वास्थ्य 2024 नामक तीन दिवसीय स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया।

27 से 29 अप्रैल के बीच आयोजित इस स्वास्थ्य पहल का आयोजन नई दिल्ली में सीएजी मुख्यालय में किया गया था, जहां चिकित्सा शिविर के पहले चरण के दौरान लगभग 475 अनुबंध कर्मचारियों ने स्वास्थ्य जांच की, दूसरे चरण के दौरान लगभग 800 श्रमिकों को कवर किया जाएगा।

यह दूसरी बार है कि आईएओडब्ल्यूए ने दीर्घकालिक स्वास्थ्य रखरखाव के लिए निवारक देखभाल और नियमित जांच के महत्व पर जोर देते हुए कार्यबल के लिए गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवाएं लाने के उद्देश्य से स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया है। आज समापन समारोह में श्रीमती सीएजी श्री गिरीश चंद्र मुर्मू की पत्नी और आईएओडब्ल्यूए की संरक्षक डॉ स्मिता मुर्मू ने डॉक्टरों से बातचीत की और सामाजिक कार्यों के प्रति उनके समर्पण की सराहना की। उन्होंने स्वास्थ्य लाभार्थियों से भी बातचीत की और उनके अनुभव सुने। डॉ मुर्मू ने कर्मचारियों के लिए स्वास्थ्य योजना तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हमारा मानना है कि समय पर जांच, उपचार और परामर्श के साथ, हमारे जैसे स्वास्थ्य शिविर हमारे बीच कमजोर लोगों के स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता को आगे बढ़ाने में मदद कर सकते हैं, आईएओडब्ल्यूए अध्यक्ष सुश्री सुमन विश्वनाथन ने कहा, जिन्होंने स्वास्थ्य शिविर का उद्घाटन किया। स्वास्थ्य देखभाल पहल नियमित स्वास्थ्य जांच, निगरानी और उपचार के महत्व के बारे में कर्मचारियों को संवेदनशील बनाने की दिशा में एक सकारात्मक कदम है। आईएओडब्ल्यूए की योजना इस तरह के और शिविर आयोजित करने और दृष्टि सुधार की आवश्यकता वाले लोगों को मुफ्त दवाएं और चश्मा प्रदान करने की है। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के मेडिसिन विभाग के प्रोफेसर डॉ संजीव सिन्हा ने तीन दिवसीय स्वास्थ्य शिविर के लिए ईएनटी, नेत्र विज्ञान, त्वचा विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्रों से 14 चिकित्सा विशेषज्ञों की एक टीम प्रदान की।

कैग कार्यालय में संविदा कर्मचारियों के लिए स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

स्वास्थ्य शिविर कार्यक्रम में भाग लेते हुए भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा अधिकारी वाइव्स एसोसिएशन के पदाधिकारी।

सीएजी - सुर्खियों में

भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक ने शिमला में चौडविक हाउस संग्रहालय का उद्घाटन किया

नई दिल्ली। भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक, श्री गिरीश चंद्र मुर्मु ने आज शिमला में 'चौडविक हाउस – नेविगेटिंग ऑडिट हेरिटेज' संग्रहालय का उद्घाटन किया, जो संस्था की समृद्ध विरासत और राष्ट्र के शासन में योग... संरक्षण और उत्सव ... का प... कार्य... सत... रा...

और व्यापक इतिहास समेटे हुए है। 1946 में कैबिनेट मिशन के लिए शिमला की अपनी यात्रा के दौरान महात्मा गांधी के प्रवास से इसका ऐतिहासिक महत्व और उजागर होता है। स्वतंत्रता के बाद, 1950 में, भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा सेवा के लिए एक प्रशिक्षण स्कूल यहां शुरू किया गया था। प्रशिक्षण ... स्थानांतरित होने ...

चौडविक हाउस को संग्रहालय के रूप में स्थापित करने की ... तिथीं और यादगार वस्तुएं, तथा फोटोग्राफिक प्रदर्शन शामिल ... की यात्रा का ... संग्रहालय में ...

लेखा परीक्षकों की भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा के स्रोत के रूप में संग्रहालय के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि लोकतंत्र के स्तंभों में से एक, ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करके सुशासन में योगदान देने वाली संस्था की यात्रा को संग्रहालय में बहुत प्रभावी ढंग से कैद किया गया है। उन्होंने कहा, चौडविक हाउस ने इतिहास बनते देखा है और इसलिए, इसे सार्वजनिक सेवा के प्रति हमारे अटूट समर्पण का प्रमाण बनना चाहिए। उद्घाटन के बाद, श्री मुर्मु ने ...

अवलोकन किया। इंटर... डिस्प्ले, डायोरमा, मल्टीमीडिया प्रस्तुतियाँ, हस्तियों और सं... उपलब्धियों का विशद ... प्रदान करती हैं। ... हाउस में संग्रहालय जनता के लिए खुल... संस्था की विर... निरंतर यात्रा के बारे और जानने के लिए के आगंतुकों का स्व... हैं। मुख्य ... संग्रहालय शिमला हाउस में स्थित है, भारत के भारतीय और लेखा सेवा के ...

शिमला में चैडविक हाउस संग्रहालय का सीएजी ने किया उद्घाटन

शिमला में चैडविक हाउस संग्रहालय का उद्घाटन करते भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक।

भास्कर न्यूज | शिमला

शिमला | भारत के नियंत्रक एवं ... संस्था के विकास, उपलब्धियों और श्रेष्ठता के मानक बिन्दुओं को दर्शाता है। चैडविक ... एक महत्वपूर्ण इमारत है और व्यापक इतिहास है। ... लिए शिमला की अपनी ... 6 में महात्मा गांधी के ... ऐतिहासिक महत्व जुड़ा ... 1950 में भारतीय ... सेवा के लिए यहां ... किया था। ऐतिहासिक ... साथ-साथ जीर्ण होती ... रखाव के अभाव में ... कगार पर थी। उस ... लेखापरीक्षा संस्थान ... के लिए आगे आया।

कैग मुर्मू ने शिमला में चैडविक हाउस संग्रहालय का किया उद्घाटन

एस पाण्डेय

शिमला। भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) गिरीश चंद्र मुर्मू ने सोमवार को यहां चैडविक हाउस नेविगेटिंग ऑडिट हेरिटेज संग्रहालय का उद्घाटन किया। यह संग्रहालय कैग के विकास और उपलब्धियों को दर्शाता है।

चैडविक हाउस शिमला की एक महत्वपूर्ण पहचान है और यह एक समृद्ध और व्यापक इतिहास समेटे है। इसका ऐतिहासिक महत्व है। 1946 में कैबिनेट मिशन के लिए शिमला की यात्रा के दौरान महात्मा गांधी यहीं ठहरे थे।

आजादी के बाद 1950 में, भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा सेवा के लिए यहां एक प्रशिक्षण स्कूल शुरू किया गया था। हालांकि, चैडविक हाउस धीरे-धीरे जर्जर हो गया। उचित देखभाल और रखरखाव के बिना यह 2018 में बंद होने के कगार पर था। मुर्मू ने कहा कि इसके बाद ...

शिमला में चैडविक हाउस नेविगेटिंग ऑडिट हेरिटेज संग्रहालय के उद्घाटन कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कैग गिरीश चंद्र मुर्मू।

... ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए, जिससे चैडविक हाउस को एक ... कहा, चैडविक हाउस सिर्फ एक इमारत ...

दिल्ली के 17 सौ स्कूलों के खाते तलब

हेमलता कौशिक

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट के आदेश पर नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) ने 1772 गैर सहायता प्राप्त निजी स्कूलों को ऑडिट नोटिस जारी किया है। स्कूलों से 14 दिन के भीतर पिछले पांच साल का हिसाब मांगा गया है।

कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनमोहन की पीठ ने इस मामले में पूर्व में दिल्ली सरकार द्वारा इन स्कूलों के ... की जांच न करने पर नाराजगी ... के निर्देश पर ... नोटिस जारी ... हाईकोर्ट के ... ए कहा गया ... का हिसाब

कैग ने सात तरह की जानकारी मांगी

1. आगामी वर्ष की प्राप्तियों और भुगतान का बजट अनुमान।
2. आय-व्यय का ब्योरा, पिछले वर्ष की बैलेंस शीट, आंतरिक लेखापरीक्षा रिपोर्ट
3. 30 अप्रैल 2023 तक छात्रों के नामांकन की रिपोर्ट
4. रियायतें/छात्रवृत्ति आदि का पैटर्न
5. स्कूल कर्मचारियों की तनख्वाह और अन्य खर्च का ब्योरा
6. फीस, जुर्माना, फंड की सूची
7. वेतन के संवितरण की तारीखों को दर्शाने वाला विवरण।

सरकार लाखों के पानी के बिल भिजवाकर खुद ही करती है माफ कराने का नाटक : बिधूड़ी

2016 के बाद से जल बोर्ड खातों का नहीं हुआ ऑडिट

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ी ने विधानसभा में आरोप लगाया कि केजरीवाल सरकार स्वयं ही दिल्ली की जनता को जल बोर्ड के अनाप-शनाप बिल भिजवाती है और फिर लाखों के इन बिलों को माफ कराने ... कर देती है। जब ... योजना पेश ... नहीं हो पाता ...

तो पेश कर दिया गया लेकिन चर्चा में विभाग की संबद्ध मंत्री और जल बोर्ड की अध्यक्ष आतिशी ही मौजूद नहीं हैं। उन्होंने कहा कि मीडिया से खबर मिलती है कि सीएजी ने दिल्ली जल बोर्ड के खातों की जांच करते हुए वर्ष 2017-18 की रिपोर्ट सरकार को दे दी है लेकिन विधानसभा सत्र चलते हुए भी अभी तक वह रिपोर्ट पटल पर क्यों नहीं रखी गई। सरकार ने 2016 के बाद से सीएजी ऑडिट क्यों नहीं कराया। उन्होंने कहा कि सरकार ...

आरोप लगाते हैं लेकिन सच्चाई यह है कि सरकार की ही नीयत बिलों को ठीक करने की नहीं है। आखिर लाखों रुपए के बिल कैसे भेज दिए गए। सरकार ने जून में भी ऐसी ही योजना की घोषणा की थी लेकिन उसे लागू करने की बजाय जनता को अनाप-शनाप बिल भेजे गए और अब कहा जा रहा है कि हम उन्हें कम कराना चाहते हैं।

बिधूड़ी ने दिल्ली की जनता को 24 घंटे पानी उपलब्ध कराने के सारे वादों को याद दिलाया जिनमें से एक भी पूरा नहीं किया गया। हिमाचल में किशाऊ और रेणुका बांध से अतिरिक्त पानी, मुरादनगर से 150 एमजीडी अतिरिक्त पानी, रैनीवैल से पानी की उपलब्धता बढ़ाने और यमुना के बाढ़ के पानी को एकत्र करने के लिए गड्ढे खोदने की योजना ... से घोषित की थीं लेकिन ... कोई काम नहीं हुआ।

सीएजी ने शुरू किया फाइलों को खंगालना

नोएडा (एसएनबी)। नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) ने प्राधिकरण से जुड़े कामकाज की एक बार फिर जांच शुरू कर दी है। इस बार जनवरी 2023 से जनवरी 2024 तक की फाइलों को खंगालना शुरू किया है। सीएजी टीम के आने से प्राधिकरण दफ्तर में एक बार फिर हलचल तेज हो गई है।

प्राधिकरण के अधिकारियों ने बताया कि जांच करने के लिए सीएजी की तीन सदस्यीय टीम आ गई है। इसके लिए प्राधिकरण में एक कमरा उनको अलॉट कर दिया गया है। इस जांच को कम्प्लॉयंस ऑडिट का नाम ... प्राधिकरण की ... किए गए ... बिंदुओं पर ... विभागों की ...

अधिकारियों ने अनुमान जताया कि एक साल के कामकाज की जांच करने में कम से कम तीन से चार महीने का समय लगेगा। इसके बाद वह आपत्तियों का ब्योरा तैयार कर प्राधिकरण अधिकारियों को सौंपेगी।

प्राधिकरण की ओर से आपत्तियों का ...

सीएजी टीम के आने से प्राधिकरण दफ्तर में फिर हलचल ...

आपत्तियों को लेकर सुनवाई चल रही है। वर्ष 2018 से 2021 तक के कामकाज की जांच सीएजी कर चुकी है। इन चार साल में प्राधिकरण को 53 काम में गड़बड़ी मिली थी। इस ... सबसे ज्यादा गड़बड़ी सिविल, भूलेख व नियोजन विभाग के काम में मिली थी। ... में से 3-4 आप... इन मामलों ... है। सीएजी ने ... में जांच के ... निर्देश पर ... वर्ष 2017 ... गई। ... था। ... नियम ...

कैग रिपोर्ट को लेकर ममता पर हमलावर हुई भाजपा

वीर अर्जुन संवाददाता

नई दिल्ली। भाजपा ने संसद में पेश किए गए कैग रिपोर्ट का हवाला देते हुए पश्चिम बंगाल की सरकार पर 2 लाख करोड़ रुपये के लगभग का घोटाला करने का आरोप लगाया है। भाजपा राष्ट्रीय प्रवक्ता गौरव भाटिया और पश्चिम बंगाल भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने पार्टी मुख्यालय में संयुक्त प्रेस कांफ्रेंस कर ममता सरकार पर जमकर हमला बोला।

भाजपा राष्ट्रीय प्रवक्ता गौरव भाटिया ने इसे विचारधारा की लड़ाई बताते हुए कहा कि एक तरफ ईमानदार और जनता के प्रति समर्पित केंद्र सरकार है, जिसका एक ही लक्ष्य है कि भारत ... और घटक दल भारत की जनता और भारत के मजबूत लोकतंत्र के खिलाफ काम कर रहा है।

उन्होंने कहा कि कैग की जो रिपोर्ट सामने आई है, उससे एक बार फिर यह स्पष्ट हो गया है। यह चिंताजनक बात है कि ममता बनर्जी जो 'मां-माटी-मानुष' की बात करती हैं, आज उन्हीं के प्रदेश से सबसे बड़ा भ्रष्टाचार का मामला सामने आ रहा है। भ्रष्टाचारी चाहे कांग्रेस या आरजेडी या जेएमएम का हो, सबको एक-एक रुपये का हिसाब देना होगा।

पश्चिम बंगाल भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने कैग रिपोर्ट का हवाला देते हुए टीएमसी सरकार पर 2 लाख करोड़ रुपये ... करने का आरोप लगाते हुए कहा कि कैग रिपोर्ट को ध्यान से देखने पर यह पता चलता है कि हर जगह पर पैसे लूटने की कोशिश ममता बनर्जी की सरकार द्वारा की गई और ये रिपोर्ट ममता सरकार के मुंह पर तमाचा है। मजूमदार ने कहा कि सरकार ने आकस्मिकता निधि से स्वीकृत 3,400 करोड़ रुपये का उपयोगिता प्रमाण पत्र नहीं दिया है। यह लोगों की मेहनत की कमाई है। उन्होंने ममता बनर्जी द्वारा वेतन के तौर पर एक भी पैसा नहीं लेने के दावे पर कटाक्ष करते हुए कहा कि सीएजी की रिपोर्ट में कहा गया है कि इस पैसे का एक तिहाई हिस्सा राज्य के गृह मंत्रालय इस्तेमाल किया है। विडम्बना है कि राज्य की गृह मंत्री ममता बनर्जी हैं।

निगम में करोड़ों के घोटाले में सरकार का जवाब

सीएजी की रिपोर्ट में निगम को 23.80 करोड़ रु. का नुकसान

बिना जांच के किसी अधिकारी को क्लीनचिट कैसे दी जा सकती: कांग्रेस विधायक

भास्कर न्यूज | फरीदाबाद

कैग-आईसीएआई की साझेदारी से तैयार होगा प्रमाणित अकाउंटेंट का समूह : जीसी मुर्मू

नई दिल्ली, (भाषा)। नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) गिरीश चंद्र मुर्मू ने बुधवार को कहा कि आईसीएआई के सहयोग चलाई जा रही कौशल विकास पहल से ग्रामीण इलाकों में प्रमाणित अकाउंटेंट का एक समूह तैयार करने में मदद मिलेगी। ग्रामीण क्षेत्रों के स्थानीय निकाय और छोटे व्यवसाय जीएसटी रिटर्न दाखिल करने के लिए प्रमाणित अकाउंटेंट की सेवाओं का लाभ ले सकते हैं। देश की अग्रणी लेखा-परीक्षण संस्था कैग ने विभिन्न तरह के स्थानीय निकायों के खातों के संचालन के लिए जरूरी स्तर के ज्ञान और कौशल पर आधारित ऑनलाइन पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान (आईसीएआई) के साथ साझेदारी की है। इस साझेदारी से प्रमाणित अकाउंटेंट का एक समूह तैयार करने में मदद मिलेगी जिनकी सेवाओं का उपयोग स्थानीय सरकारें पूर्ण और मानकीकृत खातों के संचालन में कर सकती है।

कैग ने पुलों के निर्माण में प्रदेश भर में बड़े पैमाने पर गड़बड़ी पकड़ी

कहीं रायल्टी की चोरी तो कहीं लागत बढ़ने से सरकार को हुई क्षति

रीवा संभाग में जो पुल 2018 में पूरा होना था, वह अब तक पूरा तक नहीं हुआ, इससे करोड़ों का नुकसान हुआ

2018 में पूर्ण होने वाले कार्य आज तक पूर्ण नहीं हुए

पहुंच मार्ग की चौड़ाई में असमानता

63 पुलों के कार्यों में 1 माह से 68 माह तक विलंब

Chadwick House
Restoring Our Legacy

ICAL
International Conference on
"Strengthening of Grass Roots Democracy and Accountability"
28th February 2024 - 1st March 2024

पंजीकरण सं.–2 एल (9)/8747177/87(90)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110124